HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI NO. HPHIN/2001/04280

विशेषांक

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.prg

मातृवन्दना

चैत्र-वैसाख कलियुगाब्द 5122, मार्च-अप्रैल 2020

देव संस्कृति में समरसता का प्रवाह

मूल्य 20/- प्रति

कोरोना वायरस से न घबराएं

10 फरवरी 2020 के बाद **चीन, जापान, हाँगकाँग, सिंगापुर, थाईलैंड, साउथ कोरिया,मलेशिया, वियतनाम, इंडोनेशिया, इटली, ईरान, नेपाल** से आने वाले यात्रियों एवं उनके संपर्क में आने वालों को इस रोग की सम्भावना हो सकती है

"कोरोना वायरस" के लक्षण

खांसी **बुखार**

साँस लेने में तकलीफ

कोरोनावायरस संक्रमण के अपने जोखिम को कम करें

यदि आपने, आपके परिवार में, या पड़ोस में किसी व्यक्ति ने उपरोक्त देशों की यात्रा की हो, तो तुरंत 104 पर सूचित करें

ऐसे यात्री कम से कम 14 दिनों तक घर से बाहर भ्रमण न करें और बचाव हेतु अन्य लोगों से दूरी बनायें रखें

यदि ऐसे किसी यात्री में उपरोक्त लक्षण पाए जाएँ, तो तुरंत 104 पर कॉल करें एवं मास्क का उपयोग करें |

लक्षण पाए जाने पर लापरवाही न बरतें

तत्काल

104 टोल फ्री न. पर कॉल करें

नेशनल कॉल सेंटर न.
+91-11-23978046

टोल फ्री हेल्पलाइन न.
104

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, हिमाचल प्रदेश

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हि. प्र. सरकार

मातृवन्दना संस्थान का प्रकाशन

मातृवन्दना

वर्ष: 20 अंक : 03-04 | चैत्र-वैसाख कलियुगाब्द 5122, मार्च-अप्रैल 2020

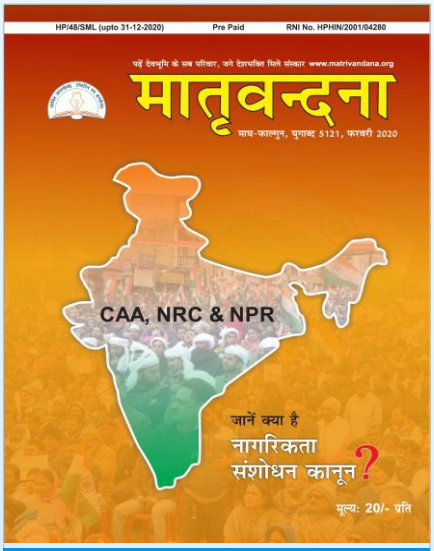

सम्पादक

डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक

वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल

मीनाक्षी सूद
डॉ. अर्चना गुलेरिया
डॉ. उमेश मौदगिल
डॉ. जय कर्ण

पत्रिका प्रमुख

शांति स्वरुप

वितरण प्रमुख

जय सिंह ठाकुर

कार्यालय:

मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस,
शिमला-4, दूरभाष: 0177-2836990

E-mail: matrivandanashimla@gmail.com
Web.: www.matrivandana.org

प्रकाशक एवं मुद्रक : कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेज-9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित। **संपादक : डॉ. दयानंद शर्मा**

मासिक शुल्क	₹20
वार्षिक शुल्क	₹100
आजीवन शुल्क	₹1000

वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरुरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

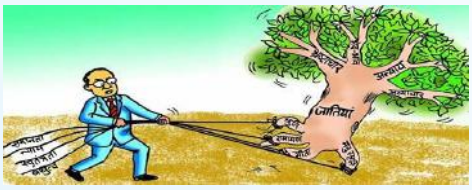

संपादकीय	डॉ. दयानंद शर्मा	4
नववर्ष प्रतिपदा महापर्व	चेतराम गर्ग	5
बंग्लुरू में कार्यकारी मंडल	--------	6
देवभूमि हिमाचल के रोम-रोम में देवी देवता	सुरेन्द्र कुमार	8
समरस समाज समय की आवश्यकता	डॉ. एनआर गोपाल	9
शिक्षित व संपन्न समाज में समरसता	डॉ. पूजा अवस्थी	10
समता प्राप्त विषमता रहित बन्धु	डॉ. चमनलाल बंगा	12
शिवमूर्तियों के अपमान से लोक आस्था...	----------	13
सहिष्णुता समाज का सबसे बड़ा गुण	हितेन्द्र शर्मा	14
गांव से खत्म हुई छुआ-छूत	हरिराम धीमान	16
सांप्रदायिक सद्भाव को तोड़ती वामपंथी...	राकेश सेन	17
सामाजिक समरसता के विरूद्ध देश में...	नीतू वर्मा	19
भारतीय संस्कृति में समरसता	डॉ. प्रियंका वैद्य	20
अस्पृश्यता समाज का बदलता दृष्टिकोण	राजेश वर्मा	22
धर्म के साए से निकलती संकीर्ण मानसिकता	डॉ. शशि पूनम	24
समता मूलक प्राचीन भारतीय चिन्तन	डॉ. अर्चना गुलेरिया	25
हेला या बुआरा प्रथा	रवीन्द्र रणदेव	26
अधिकार और कर्त्तव्य	केवल सिंह भारती	28
एक राष्ट्र एक संस्कृति एक रक्त एक समाज	प्रदीप कुमार	29
सामाजिक समरसता राष्ट्र की प्रगति	वरूण कुमार	30
लोक मान्यताओं और परंपराओं को सहेजना	डॉ. संदीप शर्मा	32
मिट रही है जातिगत अस्पृश्यता	दलेल सिंह ठाकुर	34
सामाजिक समरसता दीनदयाल उपाध्याय	प्रो. प्रदीप कुमार वैद	36
शैक्षिक उन्नयन से बदलती मानसिकता	अंकुर कौंडल	38
कोरोना आयो रे !	.....	39
होली पर पत्रकार परिवार मिलन...	विश्व संवाद केंद्र	42
आस्था की प्रतीक जनश्रुतियां	राजेश शर्मा	43
जातिवाद एक भयानक रोग	कविता कुमारी	45
डिह्बकेश्वर महादेव मंदिर परिसर	चेतन कौशल	46
कोरोना वायरस बनाम 'ला इलाहा इल्लल्लाह'	राकेश खण्डाला	47
सामाजिक समरसता और राजनीतिक	डॉ. उमेश कुमार	49
लिंगवाद विरोध का प्रतीक अंतरराष्ट्रीय...	अमित डोगरा	52
भारत के आर्थिक व सामाजिक विकास	राजेश कपिल	54

समरसता के निर्माण में देव संस्कृति हो सहायक

लोक संस्कृति समाज की जीवन रेखा है। सम्बद्ध समाज को सरस, सहिष्णु और समरस बनाने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। हिमाचल की लोक-संस्कृति स्वयं में विशिष्टता लिए हुए है जिसमें भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति का प्राव प्रत्यक्ष रूपेण दृष्टिगत होता है। विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ एवं भारत के मूल सनातन धर्म के आधार ग्रन्थ वेदों में ऋषियों द्वारा पृथिवी तथा उस पर विद्यमान पर्वत शिखरों, नदियों, वृक्षों एवं अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा, इन्द्र, वरूण, मरूत, वायु आदि में देवत्व स्थापित कर उनका ऋचाओं वैदिक मन्त्रों द्वारा गुणगान किया गया है। हिमालय तो स्वयं देवत्व को प्राप्त है। उसके आंचल में स्थित हिमाचल देवभूमि कहलाती है। इसकी उंची चोटियों पर कैलाश पर्वत के समान शिव का वास है। वर्तमान में भी हिमाचलवासी इन ऊंचे पर्वत शिखरों एवं उस पर अधिष्ठित पाषाण-शिलाओं की शिवलिंग के रूप में पूजा करते हैं। विशालकाय वृक्षों में काली का आह्वान का पताका एवं भोग चढ़ा कर उनकी पूजा का विधान है। यहां की पवित्र एवं निर्मल जल वाली नदियों को देवी स्वरूप मानकर विशेष पर्व एवं त्यौहारों में उनमें स्नान कर यहां के निवासी स्वयं को धन्य एवं पुण्यभागी मानते हैं। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उपर्युक्त धार्मिक एवं पुण्य स्थलों पर हर जाति एवं हर वर्ग के लोग शामिल होते हैं साथ ही सभी लोग मिलकर धार्मिक त्यौहारों को मनाते हैं।

हिमाचल के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वतंत्रता से पूर्व छोटी-बड़ी रियासतों एवं ठकुराइयों के राजा एवं राणा इन्हीं स्थानीय देवताओं के माध्यम से धर्म की दुहाई देकर अधीनस्थ प्रजा पर शासन करते थे। प्रारम्भ में धर्म एवं देवता के प्रति सच्ची आस्था रखने वाली प्रजा सत्य एवं ईमानदारी से अपने कर्तव्य का निर्वहन करती थी और राजा भी उसी प्रकार अपना राजधर्म निभाते थे। राजाओं द्वारा देवता के मन्दिरों के प्रबन्ध एवं संचालन के लिए प्रबन्ध समिति का गठन किया जाता था, जिनमें उनके चहेतों तथा प्रभावशाली लोगों को ही चुना जाता था। राजा के अधिकांश निर्णय देव-न्याय से ही सम्पन्न किए जाते थे। निर्दोष-लाचार एवं व असहायों पर देवता का दोष आरोपित कर उन्हें दण्डित किया जाने लगा। प्रबन्धक-समिति के लोगों की इच्छानुरूप गूर दिवा की वाणी निसृत्त होने लगी। बलि-प्रथा का प्रचलन बढ़ने लगा। निर्बल वर्ग के प्रति अस्पृश्यता की भावना बलवती हुई। वह वर्ग जो देवता के प्रति किये जाने वाले हर कृत्य जैसे पूजा-विधान, पर्व एवं त्यौहारों में मुख्य सेवक और सहयोगी बना रहता है और अपने देवता के प्रति सच्ची निष्ठा रखता है, उसे मन्दिर में जाने के लिए प्रतिबन्धित किया जाने लगा। इससे बड़ी विडम्बना क्या हो सकती है कि यह निकृष्ट कार्य उन देवताओं के नाम पर किया जाता है जो प्राणी मात्र के रक्षक और दयालु हैं। विगत दशक तक कुछ ऐसी ही स्थिति प्राय: हिमाचल के अधिकांश ग्रामीण क्षेत्र के देव-समाज में बनी हुई थी, लेकिन वर्तमान में इसमें पर्याप्त परिवर्तन दिखाई देता है। इन कुप्रवृत्तियों को यदि समाप्त किया जाए, तो देव व्यवस्था और देव वाणी आज भी प्रासंगिक है। देववाणी द्वारा समाज के सामूहिक कार्य में सर्वप्रथम यहा कहा जाता है कि क्या पूरा समाज एक बोल अथवा एकमत में है। समाज में ऐक्य भाव और एक विचार की स्थापना में गुर अथवा दिवा द्वारा उच्चारित वाणी का योगदान आज भी महत्वपूर्ण है। सम्बद्ध समाज के महत्वपूर्ण निर्णय आज भी देववाणी से लिए जाते हैं। अधिकांश क्षेत्रों में देव-निर्णय से ही बलि प्रथा बन्द हुई है और भी कई पुरानी रूढ़ियों व परम्पराओं को तोड़ा गया है।

वर्तमान में शिक्षा के अन्यान्य उन्नत उपक्रमों के फलस्वरूप समाज में परिवर्तन नजर आने लगा है। अधिकांश देवताओं के मन्दिरों में बलि-प्रथा प्राय: समाप्त हो चुकी है जिसमें सरकार और उच्च न्यायालय का भी सहयोग प्राप्त हुआ है। कुछ अन्य रूढ़ी-परम्पराओं में भी बदलाव आया है। शिक्षा का लाभ यह हुआ है कि लोगों में सजगता बढ़ रही है तथा रूढ़ी-परम्पराओं एवं मान्यताओं के प्रति अंध विश्वास घटता जा रहा है। संकीर्ण सोच को तिलांज्जलि देकर युवा-वर्ग वैश्विक सोच रखते हुए आगे बढ़ रहा है। निर्बल और असहाय वर्ग भी शिक्षित हो अपने अधिकारों के प्रति सजग हो चुका है। आज हिमाचल की विख्यात एवं दिव्य शक्ति पीठों में तथा अन्य प्रसिद्ध एवं दर्शनीय देवी-देवताओं के अधिकांश मन्दिरों में सभी जाति-धर्म के लोग दर्शनार्थ एवं अपनी मन्नत पूर्ण करने के लिए प्रवेश कर सकते हैं। यदि हम सच में मानव हैं, तो हमारी एक ही जाति है, वह है मानव जाति जो विशुद्ध एवं पवित्र है। हमारी संस्कृति वसुधा को कुटुम्ब मानने वाली है और सबके सुख और कल्याण की कामना करने वाली है। हिमाचल वासियों का स्वभाव इसी संस्कृति के अनुरूप है। अतएव हम सम्पूर्ण भारत-वर्ष के लिए प्रेरणा के स्रोत बनकर अस्पृश्यता जैसी कुरीतियों काष्ठामन कर एक समरस समाज का निर्माण करने में सहायक बनें। ◆◆◆

नव वर्ष प्रतिपदा महापर्व

– चेतराम गर्ग

नव आनंद संवत्सर कलियुगाब्द 512, विक्रमी संवत् 2077 तथा शक संवत् 1943 मंगलमय हो। प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नव संवत्सर प्रारम्भ होता है। चैत्र शुक्ल की प्रथम तिथि होने के कारण इसे प्रतिपदा कहा गया है। महापर्व कहलाने के अनेक कारण हैं जैसे–मानव सृष्टि की उत्पत्ति, काल विज्ञान का ज्ञान, ज्योतिष और खगोलीय ज्ञान के आधार पर, शक्ति साधना संकल्प, नवरात्रों का शुभारम्भ, बहुरंगी सौन्दर्यमयी प्रकृति का आह्लाद, शौर्य–वीरता की गाथाओं का नवसंवत्सरों के साथ जुड़ना आदि महत्त्वपूर्ण हैं। ये कारण भारतीय संस्कृति तथा जीवन दर्शन को विविधता में एकता रूपी धागे में मनके जैसे चमकने लगते हैं। सृष्टि कैसे उत्पन्न हुई यह एक यक्ष प्रश्न है? भारत की ऋषि चेतना इस का प्रथम ज्ञानदाता है जिसने अपने ज्योतिष और खगोलीय ग्रह गति के आधार पर प्रकृति और जीव उत्पत्ति के रहस्यों को खोलने में अप्रतिम योगदान दिया है। करोड़ों, अरबों वर्षों पीछे जाने का रहस्य काल विज्ञान के आधार पर ब्रह्माण्डीय ग्रहों की चाल और युति के आधार पर निर्धारित किया गया है। इसलिए उन्होंने उद्घोषणा की कि सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आरम्भ की। बह्मपुराण इसका उल्लेख इस प्रकार करता है –

चैत्र मसि जगद ब्रह्मा ससर्जप्रथमे·हिन्।
शुक्ल पक्षे समग्रं तदा सूर्योदये सति॥

अर्थात् बह्मा ने चैत्र मास में शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय काल में सृष्टि की रचना की। इसलिए इसे सृष्टि संवत् कहा गया है।क्या विद्वानों, समाजशास्त्रियों धर्म–सम्प्रदाय वेत्ताओं और वैज्ञानिकों के मध्य सृष्टि सम्बन्धी प्रश्न यहीं पर समाप्त हो जाते हैं? नहीं। यह विषय सब की ज्ञान पिपासा को बढ़ाने वाला है तभी तो वैज्ञानिक वर्ग भारतीय वाक्मय को अपने समक्ष रखकर नए–नए तथ्य को सामने लाकर उस भारतीय ऋषि दर्शन, चिन्तन और तत्व के सन्निकट आकर ठण्डी सांस लेता है। भारतीय ज्ञान सर्वसाधारण की पकड़ का हिस्सा उसकी समयानुकूल परम्परा और पद्धतियों के आलोक में पुष्पित–पल्लवित होता है। इसलिए हिन्दू समाज सैकड़ों वर्षों की दासता काटने के बाद भी अपनी ज्ञान शक्ति को अक्षुण्ण रख पाया। यह इसकी आन्तरिक शक्ति है जिसकी वह पूजा करता है। हम इस वर्ष पर जब दृष्टि डालते हैं तो कलियुगाब्द 5122, विक्रमी संवत् 2077, शक संवत् 1943 के राजा बुद्ध तथा मन्त्री चन्द्रमा है। बुद्ध राज्यत्व में धन–धान्य में प्रचुरता देने वाला है। वर्षा देने में सहायक है, इसलिए धार्मिक क्रिया–कलापों में वृद्धि होगी। व्यापारी, शिल्पी, लेखक तथा वैद्यकीय कार्य में प्रगति होगी। चन्द्रमा शीलता प्रदान करने वाला ग्रह है। इसलिए वेद द्वारा निर्धारित धार्मिक कार्य बढ़ेंगे। खेती, कृषि, गोधन, दुग्ध तथा फलों का उत्पादन बढ़ेगा। इससे विपरीत राजनीतिक उठा–पटक तथा महामारी का प्रकोप दिखाई देगा।

सामाजिक पक्ष : मानव सदैव ही आनन्द और उत्सव की ओर प्रवृत्त हुआ है। हिन्दू समाज में त्याग और तप को महत्त्व दिया गया है। शक्ति संचय और संकल्प आदि शक्ति के वरदान हैं। वर्ष में महत्त्पूर्ण नवरात्रों का प्रकट रूप चैत्र और शारदीय नवरात्र हैं। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक सम्पूर्ण हिन्दू समाज शक्ति के नौ रूपों की पूजा अर्चना द्वारा अपने को शक्ति सम्पन्न बनाने का प्रयास करता है। यही नहीं भारतीय समाज व्रत और दान भी करता है तथा मन्दिरों, मठों, सामूहिक आयोजनों द्वारा सामाजिक एकता और सौहार्द के लिए संकल्पित होता है। नया खून, नई सोच, नया कार्य करने के लिए दैवी शक्ति को उपकारी माना जाता है। शुभ काम करना जिससे वर्ष भर उत्साह और विश्वास बना रहे।

हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिला में मान्यता है कि नया संवत् प्रारम्भ होने पर सबसे पहले मुंह मीठा करना है। इसलिए रात को ही अपने तकिए के पास गुड़ रखने की परम्परा अभी तक चल रही है। मीठा पकवान बनना अनिवार्य माना गया है। घर–घर जाकर नव संवत् सुनाने की परम्परा आज भी विद्यमान है। एक विशेष वर्ग के परिवार के लोग नारायण की सृष्टि, शिव की सृष्टि को घर–घर जाकर सुनाते हैं। देश के अन्य प्रान्तों में भी इस प्रकार की परम्परा है जैसे उत्तराखण्ड में पुष्प तोड़कर बालिकाएं घरों में पुष्प देती हैं। गुजरात, महाराष्ट्र तथा गोवा में गुड़ी–पड़वा के रूप में आनन्दोत्सव मनाया जाता है।

ऐतिहासिक पक्ष : इतिहास मानवीय टकराव तथा सह अस्तित्व का दर्पण है। श्री राम हिन्दू समाज के मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। लाखों वर्षों की अमिट छाप हिन्दू समाज के जन–जन में व्यापत है। राम का राज्याभिषेक चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन हुआ माना जाता है। राम की प्रामाणिकता स्वयं सिद्ध है। उज्जयनी राजा विक्रमादित्य प्रजा का पूर्ण कर्ज माफ करने वाले, दुष्ट आततायियों का समूल नाश करने वाले राजा ने विक्रमी संवत् चैत्र शुक्ल से प्रतिपदा से ही प्रारम्भ किया था। विदेशी दासता से मुक्ति के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्य समाज की स्थापना वर्ष प्रतिपदा के दिन 1875 ई. में की गई। उन्होंने वेदों की वैज्ञानिकता और वैदिक दर्शन से विदेशी चिन्तन को समूल नष्ट करने के लिए इसे कारगर हथियार बनाया। सिंध में भगवान झूलेलाल की जयंती भी इसी दिन मनाई जाती है उसी दिन चेटी चण्ड का उत्सव मनाया जाता है। संगठन सूत्र के शिल्पी डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जिनका जन्म सन् 1889 को वर्ष प्रतिपदा के दिन हुआ था, उन्होंने सन् 1925 में विजयदशमी के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। वे 20वीं शताब्दी में हिन्दू शक्ति पुंज के प्रणेता थे। आज सांस्कृतिक और सामाजिक डोर को मजबूत करने का ताना–बाना उन्हीं की ऊर्जस्वी शक्ति का परिणाम है।

नववर्ष पर हम संकल्प करें कि भारत विश्व गुरु बनेगा तो मेरा भी उसमें योगदान है। मैं भी भारतीय दर्शन तथा चिन्तन को जीवन में उतारने का संकल्प करता हूं। सम्पूर्ण मानव जगत् को नववर्ष मंगलमय हो।

◆◆◆ लेखक शोध संस्थान नेरी हमीरपुर में निदेशक हैं।

बंगलुरू में अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल में पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव - 1 भारतीय संविधान को जम्मू कश्मीर राज्य में पूर्ण रूप से लागू करने एवं राज्य के पुनर्गठन का निर्णय - एक स्वागत योग्य कदम

संघ का अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल, सम्मानीय राष्ट्रपति के संवैधानिक आदेशों के द्वारा भारतीय संविधान को जम्मू कश्मीर राज्य में पूर्ण रूप से लागू करने तथा तदुपरांत संसद के दोनों सदनों के अनुमोदन के पश्चात् अनुच्छेद 370 को निष्प्रभावी करने के निर्णय का हृदय से स्वागत करता है। राज्य का जम्मू-कश्मीर तथा लद्दाख ऐसे दो केंद्र शासित प्रदेशों में पुनर्गठन का निर्णय भी एक सराहनीय कदम है। अ.भा.का.मं. इस साहसिक एवं ऐतिहासिक निर्णय के लिए केंद्र सरकार एवं राष्ट्रहित में समर्थन देकर अपनी परिपक्वता का परिचय देनेवाले सभी राजनैतिक दलों का अभिनन्दन करता है।

यद्यपि भारतीय संविधान के समस्त प्रावधान देश के सभी क्षेत्रों में समान रूप से लागू होने अपेक्षित थे, परन्तु विभाजन के तुरंत पश्चात् पाकिस्तानी आक्रमण की तात्कालिक एवं असाधारण परिस्थिति में अनुच्छेद-370 को एक अस्थायी प्रावधान के रूप में संविधान में जोड़ा गया। कालान्तर में अनुच्छेद-370 की आड़ में बड़ी संख्या में संविधान के अनुच्छेदों को जम्मू-कश्मीर राज्य में या तो लागू ही नहीं किया गया अथवा संशोधित रूप में लागू किया गया। राष्ट्रपति के आदेशों द्वारा अनुच्छेद-35A जैसे प्रावधानों को मनमाने रूप से संविधान में जोड़ने जैसे कदमों के कारण अलगाववाद के बीज बोए गए। इन संवैधानिक विसंगतियों के कारण अनुसूचित जाति, जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, गोरखा, महिला, सफाई कर्मचारी तथा पश्चिमी पाकिस्तान से आए शरणार्थी आदि घोर भेद-भाव का सामना कर रहे थे। जम्मू एवं लद्दाख क्षेत्र को राज्य विधानसभा में आनुपातिक प्रतिनिधित्व तथा संसाधनों के आवंटन और निर्णय प्रक्रिया में समुचित सहभागिता से वंचित कर दिया गया था। इन सभी गलत नीतियों के कारण हमने देखा कि राज्य में सर्वत्र कट्टरवाद व आतंकवाद की व्याप्ति तथा राष्ट्रीय शक्तियों की पूर्ण उपेक्षा दिखाई देने लगी।

अ.भा.कार्यकारी मंडल का सुनिश्चित मत है कि हाल ही में लिये गए निर्णय एवं उनके क्रियान्वयन से ऊपर उल्लेखित संवैधानिक तथा राजनैतिक विसंगतियाँ समाप्त हो जाएंगी। कार्यकारी मंडल का यह भी विश्वास है कि उपरोक्त निर्णय भारत की अवधारणा 'एक राष्ट्र-एक जन' के अनुरूप है और संविधान निर्माताओं द्वारा प्रस्तावना में वर्णित आकांक्षा 'हम भारत के लोग .....' को पूर्ण करने वाला है।

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि महाराजा हरिसिंह ने 'अधिमिलन पत्र' पर हस्ताक्षर कर भारत में राज्य के विलय की प्रक्रिया को पूर्ण कर दिया था। अनुच्छेद-370 के दुरुपयोग से उत्पन्न समस्याओं को दूर करने राष्ट्रीय एकात्मता, संविधान तथा राष्ट्रध्वज के सम्मान की रक्षा हेतु डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं पंडित प्रेमनाथ डोगरा के नेतृत्व में प्रजा परिषद् आंदोलन के सत्याग्रहियों और शेष भारत के राष्ट्रभक्त समाज ने संघर्ष किया। विगत सत्तर वर्षों में राज्य की राष्ट्रीय शक्तियों ने शेष भारत के साथ मिलकर अलगाववाद एवं आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष को जारी रखा और उनमें से अनेकों ने अपने प्राण भी न्यौछावर किये। सेना तथा सुरक्षा बलों के हजारों जवानों ने देश की एकता एवं संप्रभुता की रक्षा के लिए शौर्य एवं प्रतिबद्धता का परिचय दिया और सर्वोच्च बलिदान भी दिए।

अ.भा.कार्यकारी मंडल देशवासियों का आह्वान करता है कि संविधान की सर्वोच्चता एवं मूल भावना को स्थापित करने के लिए वे राजनैतिक मत-भिन्नताओं से ऊपर उठें और जम्मू-कश्मीर तथा लद्दाख की विकास यात्रा में बढ़-चढ़कर योगदान करते हुए राष्ट्र की एकता एवं अखंडता को पुष्ट करें।

प्रस्ताव क्र. 2 - श्रीराम जन्मस्थान पर मंदिर निर्माण - राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक

संघ के अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल का मानना है कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय के सर्वसम्मत निर्णय से सम्पूर्ण राष्ट्र की आकांक्षाओं के अनुरूप श्रीराम जन्मस्थान अयोध्या पर भव्य मंदिर के निर्माण की सब बाधाएँ दूर हो गई हैं। राम जन्मस्थान के संबंध में 9 नवंबर 2019 को माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने जो निर्णय दिया है, वह न्यायिक इतिहास के महानतम निर्णयों में से एक है। माननीय न्यायाधीशों ने सुनवाई के दौरान उत्पन्न की गई अनेक प्रकार की बाधाओं के बावजूद अतुलनीय धैर्य एवं सूझ-बूझ का परिचय देते हुए एक अत्यंत संतुलित निर्णय दिया है। अ.भा.का.मं. इस ऐतिहासिक निर्णय के लिए मा. सर्वोच्च न्यायालय का हार्दिक अभिनंदन करता है।

न्यायालय का निर्णय आने के उपरांत सभी वर्गों का विश्वास प्राप्त कर सद्भावपूर्ण ढंग से उसे स्वीकार करा लेना किसी भी सरकार के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। जिस धैर्य और साहस के साथ सरकार ने सबका विश्वास प्राप्त किया, उसके लिए कार्यकारी मंडल केंद्र सरकार एवं वर्तमान राजनैतिक नेतृत्व का हार्दिक अभिनंदन करता है। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय तथा रामभक्तों की भावनाओं के अनुरूप 'श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र' नामक एक नए न्यास का गठन, शासन-नियंत्रित न्यास के रूप में न करके इसे समाज द्वारा संचालित बनाना व प्रशासन को सहयोगी की भूमिका में लाना सरकार की दूरदर्शिता का परिचायक है। जिन पूज्य संतों के मार्गदर्शन में यह आन्दोलन चला, उन्हीं के नेतृत्व में ही मंदिर निर्माण के कार्य को आगे बढ़ाने का निर्णय लेना भी प्रशंसनीय है। अ.भा.का.मं. का यह भी विश्वास है कि यह न्यास श्रीराम जन्मस्थान पर भव्य मंदिर और परिसर क्षेत्र के निर्माण-कार्य को शीघ्रातिशीघ्र संपन्न करेगा। कार्यकारी मंडल का यह भी विश्वास है कि इस पुनीत कार्य में सभी भारतीय एवं सम्पूर्ण विश्व के रामभक्त सहभागी होंगे।

प्रस्ताव - 3 नागरिकता संशोधन अधिनियम 2019 - भारत का नैतिक व संवैधनिक दायित्व

संघ का अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल, पड़ोसी इस्लामिक देशों पाकिस्तान, बाँग्लादेश एवं अफगानिस्तान में पांथिक आधार पर उत्पीड़ित होकर भारत आए हिन्दू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी व ईसाइयों को भारत की नागरिकता देने की प्रक्रिया की जटिलताओं को समाप्त कर सरल बनाने हेतु, नागरिकता संशोधन अधिनियम -2019 पारित करने पर भारतीय संसद तथा केंद्र सरकार का हार्दिक अभिनंदन करता है। 1947 में भारत का विभाजन पांथिक आधार पर हुआ था। दोनों देशों ने अपने यहाँ पर रह रहे अल्पसंख्यकों को सुरक्षा, पूर्ण सम्मान तथा समान अवसर का आश्वासन दिया था। भारत की सरकार एवं समाज दोनों ने अल्पसंख्यकों के हितों की पूर्ण रक्षा की तथा सरकार ने उसके भौगोलिक क्षेत्र में रह रहे अल्पसंख्यकों की सुरक्षा एवं विकास के लिए संवैधानिक प्रतिबद्धता सहित विशिष्ट नीतियाँ भी बनाईं। दूसरी ओर, भारत से अलग होकर निर्मित हुए देश नेहरु-लियाकत समझौते और समय-समय पर नेताओं के आश्वासनों के बावजूद ऐसा वातावरण नहीं दे सके। इन देशों में रह रहे अल्पसंख्यकों का पांथिक उत्पीड़न, उनकी संपत्तियों पर बलपूर्वक कब्जा तथा महिलाओं पर अत्याचार की निरंतर घटनाओं ने उन्हें नए प्रकार की गुलामी की ओर धकेल दिया। वहाँ की सरकारों ने भी अन्यायपूर्ण कानून एवं भेदभावपूर्ण नीतियाँ बनाकर इन अल्पसंख्यकों के उत्पीड़न को बढ़ावा ही दिया। परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में इन देशों के अल्पसंख्यक भारत में पलायन को बाध्य हुए। इन देशों में विभाजन के बाद अल्पसंख्यकों के जनसंख्या प्रतिशत में तीव्र गिरावट का तथ्य उसका स्वयंसिद्ध प्रमाण है। यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि भारत की संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन तथा स्वाधीनता के संघर्ष में इन क्षेत्रों में रहने वाले परंपरागत भारतीय समाज का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस कारण भारतीय समाज एवं भारत सरकार का यह नैतिक तथा संवैधानिक दायित्व बनता है कि वे इन प्रताड़ित अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा करें। सरकार द्वारा संसद में चर्चा के दौरान तथा बाद में समय-समय पर यह स्पष्ट किया गया है कि इस कानून द्वारा भारत का कोई भी नागरिक प्रभावित नहीं होगा। कार्यकारी मंडल सन्तोष व्यक्त करता है कि इस अधिनियम को पारित करते समय उत्तर-पूर्व क्षेत्र के निवासियों की आशंकाओं को दूर करने के लिए आवश्यक प्रावधान भी किये गए हैं।

यह संशोधन इन तीन देशों में पांथिक आधार पर उत्पीड़ित होकर भारत आए इन दुर्भाग्यपूर्ण लोगों को नागरिकता देने के लिए है तथा किसी भी भारतीय नागरिक की नागरिकता वापस लेने के लिए नहीं है। परंतु, जिहादी-वामपंथी गठजोड़, कुछ विदेशी शक्तियों तथा सांप्रदायिक राजनीति करनेवाले स्वार्थी राजनैतिक दलों के समर्थन से, समाज के एक वर्ग में काल्पनिक भय एवं भ्रम का वातावरण उत्पन्न करके देश में हिंसा तथा अराजकता फैलाने का कुत्सित प्रयास कर रहा है। अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल इन कृत्यों की कठोर शब्दों में निंदा करता है तथा संबंधित सरकारों से यह माँग करता है कि देश के सामाजिक सौहार्द एवं राष्ट्रीय एकात्मता को खंडित करने वाले तत्वों की समुचित जाँच कराकर उपयुक्त कार्रवाई करें।

अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल समाज के सभी वर्गों, विशेषकर जागरूक एवं जिम्मेदार नेतृत्व का आह्वान करता है कि इस विषय को तथ्यों के प्रकाश में समझें एवं समाज में सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए रखने और राष्ट्र विरोधी षडयंत्रों को विफल करने में सक्रिय भूमिका निभाएँ। ◆◆◆

देवभूमि हिमाचल के रोम-रोम में देवी-देवता बसते हैं

... सुरेन्द्र कुमार

राज्य का शायद ही कोई गांव हो जहां किसी देवी-देवता का मंदिर नहीं हो। यहां का शायद ही कोई उत्सव हो जहां देवी-देवता शिरकत नहीं करते हों। यहां जीवन बसर करने वाले लोगों के दिन का आगाज देव स्तुति से होता है जबकि दिवस का अंत लोग अपने ईष्ट की आरती उतार कर करते हैं। देव स्तुति राज्य के लोगों की दिनचर्या का एक अभिन्न अंग रहा है। यहां आयोजित होने वाले प्रत्येक कर्मकांड की शुरुआत लोग देवताओं की सहमति से करते हैं। विवाह समारोह से लेकर घर के मुहुर्त तक के काजों को यहां देवताओं के आशीर्वाद से संपन्न किया जाता है।

राज्य में प्राचीन काल से ही हजारों देवी देवताओं का वास रहा है। किन्नौर व चंबा की उंची उंची चोटियों से लेकर कांगड़ा व मंडी की पर्वत श्रृंखलाओं तक ऐसे अनेकों देवी देवता बसते हैं जो हजारों वर्षों से क्षेत्र के लोगों को समृद्धि प्रदान करते आए हैं। कांगड़ा में ज्वालामुखी माता सदियों से अपनी निरंतर जलती ज्वाला के लिए दुनिया में विख्यात है। जबकि बिलासपुर की मनोहर पहाड़ियों में बसा माता नैना देवी का मंदिर देश के अन्य मंदिरों में अन्यतम है। कुल्लू के मशहूर पर्यटक स्थल मनाली में बसी माता हिडिम्बा भी अपने यहां पधारे श्रद्धालुओं को बारंबार आकर्षित करती है। जबकि चंबा की दुर्गम पहाड़ियों में बसे भगवान लक्ष्मी नारायण हर वर्ष हजारों श्रद्धालुओं को अपने यहां पधारने को विवश करते हैं। जबकि समुद्र तल से लगभग 8500 फीट की उंचाई पर बसा शिमला का जाखू मंदिर भक्तों को मानसिक शांति प्रदान करता है। इसी प्रकार हमीरपुर में विराजमान बाबा बालक नाथ, ऊना की चिंतपूर्णी माता, सोलन की शूलिनी माता, मंडी की शिकारी माता, किन्नौर की चंडिका माता और लाहौल स्पिति में बसे भगवान त्रिलोकी नाथ भी अनेकों पौराणिक गाथाएं समेटे हुए हैं। इतना ही नहीं राज्य के छोटे-छोटे गांवों में बसे देवताओं के बड़े-बड़े चमत्कारों से भी देशवासी भली भांति परिचित हैं। यहां जो भी भक्त सच्ची श्रद्धा के साथ पधारता है प्रभु उसकी झोली को खुशियों से भर देता है। यहां पधारने वाला हर भक्त आंतरिक शीतलता लेकर ही घर लौटता है। देवताओं से जुड़ी ऐसी अनेकों गाथाएं हैं जिन्हें भक्त आज भी बड़ी श्रद्धा से अपनाते हैं। देवताओं के गुर अपनी गुरबाणी का बखान करते हुए जिन शब्दों व बातों को कहते हैं, श्रद्धालु उसे देवता की बाणी समझ कर उसी के अनुरूप अपनी जिंदगी जीने का संकल्प लेते हैं। खेलते गुर से आशीर्वाद स्वरूप चावल के दाने प्राप्त करने के लिए यहां भक्तों की भीड़ लगी रहती है। कभी-कभी तो शाम तक देवता के भक्त गुर से प्रसाद ग्रहण करने के लिए लंबी-लंबी पत्तियों में डटे रहते हैं।

यहां सभी अमीर-गरीब, ऊंच-नीच, अगड़ा-पिछड़ा, छोटा-बड़ा और शासक-शोषित अपनी अपनी फरियाद लेकर आते हैं तथा प्रभु कृपा पाकर घर वापस लौटते हैं। देवता कभी भी अपने भक्तों की भक्ति में भेद नहीं करता वह सभी को समानांतर दृष्टि से निहारता है। भक्तों के लिए देवालय में पधारने पर किसी भी प्रकार की मनाही नहीं रहती है। यहां सभी धर्मों व वर्गों के लोग बेरोक-टोक पधार सकते हैं तथा मंदिर के प्रत्येक कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं। जिससे सिद्ध होता है कि देवभूमि हिमाचल में आज भी समरसता की समानांतर बयार बहती है। यहां विराजमान देवताओं में आज भी वही शक्ति है जो उनमें सैकड़ों वर्ष पूर्व थी। राज्य में देव संस्कृति की अखंडता के अनेकों उदाहरण हमारे समक्ष फलते-फूलते रहते हैं। हम प्राय: निहारते हैं कि देव संस्कृति में एक पुजारी की पूजा से लेकर मंदिर के पहरेदार की रखवाली तक का जिम्मा वर्षों से वंशानुगत चला आ रहा है। पुजारी की बिरादरी में पनपा बालक कभी भी अपने पुश्तैनी कार्य से पीठ नहीं मोड़ता बल्कि वह उस कार्य को अपना सौभाग्य समझता है। जबकि देवता के गुर खानदान में जन्मा बच्चा देव सेवा के लिए हर दम तत्पर रहता है। इसी प्रकार देव बजंतरियों के वंशज भी अपने परंपरागत काज के प्रति खासे उत्साहित रहते हैं। उनकी सेवा इतनी निष्ठावान होती है कि बच्चे जवान होने से पूर्व ही हर तरह के वाद्य यंत्र बजाना सीख लेते हैं। देव समाज से जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्य के प्रति इतना सच्चा होता है कि उसके बच्चे छोटी उम्र से ही बड़ों की नकल करने का प्रयास करने लगते हैं। परिणामस्वरूप जवान होने से पूर्व ही वे अपने पूर्वजों के सारे कार्यों को सहजता से सीख लेते हैं। देव संस्कृति के कार्य के आबंटन से जहां एक कारदार प्रसन्न रहता है वहीं देवता की पूजा करने वाला पुजारी भी अपने कार्य के प्रति उत्साहित रहता है। देव संस्कृति की प्रत्येक जिम्मेदारी में एक विचित्र जुडाव रहता है। यहां न तो लोगों को किसी से ईर्ष्या का भाव रहता और ना ही किसी से कोई लोभ की आस। यहां सभी जन अपने अपने कर्तव्यों के प्रति परायण रहते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि भौतिकता के इस आधुनिक युग में देव समाज एक ऐसी अखंड परंपरा है जिसके पग-पग में समरसता समाहित है। देवभूमि के अलावा शायद ही कोई दूसरा राज्य हो जहां हिमाचल जैसी सुखद देव संस्कृति का एहसास होता हो। ◆◆◆

लेखक शिक्षक, विचारक व स्तंभकार हैं।

समरस समाज समय की आवश्यकता

... डॉ. एन.आर. गोपाल

आज जब हम भारतीय समाज की कारूण्य भरी स्थिति देखते हैं तो अत्यंत दुख होता है। वर्षों से जिस प्रकार से हमारे मानस पटल पर, अपने देश और धर्म के प्रति एक विचार विशेष ने विषयगत कर, इसके प्रति द्वेष भरा है, यह हमें समझने की आवश्यकता है। सनातन धर्म एक सतत् प्रक्रिया है, निरंतर चिन्तन, अविरल गतिमान एक वैज्ञानिक व नैसर्गिक जीवन पद्धति का आधार है। हमारे मनीषियों ने अपने दूर दृष्टि से समरस समाज की कल्पना ही नही की तो ऐसे समाज का जीवंत उदाहरण भी विभिन्न जीवन धाराओं के माध्यम से देने का प्रयास किया। आज आवश्यकता है उस वैज्ञानिक जीवन दायिनी समरस समाज को यर्थाथ में परिणत करने की। हमें यह बताया गया की हिन्दू समाज कभी भी समरस समाज के रूप में अपने अस्तित्व में नहीं रहा। न कभी था, न ही है और न ही रहेगा। विभिन्न माध्यमों से बताया गया कि हमारा ऊंच-नीच, स्थान, भाषा, समुदाय, जाति इत्यादि के कारण पूर्णत: विभाजित अलग-अलग कुटुंबों में बंटा हुआ समाज है। इसकी पहचान कभी भी 'समरस' समाज के आधार पर नहीं है। कदाचित् इसी कारण हमने भी इसे यथार्थ मान, अपने परंपरागत परस्परावलंबित, स्वत: स्फूर्त, नैसर्गिक मान अपने परंपरागत-परस्परावलंबित, स्वत: स्फूर्त नैसर्गिक समाज जीवन की अवधारणा को विस्मृत कर द्वेष, राग जनित जीवन व्यतीत कर वैमनष्यता का धारण-वरण कर बिखरे पड़े एक संगठित समाज होने का दिवास्वप्न देख रहे हैं। हमें भी यथार्थ में बंटा समाज दिखता है। इस आचार-विचार का एक बहुत बड़ा कारण है कि हमने कभी भी मूल शास्त्राध्ययन नहीं किया और सुनी हुई बातों को अग्रसारित कर अपने कर्तव्यों की इति श्री कर ली। श्री कृष्ण ने भगवद्गीता में स्पश्ट कहा है-'चातुर्वणं मया सृष्टं गुण कर्म विभागश:' अर्थात् चार वर्णों की सृष्टि मैंने की है जिसका मूल आधार व्यक्ति के गुण और कर्म के आधार पर है। मात्र एक ही परमात्मा को देखना और कष्ट में पड़े प्राणियों को साक्षात् परमात्मा के रूप में

मानकर उनकी सब प्रकार से सेवा करना सबसे बड़ा धर्म बतलाया गया है। अवर्ण-सवर्ण में भेद व व्यक्तियों की हेयता दर्शाने का विचार अभारतीय है।

हिमाचल प्रदेश देवों की भूमि मानी गई है। जाति जातिगत भेदभाव हमारे समाज में भी व्याप्त हैं। लेकिन विगत कुछ वर्षों में काफी बदलाव आया है। शहरी क्षेत्रों में तो छूआछूत, अस्पृश्यता लगभग समाप्त ही हो चुकी है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी आज ऐसी स्थिति आ गई कि नई पीढ़ी पुराने बन्धनों को तोड़कर समरसता की तरफ बढ़ रही है। सहभोज में सभी जातियों के लोगों का एक साथ भोजन करना आम बात हो गई है। हिमाचल प्रदेश के प्रमुख मन्दिरों में सभी वर्गों की आवाजाही आम बात हो गई है। मन्दिरों में भण्डारे का आयोजन करना और सभी जातियों के लोगों का एक साथ अन्न ग्रहण करना जैसी व्यवस्था सर्वमान्य है। ये सभी लक्षण समाज में समरसता को बढ़ावा देते हैं। लेकिन अभी भी यह प्रश्न उठता है कि रोटी-बेटी दोनों शब्द व्यवहार में कैसे लाए जा सकते हैं। पुराने जमाने में तो रोटी-व्यवहार भी जाति के अन्तर्गत चलता था लेकिन आज रोटी-व्यवहार सर्वत्र हो चुका है। रोटी-व्यवहार के बंधन खुल चुके हैं। इसका श्रेय हम आज की शिक्षित पीढ़ी को दिया जा सकता है। श्रेय किसी का भी हो लेकिन अब रोटी-व्यवहार सामान्य हुआ है, उसके बन्धन खुल चुके हैं। जबकि हम इसे जन्माधारित सत्य मान बैठे हैं। जिसकी हानि हमारा समाज भुगत रहा है। आज जाति, भाषा, वेष पर जितना शिक्षित समाज बंटा है उतना संभवत: ही यह भेद कहीं और दिखता है। जबकि हिमाचल के ही ऋषि पराशर कहते हैं- **''सा विद्या या विमुक्तये''** हम 'शिक्षित' मूर्खों की तरह व्यवहार कर समाज में विषमता बो रहे हैं। आज आवश्यक है कि हम विभिन्न वर्गों में बंटे समाज को एक साथ खड़ा होकर संगठित समाज के रूप में अपनी पहचान बनाते। वैसा ही जैसा हमारे पूर्वजों ने हमें विरासत के रूप में दिया।

हमें स्वयं पहल करनी होगी अपने बंधुओं को जोड़ने का, जो किन्हीं कारणों से अलग-थलग हुए एकाकी संघर्ष में आपस में ही लड़-भिड़ कर अपने अस्तित्व के ही शत्रु बने खड़े हैं। यदि इस यथार्थ को शिक्षित समाज नहीं समझ सकता तो अनपढ़ों से क्या अपेक्षा की जा सकती है। अत: 'संघे शक्ति कलौयुगे' की भावना को आत्म सात् करने का समय यही है। ◆◆◆

लेखक हि.प्र. केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला में अंग्रेजी के सह प्राध्यापक हैं

शिक्षित व संपन्न समाज में

समरसता

... डॉ. पूजा अवस्थी

समरसता शब्दों में नहीं, आचरण में होनी चाहिए। विविधता में एकता का भाव समरसता का प्रतिनिधित्व करता है। समता का आविर्भाव समानता के बिना नहीं हो सकता। हिमाचल में देव संस्कृति में समरसता लाए जाने के लिए बीते कुछ समय से काफी अच्छे प्रयास किए जा रहे हैं। फिर चाहे कुल्लू का दशहरा हो, मंडी की शिवरात्रि, सर्व सांझी गुरमत प्रचार कमेटी का रैण स्वाई कार्यक्रम। देव संस्कृति में समरसता लाने की बीते कुछ सालों से पहल की जा रही है। साल 2017 में कुल्लू में देव प्रतिनिधियों की तरफ से देव संस्थान प्रतिनिधि संगोष्ठी कुल्लू में एक बड़े कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इसमें बतौर मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने शिरकत की थी। इस अवसर पर उन्होंने कहा था कि अगर समाज एकमत होगा तो इससे सामाजिक एकता को बल मिलेगा। समाज के अंतिम व्यक्ति तक समरसता की अनुभूति हो इसके लिए सभी को कोशिश करनी चाहिए। वहीं कुछ साल पहले सर्व सांझी गुरमत प्रचार कमेटी की तरफ से रैण स्वाई कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। गुरुनानक देव जी के 550वें प्रकाश वर्ष के मौके पर आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों में समरसता की भावना का लाना था। इस कार्यक्रम को शिमला, संजौली, सोलन, चंबाघाट, कसौली, गढ़खल, सुबाथू, सपरून, कंडाघाट के गुरुद्वारों में करवाया गया था। वहीं हिमाचल के कुल्लू और मंडी जिले में देव संस्कृति अपना खास महत्व रखती है। कुल्लू का दशहरा हो या मंडी की शिवरात्रि, हर साल होने वाले इन मेलों में सैकड़ों की तादात में देवी-देवता शिरकत करने के लिए आते हैं। समय के साथ-साथ इन अंतरराष्ट्रीय मेलों में समरसता देखने को मिली है। चाहे वो मंडी शिवरात्रि में माधोराय की जलेब हो या कुल्लू दशहरा शुरू होने के दौरान भगवान रघुनाथ की शोभा यात्रा हो, सैकड़ों देवी-देवता बिना किसी भेदभाव के इसमें बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं। स्थानीय प्रशासन और शिवरात्रि-दशहरा से जुड़ी कमेटियां देव संस्कृति में समरसता लाने के लिए लोगों को समय-समय पर जागरूक करती रहती हैं। प्रशासन की ओर से जागरूकता शिविर लगाए जाते हैं। इन शिविरों में स्थानीय लोगों को समरसता बनाए रखने के लिए जागरूक किया जाता है। इसके सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिल रहे हैं। कुल मिलाकर धीरे-धीरे ही सही समाज में समरसता लाए जाने की यह अच्छी पहल मानी जा सकती है। ◆◆◆

लेखिका हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विवि धर्मशाला में जनसंपर्क अधिकारी हैं.

MAHARAJA AGRASEN UNIVERSITY

NAAC Accredited Grade-B

ONLINE ADMISSIONS 2020-21

Financial crisis due to COVID-19, the University has decided to give **20%** Discount in Tuition Fee and **100%** in Security for all the new admissions in UG and PG courses

SPECIAL FEE FOR

B.Tech

ME, CSE, CE,
ECE, EEE & LEET
(Approved By AICTE)

M.Tech

CSE, CE, ECE
GATES Qualified - NIL

Above 90% - NIL
80 - 90% - ₹ 28,000/- Per Sem.
65 - 80% - ₹ 38,000/- Per Sem.

HOTEL MANAGEMENT BHMCT/ MTTM

Above 90%
NIL
80 - 90%
₹ 15,000/- Per Sem.
65 - 80%
₹ 21,000/- Per Sem.

NOTE: Students are entitled for single discount in tution fee for full course

OTHER COURSES 2020-21

BCA, MCA
B.Sc.: Med. Non-Med.
M.Sc.: Physics, Chemistry Maths, Bio-Tech., Zoology

B.Com, B.Com (H)
BBA, MBA, M.Com
D.Pharm
B.Pharm
PCI Approved

BA LLB,
B.Com LL.B
LLB BCI Approved
LL.M 1 year

9 KMS
FROM KALKA RAILWAY STATION

All admissions are provisional subject to the future guidelines to fulfill minimum eligibility by the UGC/ Govt. of Himachal Pradesh/HP-PERC and other Regulatory bodies.

CAMPUS
Atal Shiksha Kunj, Pinjore Nalagarh Highway, Nanakpur Kalujhanda, Barotiwala, Distt. Solan-HP 174 103

DELHI OFFICE
Maharaja Agrasen Institute of Technology, Maharaja Agrasen Chowk, Sector-22 Rohini, Delhi-110086

Don't Share Your Data on Fraudulent Websites | Upload only on Official Website: www.mau.ac.in

Helpline: 093180-29217, 18, 35, 38, 45

www.mau.ac.in info@mau.ac.in admission@mau.ac.in

समता प्राप्त

विषमता रहित बन्धु

... डॉ. चमन लाल बंगा

हम सब भारत के पुत्र हैं, यहां की संतति हैं। प्राकृतिक रूप से समता प्राप्त, विषमता रहित बंधु हैं। यह शाश्वत् सत्य है। पुरातन भारतीय संस्कृति में कभी भी किसी के साथ किसी भी तरह का भेदभाव स्वीकार नहीं किया गया है। हमारे वेदों में भी जाति या वर्ण के आधार पर किसी भेदभाव का उल्लेख नहीं है। गुलामी के सैकड़ों वर्षों में आक्रमणकारियों द्वारा हमारे धार्मिक ग्रन्थों में कुछ मिथ्या बातें जोड़ दी गई जिससे उनमें कई विकृतियां आ गयी जिससे समरसता का अभाव उत्पन्न हुआ, जब हम जाति के आधार पर किसी व्यक्ति का अपमान करते हैं तो इससे उसकी मानसिक क्षति ही नही मन में कुंठा का भाव उत्पन्न करते हैं। इससे उसकी सोच केवल अपने तक ही सीमित हो जाती है और वह अपनी इस संकुचित सोच के आवरण में अपने देश या समाज का हित नहीं सोच पाता। सामाजिक सरंचना का विचार पूर्णत: मानसिक संवेदनाओं पर आधारित होता है।

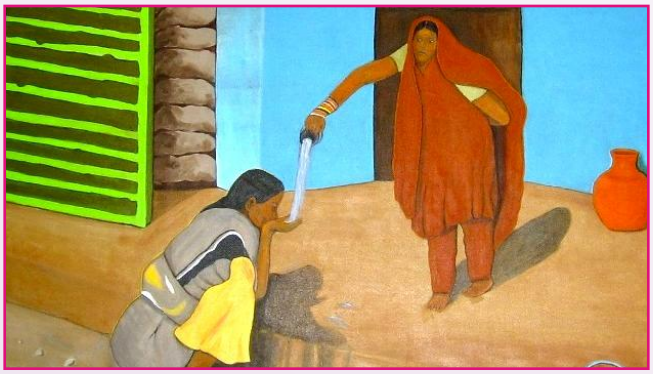

भारत विविधतापूर्ण भाषा संस्कृति वाला देश है। देश को एक सूत्र में पिरोकर रखने के लिए ऐसे नेतृत्व की सदैव आवश्यकता रही है जो समस्त विविधताओं में समन्वय स्थापित कर सामाजिक व्यवस्था में समरसता बनाएं रख सकें। संविधान निर्माता डॉ. भीमराव राव अंबेडकर का मानना था कि देश में सामाजिक समरसता को स्थापित करने का सबसे सशक्त माध्यम शिक्षा है। शिक्षा और संपन्नता अहंकार पैदा कर रहा है जिसके कारण समाज में समरसता की भावना बहुत कम दिखती है। शिक्षित युवा ही समाज का विकास कर सकता है। शिक्षित व्यक्ति ही अपने अधिकारों और कर्तव्यों का सही निर्वहन कर सकता है। अशिक्षित समाज में ही रूढ़ियों और कुरीतियों का जन्म होता है। जातिगत भेदभाव एवं अस्पृश्यता आज भी कई स्थानों पर गंभीर समस्या बनी हुई है। सामाजिक समरसता आज के समय की सबसे बड़ी चुनौती है और इसे ठीक करना आज की आवश्यकता है जो राष्ट्र हित के लिए जरूरी है। पूजनीय श्री गुरू जी ने भी कहा है, 'हिन्दू समाज के सभी घटकों में परस्पर समानता की भावना के विद्यमान रहने पर ही उनमें समरसता पनप सकती है'। समरसता का अर्थ ही समाज को एकजुट करना एवं पारस्परिक भेदभाव को समाप्त करना है। यह कार्य किसी एक व्यक्तिया संस्था का नहीं है। इसके लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। यह एक सामाजिक जरूरत है, इस बुराई का खात्मा जागरूक समाज के द्वारा ही किया जा सकता है। तभी जाकर समाज में वास्तविक समरसता का भाव उत्पन्न होगा। कई स्थानों पर लोगों को जागरूक करने के लिए उनमें प्रेम एवं अपनत्व का भाव जगाने की आवश्यकता है। हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में कई स्थानों पर कुंठित मनों के विषमता की भावना को दूर करने की आवश्यकता है। यह भावना दूर करने के लिए उनके साथ परस्पर प्रेम एवं सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता है। इससे सभी लोग जातिगत भेदभाव से ऊपर उठकर राष्ट्र की उन्नति में सहयोग करेंगे। इससे राष्ट्रीय एकता स्थापित हो सकेगा। शिक्षित व्यक्ति जहां अपने परिवार को साधन संपन्न बना रहा है वहीं अपने हक के लिए आवाज बुलंद करने के साथ-साथ समाज हित में कार्य करने व आपसी समरसता के साथ सामाजिक विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रहा है। हिमाचल प्रदेश में कई स्थानों पर हमारे परिवारों में ऐसा वातावरण बना है जिससे सामजिक समरसता को बल मिल रहा है। शहर में लोगों को आस-पास के लोगों की जाति उच्च है या निम्न इससे कोई अन्तर नहीं होता। लोग आपस में घुलने-मिलने लगे हैं किन्तु अभी छोटे कस्बों एवं गांवों में यह समस्या पूर्ववत ही बनी हुई है। केंद्र और हिमाचल प्रदेश सरकार 'सबका साथ सबका-विकास' के भाव से कार्य कर रही हैं। सरकार द्वारा गरीब व पिछड़े अनुसूचित जाति के लोगों के लिए अनेक योजनाएं चलाई गई हैं, जिससे जरूरतमंद लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

सामाजिक समरसता के लिए सरकार द्वारा किया यह प्रयास सराहनीय है। हमारे पढ़े-लिखे और सम्पन्न समाज के ज्यादातर लोग अपने जीवन में मूल्यों को मन, मस्तिष्क और व्यवहार में आचरणीय बना रहे हैं। शिक्षित व सम्पन्न समाज के संगठित लोग समाज को जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं, उसके सुखद परिणाम भी देखने को मिल रहे है परन्तु समाज को विघटित करने वाली ये शक्तियां समाज को जोड़ने नहीं देना चाहतीं। ◆◆◆

लेखक इक्डोल हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में सहायक आचार्य हैं।

शिवमूर्तियों के अपमान से लोक आस्था को पहुंचाई जा रही ठेस

प्रदेश में योजनाबद्ध तरीके से शिव-प्रतीकों के साथ अपमान की घटनाएं सामने आने से लोक आस्था को भारी क्षति पहुचाने की साजिश की जा रही है। ताजा मामला धर्मशाला के नगर निगम के वार्ड सिद्धपुर का है। इस मंदिर में शिवलिंग एवं उनके प्रतीकों के साथ अपमानपूर्वक बर्बरता की गई है। शिवलिंग को मंदिर से उठाकर साथ की झाड़ियों में फेंक दिया गया, जबकि नंदी बैल इत्यादि जो अन्य प्रतीक हैं उनको कहां पर पटका गया है इसकी जानकारी वहां के मंदिर प्रशासन को भी नहीं है।

सायंकाल में घटी इस घटना की सूचना वहां के स्थानीय पार्षद एवं ग्राम सुधार समिति ने धर्मशाला थाने में दी है। इस मंदिर की स्थापना 4 वर्ष पूर्व हुई है और इसी सप्ताह मंदिर में भंडारे का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया था। इस बारे में प्रारम्भिक जानकारी के अनुसार किसी महिला को मंदिर की ओर आते देखा गया लेकिन इसकी पुष्टि नहीं हो पायी है। स्थानीय पुलिस मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच कर रही है। हैरानी की बात तो यह है कि ऐसी ही एक घटना चंबा में भी अभी कुछ दिन पूर्व प्रकाश में आ चुकी है जहां पर शिव मंदिर को ही निशाना बनाया गया था। जिला चंबा भरमौर के लाहला में स्थित शिवमूर्तियों को पहले भी विध्वंस किया गया था। इसके बाद जब पुन: मूर्तियों की स्थापना की गयी तो इसके बाद भी मूर्तियों को नष्ट किया गया। यहां पर तीसरी बार मूर्तियों की स्थापना की गयी है। यहां पर मूर्तियों के लगातार खंडित किये जाने से लोगों में निराशा है। प्रशासन अब तक इन मामलों में किसी भी संदिग्ध को नहीं पकड़ पाया है। प्रदेश को देवभूमि माना जाता है ऐसे में यहां पर लोगों में शिव भगवान पर गहन आस्था है। यहां शिवालयों की संख्या भी काफी है। इतना ही नहीं यह घटनाएं बिल्कुल ऐसे समय में घटी हैं जब लोगों ने शिवरात्रि पर्व को मनाने की उत्सुकता है और मंडी में अंतर्राष्ट्रीय शिवरात्रि का पर्व उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा था। विश्व हिन्दु परिषद् के अध्यक्ष खुशाल सिंह ने ऐसी घटनाओं पर चिंता जताते हुए आम लोगों को आस्था के नाम पर किये जाने वाले षड्यंत्रों से सतर्क रहने की अपील की है। उनका कहना है कि यद्यपि ऐसी घटनाओं के पीछे काम करने वाले लोगों की अभी पहचान नहीं हो पायी है लेकिन फिर भी इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि ऐसे लोग माहौल को जरूर खराब करना चाहते हैं। विहिप और आम लोगों की प्रशासन से मांग है कि इस प्रकार के मामलों पर गंभीरता दिखाते हुए इन घटनाओं के पीछे छिपे मंसूबों को बेनकाब किया जाए। ◆◆◆

दत्तोपंत ठेंगड़ी जीवन परिचय एवं कार्यकर्ता दृष्टिकोण-संगोष्ठी

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद शिमला नगर इकाई द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन उपायुक्त कार्यायल में बचत भवन में किया गया जिसमे शिमला के विभिन्न महाविद्यालयों और विश्वविद्यालय के विद्यार्थी उपस्थित रहे। इस संगोष्ठी का विषय था 'दत्तोपंत ठेंगड़ी जीवन परिचय एवं कार्यकर्ता दृष्टिकोण' जिसमें संगोष्ठी के मुख्य वक्ता श्री चेतस सुखाडिया मध्य क्षेत्र संगठन मंत्री (अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद) उपस्थित रहे। दत्तोपंत ठेंगड़ी भारत के ट्रेड यूनियन नेता एवं भारतीय मजदूर संघ, स्वदेशी जागरण मंच, भारतीय किसान संघ के संस्थापक थे। इस वर्ष उनके जन्मशताब्दी वर्ष चल जा रहा है। इसी क्रम में इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता चेतस सुखाड़िया ने दतोपंत ठेंगड़ी के जीवन के विषय में कहा कि उन्होंने अपने जीवन में बिना किसी महत्वकांक्षा के देश हित मे कार्य किया। उन्होंने एक नारा दिया था 'देश हित में करेंगे काम, काम के लेंगे पूरे दाम' अर्थात् हमारा कार्य सदैव देश हित मे होना चाहिए। चेतस सुखड़िया ने कार्यकर्ता दृष्टिकोण पर भी प्रकाश डाला और कहा कि एक कार्यकर्ता का परिचय सच्चे कार्यकर्त्ता के रूप में तभी हो सकता है जब कार्यकर्ता महत्वकांक्षी न हो होकर देश प्रथम के भाव को ले कर चले और और लोभ-मोह को छोड़कर त्याग और समर्पण का भाव हो, एक सच्चा कार्यकर्ता वो होता है जो केवल मैं की भावना को छोड़कर हम की भावना रखता हो और संगठन के लिए प्रेम रखता हो और साथ ही संगठन में सामूहिकता का भाव रखता हो। साथ ही सभी को साथ ले कर चलता हो वही एक सच्चा कार्यकर्ता होता है। ◆◆◆ साभार **जिला संयोजक शिमला**

सहिष्णुता

समरसता का सबसे बड़ा गुण

... हितेन्द्र शर्मा

मयूस होने की जरूरत नहीं, वक्त कभी एक सा नहीं रहता, यह सुनते ही अपने घनिष्ठ मित्रों की गंभीर चर्चा में शामिल होने के उद्देश्य से मैंने उत्सुकतावश पूछ ही लिया कि आखिर क्या मामला है। आज भारद्वाज बेहद दुविधा की स्थिति में और काफी मायूस नजर आ रहा था। चाय की चुस्कियों के साथ मित्रों ने बताया कि खेतों में सिंचाई के लिए हमारे मित्र भारद्वाज आजकल कुल्ह (नहर) निर्माण का कार्य कर रहे हैं। पानी की कुल्ह को पक्का करने का काम अभी चल ही रहा था कि इसमें प्रयोग होने वाले कुछ लकड़ी के फट्टों को किसी ने जला दिया, इसलिए यह चिंतित हैं। आखिर गांव की भलाई में प्रयोग हो रहें लकड़ी के फट्टे कोई, क्यों जलाने लगा। यह प्रश्न मन-मस्तिष्क में उठ ही रहे थे कि अचानक से भारद्वाज बोल पड़ा, चलो छोड़ो जो हुआ सो हुआ शायद यह उनसे अनजाने में हो गया होगा। अब हम समझ चुके थे कि हमेशा कि तरह आज भी भारद्वाज किसी की गलती पर पर्दा डालने का प्रयास कर रहा है। इस कुल्ह से कुछ दूरी पर स्थानीय लोगों के घर एंव जमीन है। गांवों में अक्सर जमीनों की सीमाओं को परिस्थितियों, व्यक्तियों और अवसरों के हिसाब से आगे-पीछे करना साधारण बात है। नवनिर्मित कुल्ह तक जमीनों की सीमाओं को बढाने के उद्देश्य से साथ लगती जमीन की झाड़ियां को काटते एवं जलाते हुए कुछ लोग काफी दिनों से धीरे-धीरे से आगे बढ़ रहे थे। शायद इस दौरान ही आग भड़क उठी और लकड़ी के फटे भी जल गए होंगे।

आश्चर्यजनक कि आग लगाने वालों के विषय में पूरी जानकारी होने के बावजूद भी भारद्वाज उन पर किसी भी प्रकार की कोई भी कार्रवाई नहीं करना चाहता था। वह बार-बार दोहराते हुए कह रहा था कि शायद यह सब अनजाने में हो गया, जो बीत गई सो बात गई।

जातिगत भेदभाव को दूर करने एवं सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने के लिए भारद्वाज एक जागरूक नागरिक के रूप में काफी समय से जमीनी स्तर पर कार्य कर रहा है। अनुसूचित जाति बाहुल्य गांव होने के कारण ही भारद्वाज एकदम खामोश रहा क्योंकि वह अपने लक्ष्य से भटकना नहीं चाहता था। हमारी नजरों में उसके लिए सम्मान बहुत बढ़ गया, यह मेरे जीवन का एक रोचक अनुभव रहा। लेकिन बेरोजगार भारद्वाज की चिंता का कारण, लकड़ी के वह फट्टे थे जो उसने ने गांव के कुछ घरों से मांगकर एकत्रित किए थे। अब उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह लोगों के फट्टे कैसे लौटाएगा, क्योंकि फट्टे तो जल चुके हैं।

मित्रों ने सुझाव देते हुए कहा कि क्यों न आग लगाने वाले दूसरे पक्ष के साथ बैठकर प्रेमपूर्वक एक बार बातचीत करें, सभी नौकरी पेशा लोग हैं शायद आपकी समस्या का कोई हल निकले। दूसरे पक्ष को सूचित कर अगले दिन हम निर्धारित समय पर कुल्ह के पास पहुंचे, प्रत्यक्ष रूप से नुकसान देखने के बाद मन काफी आहत हुआ। लेकिन हम निशब्द थे क्योंकि बातचीत के लिए सामने से सिर्फ एक महिला और दो युवा स्कूली बच्चे ही प्रस्तुत हुए। फोन आने के कारण बातचीत करते हुए मैं थोड़ा दूर निकला और खेत में एक ओर जाकर बैठ गया। नजर घुमाकर देखा तो उन युवा लडकों की अजीबो-गरीब हरकतों की तरफ ध्यान आकर्षित हुआ। सुनियोजित ढंग एंव चतुराई के साथ वह छिपते-छिपाते अपने-अपने मोबाइल फोन से भारद्वाज की वीडियो बनाने में व्यस्त थे।

सरल स्वभाव के भारद्वाज बहन और बेटा बोलकर उन्हें सम्बोधित करते हुए चर्चा कर रहे थे। उनके मर्यादित व्यवहार के कारण लगभग दस-बीस मिनट से वीडियो बनाने वाले वे कैमरामैन बुरी तरह हताश हो चुके थे क्योंकि गुप्त रूप से हो रही इस शूटिंग के दौरान तल्ख बातों एवं अभद्रता के साथ भारद्वाज को उकसाने के अनेकों प्रयास भी जारी रहे लेकिन वह शांतिपूर्ण ढंग से बात-बात पर हाथ जोड़कर ही बातचीत कर रहा था।

प्रत्यक्षदर्शी होने के कारण अब मुझे स्पष्ट रूप से समझ आ रहा था। दूसरा पक्ष अपनी गलती स्वीकारने एवं सुधारने की जगह षड्यंत्र पूर्वक वीडियो बनाकर कानून का दुरुपयोग करने के लिए सबूत एकत्रित करना चाह रहा था जोकि वर्तमान समय का एक कटु सत्य भी है। कहते हैं कि जिंदगी एक रंग-मंच है और हम लोग इस रंगमंच के कलाकार, सभी लोग जीवन को अपने-अपने नजरिए से देखते हैं। मेरे चेहरे पर हजारों प्रश्नों के साथ अब हल्की सी राहत भरी मुस्कान थी। क्योंकि गुप्त रूप से बन रही इस फिल्म में खलनायक नहीं था। मर्यादित, सरल एवं सकारात्मक स्वभाव के भारद्वाज के समक्ष सभी साजिशें विफल होती जा रही थी।

सलाम ऐसे नायकों को जो मर्यादा में रहकर सैकड़ों कठिनाईयों को सहन करने के बावजूद भी हमारे देश एवं सामाजिक समरसता के लिए निष्ठापूर्वक कार्य कर रहे हैं। ◆◆◆

लेखक साहित्यिक संस्था मंथन के प्रमुख हैं।

दी न्यू विशाल हिमाचल गुड्स ट्रांसपोर्ट को-ऑपरेटिव सोसायटी, गगरेट

जयराम ठाकुर
मुख्यमंत्री, हि.प्र.

सतपाल सिंह सत्ती
प्रदेशाध्यक्ष, भाजपा

राजेश ठाकुर
विधायक गगरेट विस

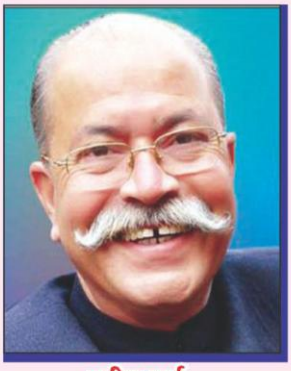

प्रवीण शर्मा
उपाध्यक्ष, हिमुडा

सतीश गोगी
प्रधान

संजय कुमार
उपप्रधान

विनोद पुरी
प्रबंधन समिति सदस्य

रमन जसवाल
भाजपा नेता

सुरेन्द्र जसवाल
प्रबंधन समिति सदस्य

राजकुमार
प्रबंधन समिति सदस्य

राजिन्द्र शर्मा
सचिव, ट्रक युनियन गगरेट

सुरेश पराशर, सचिव
दी न्यू विशाल हिमाचल
गडस सोसायटी

बलकार सिंह
प्रबंधन समिति सदस्य

विनोद ठाकुर
ट्रांसपोर्टर

विनय शर्मा
ट्रांसपोर्टर

मंगल सिंह ठाकुर
ट्रांसपोर्टर

अजमेर सिंह

देवेन्द्र सूद

मातृवन्दना के सभी पाठकों को
नववर्ष विक्रमी सम्वत् 2077
की हार्दिक शुभकामनाएं

गांव से खत्म हुई छुआ-छूत

... हरिराम धीमान

किसी जमाने में सोलन जिले में तीन एम प्रसिद्ध थे, मांगल, मलोण और मित्तियां क्योंकि तीनों ही दुर्गम क्षेत्र थे। किसी सरकारी कर्मचारी को सजा देनी हो तो इन तीनों में से एक स्थान पर बदली कर दी जाती थी। इन्ही में से एक मित्तियां मेरा पैतृक गांव है जो नालागढ से करीब 20 कि. मी. दूर सामने पहाड़ी पर है। 40 साल पहले जब मेरी नौकरी लग गयी तो उसके बाद गांव से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं रहा। यद्यपि जब भी समय मिलता था अपने गांव आता-जाता रहता था लेकिन कभी नजदीक से बारीकी से देखने का मौका नहीं मिला। पिछले दिनों मेरा अपने गांव से नजदीक से सम्पर्क उस समय हुआ जब अपनी सेवानिवृत्ति के अवसर पर गांव में धाम का आयोजन किया था। लगा कि आज मेरा गांव सच में बहुत बदल गया है।

करीब 50 साल पहले मैने ठीक से होश सम्भाला था। उस समय को याद करता हूं तो विश्वास नहीं होता कि कभी मेरे गांव की ऐसी भी स्थिति थी। गांव में जात-पात जोरों पर थी। निम्न वर्ग के लोग सवर्णों की दहलीज के अंदर नहीं आ सकते थे और सवर्णों के खाने-पीने की वस्तु को नहीं छू सकते थे। अगर गलती से छू दिया तो उसे पशुओं को खिला दिया जाता था। गांव में पानी के अलग-अलग कुएं थे। सवर्ण तो उनके कुएं पर आ जा सकते लेकिन उसका पानी नहीं पीते थे। हरिजन लोग सवर्णों वाले कुएं में झांक भी नहीं सकते थे। मुझे ध्यान है कि जब हम पशुओं को चराने के लिए हरिजन बस्ती से होकर जाते थे तो दोपहर भोजन के लिए ले जाने वाले पैकेट को एक व्यक्ति बस्ती से बाहर के रास्ते से होकर गांव के बाहर जाकर देकर आता था। गांव में किसी हरिजन परिवार में ब्याह शादी की धाम होती थी तो कोई सवर्ण नहीं जाता था। जब भी प्रभावी वर्ग के किसी व्यक्ति के घर में कोई धाम इत्यादि होती थी तो हरिजन जाति से संबंधित लोगों को गली में बैठा कर भोजन कराया जाता था। सन 1978 में जब हिमाचल में हर गांव में पीने का पानी नलों द्वारा उपलब्ध करवाया गया तो हमारे गांव में भी तीन नल स्वीकृत हुए थे। यहां भी तीनों नलों पर प्रभावी लोगों की भीड़ लगी रहती थी और निम्न वर्ग के लोग नल खाली होने के इंतजार में रहते थे कई बार तो ऐसा भी होता था की नल में पानी बंद हो गया और वह बिना पानी भरे घरों को लौट गए। उस समय यह देखकर मुझे बहुत दुख होता था।

एक दिन उन लोगों का एक प्रतिनिधिमंडल लेकर सम्बन्धित विभाग के कार्यालय में गया और हरिजन बस्ती के लिए अलग से नल की मांग की। विभाग की तरफ से तुरंत एक नल हरिजन बस्ती में लग भी गया। इससे लोग बहुत प्रसन्न हुए। एक दिन दूसरे नलों पर ज्यादा भीड़ होने के कारण मैं अपना पानी लेने के लिए उनकी बस्ती वाले नल पर चला गया तो उन्हें मुझे देख कर बहुत हैरानी हुई तो मैंने बताया कि मैं यहां से पानी लेना चाहता हूं तो उन्होंने खुशी-खुशी अपने बर्तन हटाकर सबसे पहले मुझे पानी भरने दिया और मैं घर आ गया। इससे अन्य लोगों को बहुत हैरानी हुई। क्योंकि हमारे घर में पहले से ही इसके लिए उचित वातावरण बन चुका था, इसलिए मुझे किसी प्रकार के विरोध का सामना नहीं करना पड़ा। फिर तो यह हर रोज का काम हो गया। मैं या हमारे परिवार के सदस्य आराम से उस नल से पानी भरने लगे तो पूरे गांव में इस बात की चर्चा होने लगी। मैंने उन्हें बताया गांव के सभी नलों को एक ही स्रोत से पानी आता है तो क्या अंतर है। धीरे-धीरे बात लोगों के दिमाग में आने लगी। बस्ती के कुछ अन्य लोग भी देखा देखी उस नल पर पानी भरने के लिए आने लगे और देखते-देखते वहां भी भीड़ होने लगी। जब वहां भीड़ रहने लगी तो हरिजन बस्ती वाले भी दूसरे नलों से पानी भरने लगे। जब कभी नलों में पानी नहीं आता तो तो कुएं से पानी भरना पड़ता था। अब हर कोई किसी भी कुएं से पानी भर सकता था। गांव में जब हरिजन बस्ती में किसी के कोई धाम इत्यादि होती तो वे रसोई का सहारा काम प्रभावी लोगों को सौंपने लगे कि आप बनाइए और सभी को खिलाएं। धीरे धीरे प्रभावी लोगों के कार्यक्रमों में भी जहां पहले हरिजन वर्ग के लोगों को गलियों में पंगत लगा कर भोजन कराया जाता था, अब सभी लोगों के साथ थोड़े अंतर पर बैठा कर करवाया जाने लगा।

धीरे-धीरे यह अंतर मिटते-मिटते आज यह स्थिति है कि जब मैंने धाम का आयोजन किया तो एक ही पंक्ति में सभी वर्गों के लोग बैठ कर आराम से भोजन कर रहे थे, जिसे देखकर मुझे बहुत सुखद आश्चर्य हुआ। अब गांव में छुआ-छूत की बुराई 95 प्रतिशत तक खत्म हो चुकी है। निर्बल वर्ग के लोगों को हर कार्य में बराबर का हिस्सेदार बनाया जाता है चाहे वह गांव में पंचायत का काम हो या गांव में मंदिर प्रबंधक कमेटी की बात हो हर जगह उन्हें उचित प्रतिनिधित्व दिया जाता है और गांव के विकास की योजनाओं में बराबर का भागीदार बनाया जाता है। ◆◆◆ **लेखक सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी हैं।**

सांप्रदायिक सद्भाव को तोड़ती वामपंथी विचारधारा

... राकेश सैन

फाल्गुन मास है, अमराईयां फूट रही हैं तो नन्हीं कोपलें सिर उठाती हुई कुदरत के शीत-निद्रा से जागने का संदेश दे रही हैं। महीना है रंग, उमंग व चंग-मृदंग का परन्तु इन दिनों दिल्ली में जो हुआ उससे फाग खून में रंगा दिखने लगा। चार दर्जन के आसपास लोग मौत के घाट उतार दिए गए, साढ़े तीन सौ से ज्यादा घायल हुए तथा करोड़ों की संपत्ति स्वाह हुई। 22 फरवरी को हालात तब बिगडने लगे जब शाहीन बाग की तरह कई स्थानों पर धरने के समाचार आने लगे। दंगों को अगर कट्टर जिहादी चलचित्र मानें तो सवाल है कि इस पटकथा का लेखक, निर्माता और निर्देशक कौन हैं। इन दंगों की पृष्ठभूमि उस समय तैयार हुई जब नागरिकता संशोधन अधिनियम को लेकर समाज के एक वर्ग की अज्ञानता व भय को हथियार बना कर निहित स्वार्थपूर्ति की जाने लगी। **राष्ट्रपति के अभिभाषण से लेकर गृह मन्त्री व प्रधानमन्त्री तक के वक्तव्यों से बार-बार स्पष्ट किया गया कि न तो किसी की नागरिकता छीनी जा रही है और न ही अभी नेशनल सिटीजन रजिस्टर लाया जा रहा है परन्तु दंगा शिल्पियों ने बेमेल घी-चावल की ऐसी खिचड़ी एक वर्ग विशेष को परोसी कि सडकों पर उतरे लोगों ने सोचना-समझना मानो छोड़ सा दिया। प्रदर्शनों की आड़ में साम्प्रदायिकता का मवाद भरा गया जो फूटा तो देश की आत्मा घायल हो गई। दुखद है कि देश में जिहादी रोग का पोषण धर्मनिरपेक्षता के नाम पर होता रहा है और इस काम में वामपंथी सदैव आगे रहे। वर्तमान में भी स्वरा भास्कर, जावेद अख्तर, अनुराग कश्यप, नसीरुद्दीन शाह, तीस्ता शीतलवाड़, कम्यूनिस्ट पार्टियों और मीडिया में लाल सलाम वालों का 'इको सिस्टम' इस कट्टरपंथ को न केवल पोषित करता बल्कि बचाव करता भी दिखाई दे रहा है।** देश विभाजन के समय भी इसी तरह वामपन्थियों ने मुस्लिम लीग का मस्तिष्क बन कर काम किया। उस समय के सबसे कद्दावर कम्युनिस्ट नेता पीसी जोशी अपने पत्र में मुस्लिम लीग के बारे लिखते हैं- हम मुस्लिम लीग के चरित्र में बदलाव देखने और स्वीकार करने वाले सबसे पहले थे। जब लीग ने अपने उद्देश्य के रूप में पूर्ण स्वतन्त्रता को स्वीकार किया और अपने बैनर तले मुस्लिम जनता की रैली करना शुरू की हमने अपनी पार्टी के भीतर चर्चाओं की एक शृंखला आयोजित की और 1941-1942 में इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यह (लीग) एक साम्राज्यवाद-विरोधी संगठन बन गया, जिसमें मुस्लिमों की स्वतन्त्रा का आग्रह था। पाकिस्तान की मांग आत्मनिर्णय की मांग थी। एक धारणा बनी हुई है कि लीग एक साम्प्रदायिक संगठन है और जिन्ना प्रो-ब्रिटिश, लेकिन वास्तविकता क्या है। जिन्ना स्वतन्त्रता प्रेमी हैं।' -(**कांग्रेस एंड दी कम्यूनिस्ट, पीसी जोशी, पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस बॉम्बे, पृष्ठ 5**)

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने न केवल मुस्लिम लीग का समर्थन किया, बल्कि अपने लोगों जैसे सज्जाद जहीर, अब्दुल्ला मलिक और डेनियल लतीफी को लीग में शामिल किया। डेनियल लतीफी ने 1945-1946 के चुनावों में पंजाब मुस्लिम लीग का घोषणा-पत्र लिखा था। लीग का पूरा चुनाव अभियान भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा पंजाब में मंचित किया गया।

-(**जहीर, सज्जाद, लाइट अक्रन लीग यूनियनिस्ट कम्र्ट, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे, जुलाई, 1944, पृष्ठ 26-33**)

कम्युनिस्टों ने भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन को पूंजीपति और फासीवादी ताकतों से जोड़ा और ब्रिटिश प्रयासों का समर्थन किया। उन्होंने भारत को अंग्रेजों द्वारा डोमिनियन स्टेट बनाए रखने के लिए चुनाव लड़ा और अंग्रेजों के साथ खड़े रहे। कम्युनिस्टों ने ब्रिटिश शासन को प्रस्ताव दिया था कि भारत बहुराष्ट्र देश है और

इसका स्थानीय आकांक्षाओं के आधार पर विभाजन होना चाहिए। इसीलिए उन्होंने जिन्ना के दो राष्ट्र सिद्धांत का समर्थन किया और पाकिस्तान के प्रसव में दाई की भूमिका निभाई। वाम नेताओं ने जुलूस और प्रदर्शनों का आयोजन करके पाकिस्तानी आन्दोलन को समर्थन दिया। ईएमएस नम्बूदरीपाद और ए.के. गोपालन ने मुस्लिमों के साथ जुलूस का नेतृत्व किया, पाकिस्तान और मोप्लिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाए। ख्वाजा अहमद अब्बास, जो स्वयं वाममार्गी थे, उनका कहना था कि सीपीआई ने भारत को मार डाला, क्योंकि इन्होने मुस्लिम अलगाववाद को वैचारिक आधार दिया। पाकिस्तान बना लेकिन सीपीआई को सर्वहारा की तानाशाही स्थापित करने का मौका नहीं मिला। पाकिस्तान ने कॉमरेड डा. अशरफ और सज्जाद जहीर को जेल में बन्द कर दिया और दस साल जेल में रहने के बाद भारत लौटे। -(**मुस्लिम पॉलिसी इन इण्डिया, हामिद दलवई, हिन्द पाकेट बुक्स**)

साल 1919-20 में सोवियत संघ के पक्ष में पठानों को लड़ने के लिए वामपन्थी नेता एम.एन. रॉय मास्को से ताशकन्द तक एक ट्रेन भर के हथियार ले गए। इन्हीं हथियारों से पठानों ने अपने इलाकों से पंजाबी हिन्दू-सिखों का सफाया किया। 1948 में आजाद भारत के विरूद्ध वामपंथियों ने हैदराबाद के धर्मांध निजाम और रजाकारों से हाथ मिलाकर सशस्त्र विद्रोह किया। कोई पूछ सकता है कि जिहादी मानसिकता व वामपन्थ के बीच कुएं और मेंढक का रिश्ता क्यों है। इसका जवाब है कि दोनों ही विघटनकारी मानसिकताएं हैं। जिहादी 'गजवा-ए-हिन्द' यानि पूरे भारत को दीन के अधीन लाने के मुगालते में है और वामपंथी भारत को कई राष्ट्रीयताओं का समूह मानते हैं और इस आधार पर विघटन के प्रयास में रहते हैं। दोनों ही क्रूर व हिंसात्मक साधानों में विश्वास रखते वाले हैं।

वामपंथियों के आदर्श पुरुष माओ-त्से-तुंग का मानना था कि ताकत बन्दूक की नली से निकलती है और जिहादी तत्व जन्म से ही तलवार पर अमन का पैगाम लिख कर घूमते रहे हैं। दिल्ली की जिहादी हिन्सा व केरल या बंगाल में मार्क्सवादियों द्वारा समय-समय पर दिखाई जाने वाली क्रूरता प्रमाण है कि दोनों मानसिकताएं किस प्रकार उन लोगों से निपटती हैं जिन्हें अपना शत्रु मानती हैं। सौभाग्य से आज देश में लोकतान्त्रिक व्यवस्था है और विघटनकारी शक्तियों से कानून की ताकत के साथ-साथ इन्हें वैचारिक धरातल पर परास्त करके ही निपटा जा सकता है। इसके लिए देश समाज के हर वर्ग को आगे आना होगा। कट्टरवादियों को बताना होगा कि दुनिया को आज दारा शिकोह, रहीम, रसखान, ए.पी.जे. अबदुल कलाम के इस्लाम की जरूरत है न कि औरंगजेब, गजनी, गौरी या खिलजी जैसे पागलपन की।

पग-पग नफरत, पग-पग विषधर।
आस्तीन नहीं है जिनकी,
उनको भी डस लेते विषधर।
आओ मिलकर प्रेमरंग से,
सबके मन का जहर बुझाएं।
कष्ट मिटाएं मानवता के,
आओ गीत फाग के गाएं। ◆◆◆

लेखक पथिक संदेश पत्रिका के सम्पादक हैं।

फार्म - 4 (नियम 8 देखिये)

1.	प्रकाशन स्थल	: शिमला
2.	प्रकाशन तिथि	: माह की 1 तारीख
3.	मुद्रक का नाम	: कमल सिंह सेन
	क्या भारतीय नागरिक हैं	: हां
	पता	: डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004
4.	प्रकाशक का नाम	: कमल सिंह सेन
	क्या भारतीय नागरिक हैं	: हां
	पता	: डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004
5.	सम्पादक का नाम	: डॉ. दयानंद शर्मा
	क्या भारतीय नागरिक हैं	: हां
	पता	: डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत के साझेदार या हिस्सेदार हों।	: मातृवन्दना संस्थान : डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004

मैं कमल सिंह सेन, एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक 31 मार्च, 2020

हस्ता/-
कमल सिंह सेन
प्रकाशक

With Best Compliments from:

SHIVALIK HOSPITAL

Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

सामाजिक समरसता के विरुद्ध देश में बढ़ते आंदोलन

... नीतू वर्मा

पिछले कुछ समय से देश में नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के विरोध के नाम पर हो रहे प्रदर्शनों ने जो रूप लिया है, वह देश की समरसता पर एक आक्षेप से अधिक और कुछ भी नहीं जान पड़ता है। हालांकि एक ऐसा कानून, जिसका देश के नागरिकों से कोई भी सरोकार न हो, का विरोध किसी भी बुद्धिजीवी के गले नहीं उतरता है। किसी भी प्रजातंत्र में विरोध तथा आंदोलन प्रजातंत्र को जीवित रखने तथा उसमें सुधार लाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। भारत के इतिहास में कई ऐसे प्रकरण हैं जहाँ निरंकुश शासकों को विरोध प्रदर्शनों तथा आंदोलनों के माध्यम से वास्तविकता का पाठ पढ़ाया गया तथा उन्हें सही रास्ते पर लाया गया। किन्तु पिछले कुछ महीनों में जिस प्रकार के आंदोलन देश में हुए हैं उनमें मुद्दों का अभाव, वैचारिक विक्लांगता तथा राजनैतिक तथा निजी अहंकार से अधिक कुछ भी प्रतीत नहीं होता है।

जहाँ एक ओर तो देश की सरकार पिछले कई दशकों से सामाजिक समरसता के मार्ग में अवरोध के रूप में खड़े कई विवादास्पद मुद्दों को आपसी भाई-चारे तथा कानूनी प्रक्रिया के तहत हल करने में लगी है तथा काफी हद तक सफल भी रही है वही दूसरी ओर कुछ स्वार्थी तत्व धार्मिक भावनाओं को भड़का कर भोले-भाले बच्चों, महिलाओं व बुजुर्ग महिलाओं का सहारा लेकर आंदोलन के नाम पर अपना निजी हित साधने में लगे हैं। चाहे वह धारा 370 को हटाने संबंधी मामला हो या अयोध्या विवाद का समाधान, हमारे देश में यह समरसता के बड़े उदाहरण के रूप में सामने आया। इस प्रकार के मुद्दों को जहां देश के नागरिकों ने बिना संकोच स्वीकार किया है वहीं कहीं न कहीं यह परिवर्तन देश की विरोधी ताकतों के गले नहीं उतर पाया है। यही कारण है कि देश में पिछले कुछ समय में ऐसे प्रायोजित प्रदर्शन भी देखे गए हैं जो विभिन्न मामलों की वास्तविकता से दूर केवल मात्र देश की सामाजिक समरसता के माहौल को खराब करने का प्रयास भर दिखाई पड़ते हैं। यही कारण है कि देश के सजग व समरस समाज ने कठिन से कठिन तथा बड़े से बड़े विवादित मद्दे को जहां शांतिपूर्वक भाई-चारे के साथ स्वीकार किया वहीं सी.ए.ए. जैसे मुद्दे पर देश में आंदोलनों व दंगों का एक ऐसा माहौल खड़ा कर दिया है जिसने देश की साख पर बट्टा लगाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। इन सब से भी अधिक चिंतनीय घटना यह देखने को मिली कि इस संवेदनशील मुद्दे को जिस गैर जिम्मेदार ढंग से देश की विपक्षी पार्टियों ने सत्ता पक्ष का विरोध करने के लिए इस्तेमाल किया वह निश्चित ही एक समरस समाज निर्माण के मार्ग में बाधक के रूप में कार्य कर रहा है। किसी भी लोकतंत्र में एक जिम्मेवार विपक्ष से यह उम्मीद की जाती है कि वह सरकार के कामों पर कड़ी नजर रखे तथा यदि कहीं कोई कमी हो तो उन मुद्दों को उठा कर जनता के मध्य अपने विचारों के माध्यम से अपने जनाधार को बढ़ाने का कार्य करे। किन्तु जिस प्रकार सीएए जैसे मुद्दे पर देश के विपक्षी दल बयानबाजी कर रहे हैं तथा आन्दोलनकारियों तथा देश के एक समुदाय-विशेष के मध्य झूठ बोल कर भय का वातावरण उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे हैं उसने देश में असमानता के भाव को फैलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप में पत्रकारिता समरस समाज निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। लेकिन जिस प्रकार से पत्रकारिता के क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों में परिवर्तन आए हैं उससे एक बात तो साफ निकलकर आती है कि भारत तथा विश्व के किसी भी देश में पत्रकारिता निष्पक्ष कम ही रह गयी है। हमारे समाज में कई ऐसे लोग हैं जिनका सरोकार देश व देश के समरस माहौल को बनाये रखने में योगदान करना न होकर केवल मानवीयता के नाम पर ऐसे मुद्दों की पैरवी करना रह गया है जिससे देश के अस्तित्व पर खतरा मंडराता हो। फिर चाहे वह धारा 370 हो या सीएए के नाम पर विरोध प्रदर्शन, या जातिगत भेदभाव एक वर्ग विशेष की पैरवी करने वाले ये बुद्धिजीवी व कलाकार लोग अन्य वर्गों पर हुए अत्याचारों के विषय पर जिस प्रकार खामोश हो जाते हैं वह इनके वैचारिक खोखलेपन को ही दर्शाता है। केवल विरोध के नाम पर इस कानून का विरोध करना तथा विरोध की आड़ में झूठे, काल्पनिक व भ्रामक तथ्य जनता को बताना एक चिन्तनीय विषय है, विशेष रूप से तब जब इस प्रकार का आचरण देश के समरस ढांचे के समक्ष चुनौती प्रस्तुत करे और देश विरोधी शक्तियों को बल देता हो। छेश के बुद्धिजीवियों व आम नागरिकों द्वारा देश की समरसता बनाये रखने के लिए जिम्मेवार भूमिका निभाई जानी चाहिए। इस प्रकार के विषयों पर राजनीति न करके व वैचारिक सूझ-बूझ के अभाव का बोध करवाये बिना ऐसे संवेदनशील मुद्दों पर जिम्मेदार विचार के साथ समरस समाज निर्माण में योगदान सदैव अपेक्षित है। अन्यथा शाहीन बाग जैसे गैर जिम्मेदार आन्दोलन तथा दिल्ली दंगों जैसी घटनाएं भारत की समरस छवि को धूमिल करने में एक बड़ी भूमिका निभा सकती सकती हैं जो किसी भी पक्ष के लिए हितकारी नहीं होगा। ◆◆◆

लेखिका इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व विश्व संवाद केन्द्र शिमला से जुड़ी हैं।

भारतीय संस्कृति में समरसता

... डॉ. प्रियंका वैद्य

भारतीय संस्कृति और समरसता को परिभाषित कर व्यास नदी सा स्वच्छंद और पराशर झील सा पवित्र नगर है। मंडी जिसे छोटी काशी के नाम से भी जानते हैं वह भारतीय संस्कृति और समरसता को परिभाषित कर व्यास नदी सा स्वच्छंद और पराशर झील सा पवित्र नगर है। शिव जो सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है वो व्यास नदी के वेग में भी सदियों से पंचवक्त मंदिर में विद्यमान है और सम्पूर्ण मानव जाति को अपनी ओर खींचता है। शिवलिंग तो सारी कायनात में शोभायमान है, जहां एक मनुष्य लिंग को पूजता है वहीं पुराणों में पशु-पक्षियों का भी शैव होने का उल्लेख आता है।

पंचवक्त्र में कभी भी, कोई भी प्रवेश कर सकता है, कोई भी बिना भेदभाव के आराधना कर सकता है। भारत वर्ष देवों की धरती है और शिव जिनका स्थान श्मशान है जहाँ सब साकार निराकार में मिल जाता है, वो सम्पूर्ण मानवता को जोड़ता है और शिवालय तो अस्ति को समस्ति से मिलाता है। खूबसूरत पत्थरों और नक्काशी का बेमिसाल उदाहरण है पंचवक्त्र मंदिर व्यास नदी के जल स्तर को बढ़ते घटते देखता है और कभी-कभी पूरा मंदिर व्यास नदी की तीव्र लहरों में लीन हो जाता है मानो प्रकृति शिव को जल अर्पण कर रही हो। मंदिर में पंचमुखी शिव विद्यमान है और शिव भक्त नंदी सबकी मन्नतें सुनने के लिए द्वार पर खड़ा है। मंदिर सदियों पुराना है और मंडी के राजा ने इतिहास के पन्नों पर भारतीय संस्कृति को उद्घोषित करता एक बेमिसाल नमूना बनवाया था। मंदिर में भगवान शिव के पंचवक्त्र रूप की आराधना की जाती है। इस मंदिर को भारतीय पुरातत्व विभाग ने अपने अधीन ले रखा है। मंदिर शिकारा पद्धति में बना है। शिव केपां चमुखपाँचरूपों को दर्शाते हैं-अघोर, ईशान, तत्पुरुष, वामदेव और रुद्र। अघोर जो नाश करता है, ईशान जो सब जगह विद्यमान है, तत्पुरुष उसका अहम्, वामदेव जो प्रकृति और नारी को परिभाषित करता है और रुद्र उत्पत्ति-संहार करने वाला। मंदिर सुकेती और ब्यास नदी के संगम पर स्थित है और अपनी आकर्षक सुंदरता से सभी को आकर्षित करता है। पंचवक्त्र मंदिर एक बहुत ही प्रसिद्ध पूजा स्थल है जो भगवान शिव को समर्पित है। इस मंदिर को मंदिर विशिष्ट शिखर वास्तुकला शैली में बनाया गया है जो आश्चर्य जनक लगता है।

नमामीशमीशान निर्वाण रूपं
विभुंव्यापकं ब्रह्मवेद स्वरूपम।
निजं निर्गुणंनिर्वि कल्पंनिरीहं
चिदाकाश माकाशवासं भजे।।

शिव अंत नहीं जानता क्योंकि वो अनंत है, वो लिंग, जाति, भेद, रंग से परे सारी सृष्टि को जोड़कर एक करता है। शिव सारे ब्रह्माण्ड को जोड़ता है, शिवत्व समरसता को परिभाषित कर प्रतिपुरुष, जीवन मृत्यु की लकीरों को मिटाकर अर्धनारीश्वर में सब कुछ समेटता है। सारे बंधन शरीर से जुड़े हैं और शिव कायांत से जुड़ा है, शिव विरक्ति की तहें खोलकर उन सब आत्माओं को जोड़ता है जो ब्रह्मस्वरूप और विभुमव्यापकम है, जिनका कोई रंग रूप नहीं, सभी शिवगण है और शमशान का धुआं भी जीवन की कृत्रिम लकीरों को मिटाकर सभी को शिवालय में निमंत्रण देता है। शैव मत में कोई लिंग भेद नहीं, कोई जाति भेद नहीं, शैव-दर्शन सभी भेदों से ऊपर है। स्वयं शिव जी चंद्र ज्ञान आगम में स्कंद जी को कहते है हे वत्स!

जातिवर्णादिनिषेधा:
ये सन्ति जातिभेदा स्थानै कवच्छिव योगिन:।
पश्येदखिलजाति स्थानै कामातृ सहोदरा।।
न स्त्रिभेदोनपुंभेदो जाति वर्णा श्रमदिकम।
सर्वातीत मिदं विद्धि महा शैव मतं मम।।

शिवयोगियों के लिए सब एक ही है। अत: शिवलिंग उपासक शिव भक्त समस्त जातियों में उत्पन्न प्राणियों को एक माता से उत्पन्न सहोदर भ्राता माने। कई बार पुराणों में और इतिहास साहित्य में यह भी बताया गया है कि पशु-पक्षी भी शिव लिंग पूजा करते है। यह सिद्ध है की शिव पूजा में सभी को समान अधिकार है। इसीलिए शिव महा पुराण रुद्र सहिंता प्रथम खंड दशम अध्याय में यह बात वेद व्यास जी ने स्पष्ट की है :

ये वै मानुष्यमाश्रित्य मुख्यं सन्तानता: सुखं।
तेन पूज्योमहादेव: सर्वकार्यसाधक: ।।
ब्राह्मण: क्षत्रिया रूवैश्या: शूद्राश्च
-विधिवत्क्रमात् शंकरार्चाप्रकुर्वन्तुसर्व-
कामार्थसिद्धये ।। ◆◆◆

लेखिका सोलन डिग्री कॉलेज में सहायक प्राध्यापिका हैं

मातृवन्दना के सभी पाठकों को
नववर्ष विक्रमी सम्वत् 2077
की हार्दिक शुभकामनाएं

Jagriti Teacher's Training College
(Course B.Ed & D. El. Ed.)

Affiliated to H.P. University Shimla and H.P. Board of Education Dharamshala

Address: Deodhar P.O. Talyahar, Distt. Mandi 175001 (H.P.)
Ph. : 94180-14493, 78072-55912

अस्पृश्यता के प्रति समाज का बदलता दृष्टिकोण

... राजेश वर्मा

सामाजिक समरसता एक ऐसा विषय है जिस पर बात किए बिना हम राष्ट्र निर्माण की तरफ नहीं बढ़ सकते। सामाजिक समरसता पर बात करने के साथ ही इसे ठीक ढंग से कार्यान्वित करना समाज ही नहीं अपितु राष्ट्र की भी आवश्यकता है। साधारण शब्दों में सामजिक समरसता का अर्थ है जातिगत भेदभाव एवं अस्पृश्यता रहित वह समाज जो आपसी प्रेम एवं सौहार्द के साथ मिलजुल कर रहे। पुरातन भारतीय संस्कृति में कभी भी किसी के साथ किसी भी तरह के भेदभाव स्वीकार नहीं किया गया हमारे वेदों में भी जाति या वर्ण के आधार पर किसी भेदभाव का उल्लेख नहीं है। विदेशी आक्रांताओं द्वारा ही हमारे धार्मिक ग्रन्थों में कुछ मिथ्या बातें जोड़ी गई जिससे इसमें विकृत्तियां आ गयी और समरसता का अभाव उत्पन्न होता चला गया।

जाति के आधार पर किसी व्यक्ति विशेष का अपमान करने से वह मानसिक क्षति के साथ-साथ मानसिक कुंठा का शिकार भी होता है परिणामस्वरूप वह अपनी सोच को खुद तक ही सीमित कर लेता है वह उस दायरे से बाहर निकल ही नहीं पाता और फिर वह कभी भी राष्ट्रहित में नहीं सोच पाता। सामाजिक समरसता का इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता कि आज हम अपनी छोटी-छोटी जरूरतों के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं। वह व्यक्ति कैसे अछूत हो सकता है जिसका बनाया नगाड़ा हर मंदिर में हर जाति के लोगों द्वारा बजाया जाता है। इसी तरह कोई बर्तन बनाने वाला हो या कपड़ा बुनने वाला आदि, इन सबके बिना किसी की भी जरूरतें पूरी नहीं हो सकती हम सब एक दूसरे के पूरक हैं, यहां भी सामाजिक समरसता का ही भाव है। यदि सभी अपना-अपना कार्य करना बंद कर दें तो किसी का भी जीवन संभव नहीं हो पाएगा हर एक व्यक्ति और उसके कार्य की अपनी जगह महत्ता है। यह कदापि संभव नहीं कि समाज किसी जाति, वर्ण अथवा समुदाय विशेष से ही बना है और उसी से चल भी सकता है। हिमाचल प्रदेश

के लिए तो यह बात और भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि हिमाचल प्रदेश तो बसता ही गांव में है, यहां की ज्यादातर आबादी कृषि व इससे जुड़े कार्यों पर निर्भर है। यहां के लोगों में सामाजिक समरसता की अनूठी मिसाल है क्योंकि यहां की ज्यादातर आबादी हाथ से ही अपना कुछ न कुछ कार्य करती है।

यह सब एक दूसरे पर निर्भर है कोई एक चीज के लिए तो कोई दूसरी चीज के लिए, मतलब सभी एक दूसरे से बंधे हैं सबका जीवन एक-दूसरे के सहारे चल रहा है। यहां अनाज पैदा करने वाला जमींदार खुद को सर्वगुण संपन्न समझ नहीं सकता क्योंकि उसको पता है कि जिस हल के प्रयोग से उसने अन्न पैदा किया है वह किसी कारीगर द्वारा ही बनाया हुआ है। इसी तरह कारीगर के लिए भी वह जमींदार विशेष हो जाता है जिसने अन्न पैदा किया है क्योंकि पैदा किए अन्न से उस कारीगर को भी कुछ भाग जाता है जिससे उसका व परिवार का भरण पोषण होता है। कहने का भाव है कि जिस प्रकार से शरीर का प्रत्येक अंग स्वतंत्र रूप से अस्तित्वहीन है अर्थात सभी अंग सामूहिक रूप से मिलकर ही शरीर का निर्माण करते हैं उसी प्रकार समाज में कोई भी व्यक्ति अपने आप में स्वतंत्र रूप से अस्तित्व हीन है, शरीर तब शरीर कहलाता है जब सभी अंग इसका हिस्सा बनते हैं और वह कार्य करते हैं। इसी तरह समाज में व्यक्ति के वर्ण का नहीं अपितु कर्म का महत्व है। इसी से समरसता बनती है। लेकिन आज भेदभाव, अस्पृश्यता आदि जैसी कुप्रथाओं की जड़ें समाज में इतनी सुदृढ़ हो चुकी हैं कि इनका पूर्ण रूप से उन्मूलन करना राष्ट्र के लिए निश्चित रूप से एक बहुत बड़ी चुनौती है। सामाजिक समरसता में छुआछूत कुछ वर्षों की देन नहीं बल्कि यह तो काफी पुरानी बीमारी है। इसका इलाज अकेले व्यवस्था से नहीं होगा इसके लिए हमारे समाज में हर व्यक्ति व हर वर्ग को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। ऐसा भी नहीं कि इस कार्य को करने के लिए आज ही कुछ किया जाने लगा है, इस कार्य को करने के लिए अनेक वर्षों से कई संत, ऋषि समाज-सुधारक एवं कई समाज सेवी संस्थाएं निरन्तर कार्यरत हैं। संविधान के शिल्पकार डा. अम्बेडकर ने अस्पृश्यता व भेदभाव से समाज को छुटकारा दिलाने के लिए संविधान में समानता का अधिकार दिलवाया, आज समाज में इसी के चलते समानता लाने के प्रयासों को काफी सफलता भी मिली है। बहुत सी संस्थाएं व संगठन अभी भी इस दिशा में प्रयासरत हैं जिनमें अस्पृश्यता एवं जातिगत भेदभाव के कट्टर विरोधी थे। इस बात का कोई भेद नहीं है कि उसके कार्यकर्ता की जाति क्या है। सभी मानसिक और व्यवहारिक रूप से समरसता से पूर्ण

हैं। राष्ट्र के विकास के लिए सामाजिक एकता की आवश्यकता होती है। समाज में एकता की पूर्व शर्त है सामाजिक समता, जब समता आएगी तो सामाजिक एकता अपने आप आएगी इसके लिए ही हमें प्रयत्न करना होगा। जब ग्रंथों और पुराणों में जाति व वर्ण व्यवस्था का उल्लेख ही नहीं है तो हम किन तथ्यों के आधार पर इस सामाजिक कुरीति को ढोते रहें आज हम जिन लोगों को अछूत कहते हैं वो भी हमारे क्षत्रिय भाई ही हैं। ऐसे बहुत से उदाहरण है जब इन्होंने देश के सामने अपनी वीरता के उदाहरण प्रस्तुत किए वे कालू वाल्मीकि ही थे जिन्होंने शिवाजी को औरंगजेब की जेल में बचाया, जीवा नाई ने शिवाजी की अफजल से युद्ध में जान बचायी, पुंजा भील ने महाराणा प्रताप की सहायता की, कीरत हरिजन ने महाराणा उदय सिंह को बचाया भारतीय इतिहास में सामाजिक समरसता के एक नहीं अनेकों उदाहरण हैं। हिमाचल प्रदेश को देवभूमि कहा जाता है लेकिन यहां पर देवताओं के नाम पर भी छुआ-छूत की घटनाएं यदा-कदा देखने सुनने को मिल जाती हैं। बदलते समय व शिक्षा के प्रसार से हिमाचल प्रदेश सामाजिक समरसता की तरु बढ़ता दिखाई दे रहा है। पहले पहल तो गांव में पानी भरने के लिए भी अलग-अलग बावड़ियां होती थी अलग-अलग नलों का इस्तेमाल होता था परंतु आज के दौर में ऐसा कुछ भी नजर नहीं आता आज एक ही जगह से सभी वर्गों के लोग पानी भरते हैं आज ऐसे सार्वजनिक स्थानों पर आपसी समरसता स्थापित हुई है। जिन मंदिरों के द्वार पर निर्बल वर्ग का प्रवेश निषेध है जैसी पंक्तियां लिखी होती थी वहां सरकारी व सामाजिक प्रयासों के चलते समरसता पनपी है, अब शायद कोई ही मंदिर ऐसा होगा जहां ऐसा कुछ लिखा हुआ नजर आए। वर्षों पहले जाति विशेष के लोगों को उच्च जाति के घरों में यदि जाना होता था तो उन्हें बाहर ही आंगन में धरती पर नीचे बैठना पड़ता था लेकिन आज शायद ही कोई घर ऐसा होगा जहां इन कुरीतियों को माना जाता है। प्रदेश की ज्यादातर आबादी गांवों में रहती है गांव में घरों में होने वाले किसी भी समारोह में लोग एक-दूसरे को बुला भी रहे हैं और इकठ्ठे खा भी रहे हैं। इस शुरुआत से लोगों में आपसी भाई-चारा व सौहार्द भी बढ़ा है। वैसे भी समरसता एक सामाजिक जरूरत है, अस्पृश्यता जैसी बुराई का खात्मा जागरूक समाज के द्वारा ही किया जा सकता है, तभी जाकर समाज में वास्तविक समरसता का भाव उत्पन्न होगा। लोगों को जागरूक करने के लिए उनमें प्रेम एवं अपनत्व का भाव जगाने के साथ-साथ कुंठित मनों में विषमता की भावना को दूर करने की भी आवश्यकता है। समाज के सभी वर्गों में भेदभाव की भावना दूर करने व उनके साथ परस्पर प्रेम एवं सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता है। जिस राष्ट्र का समाज संगठित होता है बाहरी शक्तियां भी उस राष्ट्र के विरुद्ध किसी षड्यंत्र में सफल नहीं हो पाती। सामाजिक समरसता का यह कार्य किसी एक व्यक्ति या संस्था का नहीं है बल्कि इसके लिए सामूहकि प्रयासों की आवश्यकता है और इसके लिए जरूरत है लोगों को परस्पर प्रेम एवं सहयोग के प्रति जागरूक करने की ताकि यह भी एक ऐसा महाकुंभ बन सके जिसमें जातिगत कोई भेदभाव न हो और सभी एक साथ व एक भाव से पवित्र स्नान करें तभी हम विश्व गुरु बनने की राह पर अग्रसर हो सकते हैं।

◆◆◆ **लेखक स्तम्भकार व राजकीय सेवा में हैं।**

मातृवन्दना के सभी पाठकों को
नववर्ष विक्रमी सम्वत् 2077
की हार्दिक शुभकामनाएं

Shammi Jewellers

Mehatpur, Distt. Una
Himachal Pradesh

धर्म के साए से निकलती संकीर्ण मानसिकता

... डॉ. शशि पूनम

कुछ साल पहले मेरी छोटी सी बेटी ने जब यह खबर बार-बार टेलीविजन पर सुनी कि कश्मीर में कुछ लड़कियों को म्यूजिक नहीं बजाने दिया जा रहा है तो उसने मुझसे एक प्रश्न किया कि मम्मी, उन लड़कियों को बैंड बजाने को कौन मना कर रहा है और क्यों मना कर रहा है। उसने फिर एक सवाल कर दिया कि मैं भी डांस करती हूं तो क्या मुझे भी कोई डांस करने से रोकेगा, क्या मैं भी बड़ी होकर डांस नहीं कर पाऊंगी। मैं इन सवालों का जवाब मन ही मन सोचती रही थी। आप सोच सकते हैं कि मेरा जवाब क्या हो सकता था। शायद मुझे यह उत्तर देना चाहिए था कि बेटी तुम चिंता मत करो तुम हिंदू हो और अगर तुम मुस्लिम होती और जम्मू और कश्मीर जैसे राज्य में होती तो शायद तुम्हें डांस करने की समस्या होती। अब मैंने यह भी सोचा होगाा कि मैं भारत में हिंदू होने पर यह जवाब दे पाई, और अगर मैं मुस्लिम होती तो फिर अपनी बेटी को क्या जवाब देती। क्या फिर मेरी बेटी का यह जवाब होता कि शुक्र है वह मुस्लिम नहीं है वरना उसे अपनी हर छोटी या बड़ी इच्छा को दफन करना होता। समाज में महिलाओं के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को उजागर करते हुए अब कश्मीर में मुस्लिम लड़कियों के बैंड पर कुछ कट्टर पंथियों की भारी नाराज़गी और बाद में एक और अधिक कट्टर ग्रैंड मुफ्ती द्वारा फतवा जारी किया गया था। मुस्लिम समाज में व्याप्त इस दवाब के कारण इन लड़कियों को बैंड को छोड़ना पड़ा था। इससे एक न्यायिक सहिष्णु, परिपक्व समाज बनाने की हमारी कोशिश धरी की धरी रह गई है। धर्म के नाम पर जारी फतवे वाले यह नहीं सोचते कि इससे देश व राज्य की छवि मुगलकालीन इतिहास की ओर ले जाएगी। हमें ऐसे समाज का निर्माण करना होगा जिसमें हम अपने बच्चों को धर्म की परिभाषा समझा सके। हमें हर फतवे का विरोध करने में देर नहीं करनी होगी। राज्य और देश में लोकतांत्रिक मुल्यों का चीर हरण न हो गया और हम लड़कियों के समर्थन में ढंग से आगे आएं तो हमारी नैतिक छवि का बहुत अधिक प्रभाव समाज में पड़ेगा। समाज से सौहार्द बनाकर हम हर मसले पर एक अच्छी बहस करवा सकते हैं। संगीत की परंपरा दिग्गज मुस्लिम गायकों-संगीतकारों की वजह से भी इतनी समृद्ध है, वे यह बात उन मुफ्तियों को समझा सकते थे। विश्व में पाकिस्तान और सऊदी अरब के अलावा तालिबान की पाबंदियों से अफगानिस्तान में भी लड़कियों का रॉक बैंड है तो फिर कश्मीर में क्या तकलीफ है। बैंड की लड़कियों ने किसी मजहब को अपमानित करने की कोशिश तो नहीं की, बस उन्होंने मुस्लिम होने के बाद रॉक बैंड बनाने की कोशिश की। स्त्री मुक्ति के लिए इस राज्य में रॉक बैंड को एक प्रतीक के रूप में सहेज कर रखने की जरूरत थी। लेकिन शायद यह राज्य नारी मुक्ति ही नहीं चाहता हैं यह फिर धर्म का कानून ही सर्वोपरि है। जिन्होंने बे-बजह फतवा जारी करके उन मासूम कला की पुजारिन लड़कियों की इच्छाओं का दमन किया। मुस्लिम भावनाओं के कारण बैन लगा दिया गया और अब इन छोटी लड़कियों पर फतवा। क्या यही है संविधान का पालन। क्या हम धार्मिक गुलामी की ओर जा रहे हैं। क्या हम धर्म विशेष की मानसिकता का खमियाजा भारत में रह कर भुगत रहे हैं क्या भारत सब का नहीं है क्या यह सिर्फ अल्पसंख्यकों का है जो अपनी दकियानूसी सोच के कारण इसे पीछे मुगलकालीन समय में ले जाना चाहते हैं। ऐसा भी नहीं है कि बहुसंख्यकों के कारण समस्याएं नहीं हैं। यहां खास पंचायतें भी हैं जहां मान्यताओं के कारण मौत की सज़ा भी दे दी जाती है। क्या यह सब धर्म के कारण हो रहा है या फिर धर्म के रखवाले लोगों की मानसिकता के कारण। क्या भारत में अब हर कोई धर्म की आड़ में अपनी मानसिकता का प्रदर्शन करके भारत के सामाजिक माहौल में परिवर्तन लाने की कोशिश करेगा और बुद्धिजीवी व लेखक वर्ग विकास व तरक्की की बातें छोड़कर इस संकीर्ण मानसिकता पर लिखना व बहस शुरू कर देगा। अगर भारत में एक संविधान है तो भारत में रहने वाले हर धर्म के व्यक्ति को उस संविधान का पालन करना होगा न कि अपने धर्म के नाम पर मनमर्जी से फतवे जारी करके। अगर ऐसा होता रहा तो फिर समाज नास्तिक बनने के बारे में विचार शुरू कर देगा। ◆◆◆ **लेखिका कैरियर प्वाइंट यूनिवर्सिटी में सहायक प्रोफेसर हैं।**

समतामूलक प्राचीन भारतीय चिंतन

... डा0 अर्चना गुलेरिया।

हमें न तो अस्पृश्यता माननी है और न उसका पालन करना है।'' इन शब्दों में छिपी व्यवस्था परिमार्जन की चमक किसी को भी रोमांचित करने के लिए काफी है, लेकिन जब यह पता चलता है कि यह बात एक महापुरूष ने आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व अपने अनुयायियों को शैशवकाल में तब कही थी जब ऐसी कल्पना को भी समाज में स्थान मिलना मुश्किल था, तो सिर श्रद्धा से झुक जाते हैं। हिन्दु समाज की फांकों को दूर करते हुए देश को सबल, सक्षम, बनाने की जो दिशा ने तब दिखाई उस राह पर बढ़ते-बढ़ते भारत आज व्यापक सामाजिक स्वीकार्यता के साथ विश्व का सबसे बड़ा और प्रयोग धर्मी गणतंत्र बन गया है। प्राचीन भारतीय हिन्दु चिन्तन के समता मूलक होने से उसमें जातीय विभेद, उंच-नीच व अस्पृश्यता आदि का कोई स्थान नहीं था। हमारे प्राचीन शास्त्रों में प्राणी मात्र के प्रति समतामूलक दृष्टि का निर्देश है। यथा गीता में कहा है- मुझ पर परमात्मा को वे ही प्राप्त करते हैं जो समस्त जीवों के हित में संलग्न रहते हैं। 'ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रता:।'

वस्तुत: अरबों के आक्रमण के बाद मुगल शासन व अंग्रेजों के औपनिवेशिक राज्य के अधीन देश में फैली, उंच-नीच भेदभाव व अस्पृश्यता का पारस्परिक हिन्दू जीवन पद्धति में कोई स्थान नहीं था। अरब आक्रान्ताओं द्वारा बड़ी संख्या में ऐसे हिन्दू परिवारों को इस्लाम कबूलने को बाध्य करने हेतु उन पर असध्य 'जजिया' नामक कर लगाने, दासों से अधिक यंत्रणापूर्ण जीवन जीने को बाध्य करने और मैला उठाने सहित सभी प्रकार की अवमानना व अपमानजनक कार्य थोपे गए। मुगलों के काल में उसमें वृद्धि हुई। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में मात्र में एक ही परमात्मा को देखना और कष्ट में पड़े प्राणियों को साक्षात् परमात्मा के रूप में मानकर उनकी सब प्रकार से सेवा करना सबसे बड़ा धर्म बनवाया गया है। अवर्ण-सवर्ण में भेद की हेयता दर्शाने का विचार अभारतीय है।

हिमाचल प्रदेश देवों की भूमि मानी गई है। जाति व जातिगत भेदभाव हमारे समाज में भी व्याप्त थे, लेकिन विगत् कुछ वर्षों में काफी बदलाव आया है। शहरी क्षेत्रों में तो छूआछूत, अस्पृश्यता लगभग समाप्त ही हो चुकी है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी आज ऐसी स्थिति आ गई है कि नई पीढ़ी पुराने बन्धनों को तोड़कर समरसता की तरफ बढ़ रही है। एक देव-स्थान, एक जल-स्थान और एक शमशान की धारणा को गावों में भी स्थान मिलने लगा है। सह-भोज में सभी जातियों के लोगों का एक साथ भोजन करना आम बात हो गई है।

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख मन्दिरों में सभी वर्गों की आवाजाही आम बात हो गई है। मन्दिरों में भण्डारे का आयोजन करना और सभी जातियों के लोगों का एक साथ अन्न ग्रहण करना जैसी व्यवस्था सर्वमान्य है। ये सभी लक्षण समाज में समरसता को बढ़ावा देते हैं। लेकिन अभी भी ये प्रश्न उठता है कि 'रोटी-बेटी' दोनों शब्द व्यवहार में कैसे लाए जा सकते हैं! पुराने जमाने में रोटी-व्यवहार भी जाति के अन्तर्गत चलता था लेकिन आज रोटी-व्यवहार सर्वत्र हो चुका है। रोटी-व्यवहार के बंधन खुल चुके हैं। इसका श्रेय हम आज की शिक्षित पीढ़ी को दिया जा सकता है। श्रेय किसी का भी हो लेकिन अब रोटी-व्यवहार सामान्य हुआ है, उसके बन्धन खुल चुके हैं। इसलिए जातिभेद की तीव्रता कम होने में बड़ी मदद मिली है। कुछ मात्र में अब 'बेटी व्यवहार' का प्रचलन चला है, यह भी अनुभव किया जा रहा है। खुलकर ऐसा कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए कि रोटी-व्यवहार के साथ-साथ अब बेटी व्यवहार में भी बिना संकोच हम सहभागी हों। जिस प्रकार रोटी-व्यवहार के बन्धन समाप्त हुए उसी प्रकार जातिभेद की तीव्रता समाप्त होने के लिए बेटी-व्यवहार के बंधन भी समाप्त होने चाहिए। इसमें एक सावधानी अवश्य बरतनी होगी कि रोटी-व्यवहार के बंधन जितनी सहजता से खुलते हैं,

बेटी-व्यवहार ऐसा सहज नहीं होगा क्योंकि विवाह के लिए परस्पर अनुरूप जोड़ी देखनी होगी। शिक्षा, उपार्जन, रहन-सहन का स्तर इसमें समानता होने पर ही उस स्तर पर विवाह होगा। आज भी अपने परिचितों में जो अंतरजातीय विवाह हो रहे हैं वह साधारण तौर पर इसी स्तर पर हो रहे हैं। जिस मात्र में लोग घुल-मिल कर बसेंगे उसी मात्र में, जाति के आधार पर बस्तियां समाप्त होंगी, तब इस प्रकार के विवाहों का प्रचलन बढ़ेगा। जैसे कर्मचारियों की कॉलोनी, बैंक कर्मचारियों की, रेल कर्मचारियों, अध्यापकों की कॉलोनी बसाने से भी जातिगत भेद समाप्त हो सकता है।

बेटी व्यवहार अभी भी एक गंभीर विषय है। इसके लिए संयम आवश्यक है, धीरज आवश्यक है। अपनी क्षमतानुसार सभी को इस प्रयास में हाथ बंटाकर सामाजिक अभिसरण कैसे होगा, इसकी चिन्ता करनी चाहिए। अस्पृश्यता एक दुखद समस्या है, कलंक है। वह जड़मूल से नष्ट होनी चाहिए, इसे लेकर किसी के भी मन में संदेह नहीं है। ◆◆◆ **लेखिका हिन्दी की प्रवक्ता हैं।**

हिमाचल की हेला या बुआरा प्रथा

... रवीन्द्र रणदेव

एक युग था जब हिमाचल के गांवों में सारा काम काज एक इकाई के अधीन होता था। गांव का हर व्यक्ति एक दूसरे से जुड़ा रहता था। उन सब में आपसी सहयोग की भावना होती थी। यहां तक कि कोई अपाहिज, बूढ़ा बिना कमाई के नहीं रह पाता था। यह ठीक है कि अपाहिज होने के नाते कोई व्यक्ति अपनी खेती-बाड़ी का काम नहीं कर सकता, किन्तु यदि उस गांव का सहयोग हो, तो उस का कोई काम रुक नहीं सकता था। हिमाचल के पहाड़ी गांवों में सहयोग ऐसी शक्ति है जिसके द्वारा यहां के निवासी बड़ी समस्या हल कर लेते हैं और बड़ी से बड़ी कठिनाई पार कर लेते हैं। गांव का नियम था कि किसी भी बड़े काम में, चाहे वह किसी भी जाति, वर्ग या दर्जे के का हो, गांव के हर घर से एक व्यक्ति उस काम में सहयोग जरूर देगा। इस कार्य को वहां के लोग 'हेला या बुआरा' प्रथा कहते हैं। ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में 'हेला' या 'बुआरा' प्रथा का बहुत भारी सहयोग है। पहाड़ी गांव में हर काम के लिए बहुत अधिक श्रम की आवश्यकता होती है। बहुत से कार्य ऐसे है जिन में एक आदमी से कुछ काम नहीं हो पाता। जैसे, धान रोपना, खेतों में खाद फेंकना, शादी-विवाह का प्रबन्ध करना, खेतों में मेंड बनाना आदि। इन कामों में कम-से-कम समय तथा ज्यादा-से-ज्यादा श्रम की आवश्यकता होती है।

वर्ष में दो बार खेती-बाड़ी के समय पर ऐसे बहुत से अवसर आते हैं जब कि गांव के हर घर को 'हेला' या 'बुआरा' से अपना काम पूरा कराना पड़ता है। ऐसे समय या अवसरों पर गांव के हर घर में सन्देश भेज कर बुलावा भेजा जाता है कि फलां समय पर अमुक दिन अमुक कार्य के लिए आ जाएं। इस बुलावे के अनुसार हर घर से एक व्यक्ति बुलावे वाले घर पर जाता है। ऐसे समय पर बुलावा भेजने वाला घर उन लोगों को दोपहर तथा शाम का भोजन देता है। इसी प्रकार जितने दिन का यह काम होगा, सब मिल कर करेंगे। यह कार्यक्रम हर एक घर के साथ चलेगा। इस से सारे गांव का काम भी समय पर होगा और किसी व्यक्ति को यह अनुभव भी नहीं होगा कि 'मैं' पीछे रह गया हूं। वैसे तो अब भी 'हेला' या 'बुआरा' हिमाचल में कहीं-कहीं प्रचलित है किन्तु इसका लोप होना हमें आहिस्ता-आहिस्ता दिखाई दे रहा है।

प्रदेश में आधुनिकता का प्रसार होने के साथ-साथ नई पीढ़ी में सहयोग की भावना का न होना इसका मख्य कारण है,

क्योंकि इस प्रथा का नियम यह रहा है कि जिस घर से कोई व्यक्ति हेले में नहीं आएगा उस घर में हेले का बुलावा पाने पर भी कोई व्यक्ति वहां नहीं जाएगा। जैसे-जैसे लोगों ने 'हेले' या 'बुआरे' पर जाना छोड़ दिया वैसे-वैसे इस प्रथा का लोप होता चला गया। आज सहकारी कृषि को काफी प्राथमिकता दी जाती है। इसका प्रचार-प्रसार किया जाता है। इसे गांव की अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए मूल मंत्र माना जा रहा है किन्तु आपसी सहयोग की भावना न होने के कारण इसका परिणाम भी वही होने का डर है जो 'हेले' या 'बुआरा' प्रथा का होता जा रहा है। आज के कृषि वैज्ञानिक मानने लग गए हैं कि सहकारिता द्वारा उपज बढ़ाई जा सकती है और गांव का आर्थिक स्तर भी ऊंचा उठाया जा सकता है। ऐसे में यह अधिक अच्छा होगा कि यदि प्रदेश में 'हेले' या 'बुआरे' की प्रथा को सार्वप्रादेशिक रूप में ले लिया जाए क्योंकि इस प्रथा के साथ यहां के लोगों का सम्बन्ध रहा है और वे इस प्रथा के हर पहलू को समझते हैं। ऐसा करने पर इस लुप्त होती जा रही प्रथा को पुनः जीवन मिल सकता है।

आधुनिक सहकारी कृषि में सब से बड़ी बात जो यहां के लोगों को अखरती है, वह है-कृषि योग्य भूमि का सहकारी नाम की एक संस्था का स्वामित्त्व होना, जब कि 'हेला या 'बुआरा (प्रथा में कृषि योग्य भूमि या उस के स्वामित्व में कोई अन्तर नहीं आता। सहकारी कृषि में पहले उपज एक स्थान पर इकठ्ठी की जाती है और फिर हिसाब से हर परिवार को बंटती है। लेकिन इस प्रथा में उपज को बांटने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता, वहां तो श्रम का बदला श्रम से दिया जाता है। हिमाचल सरकार प्राचीन परम्पराओं को पुनर्स्थापित करने के लिए अनेक प्रकार के पग उठा रही है। आए दिन प्रदेश की संस्कृति तथा परम्पराओं को न छोड़ने का स्वस्थ तथा सबल आग्रह किया जाता है, अतः इस बात की आवश्यकता है कि इस प्रथा का पुनरुद्धार किया जाए। आज के युग में जब राष्ट्रीय नेताओं द्वारा राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की आधार-शिला ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था मानी जाती है और गांवों के विकास की ओर ज्यादा ध्यान दिया जाता है, ऐसी परिस्थितियों में हिमाचल जैसे पहाड़ी प्रदेश में इस प्रथा का फिर से बोल-बाला हो सकता है। वैसे, इस प्रथा का लोप नहीं हुआ है, केवल क्षति ही हुई है। गांवों की अर्थ व्यवस्था तथा विकास में पंचायती राज संस्थानों का सीधा हाथ है। यदि पंचायतें अपने अधिकार-क्षेत्र के गांवों में इस प्रथा को पुनः स्थापित करने पर जोर दें तो पहाड़ी ग्रामीण अर्थ व्यवस्था में नई क्रान्ति आ सकती है। ◆◆◆ **लेखक हिमाचल प्रदेश के जिला मंडी की है।**

Doon Valley Public School

A Prestigious CBSE Co-Educational Senior Secondary Day School

The School with a Vision that :

- ☞ Provides all facilities for development of Holistic Personality
- ☞ Facility student to realize their optimum potential
- ☞ Equips student to meet the challenges of life
- ☞ Builds strong value system alongwith life-skills
- ☞ Helps students to excel in academics, sports and co-scholastic domains
- ☞ Prepares student for the journey of life

Peersthan, Nalagarh, Distt. Solan, Himachal Pradesh 174 101

Ph. No. 01795-654088/221388 | E-mail : dvps@dvpsnalagarh.com | Visit us : www.dvpsnalagarh.com

अधिकार और कर्तव्य

... केवल सिंह भारती

अपने देश से प्रेम करना देशवासी का एक स्वाभाविक धर्म है। यह अच्छा भी लगता है। होना भी यही चाहिए। जिस देश के लोग अपने देश से प्रेम करते हैं वे निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होते जाते हैं। जिस देश के लोग अपने धर्म से प्रेम करते हैं उनका धर्म विकसित होने लगता है।

हमारा देश एक धर्मनिरपेक्ष देश है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भारत में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि धर्मो के लोग रहते हैं। यही नहीं भारत में भाषाई, खान-पान, जातीय पहनावा भौगोलिकता और पूजा पद्धति के आधार पर भी बहुत भिन्नता है। इसी कारण संविधान ने सबको समान अधिकार और कर्तव्य दिये हैं ताकि सभी अपने-अपने धर्म, मान्यता व आस्था के अनुसार जीवन यापन कर सकें। यह हमारे संविधान की एक सुंदर बात है। यही अनेकता में एकता का श्रेष्ठ उदाहरण है। इसके लिए भारत को जाना भी जाता है। अपने भारत दौरे के दौरान 24, 25 फरवरी 2020 में अमरीकी राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा- 'अन्य देशों की अपेक्षा भारत में धार्मिक स्वतंत्रता अधिक है।'

हमारा देश संवैधानिक व्यवस्था को महत्व देता है। देना भी चाहिए। हम यह भी जानते हैं कि हमारा संविधान लचीला है। ऐसे में जटिलता तब बढ़ जाती हैं जब संवैधानिक लोच का लाभ लेकर कुछ लोग लोचा करने लग जाते हैं। हद तो तब हो जाती है जब संवैधानिक अधिकार के लिए लोग उतारू हो जाते हैं और कर्तव्य के लिए आंखें मूंद लेते हैं। उदाहरण के लिए शाहीन बाग में अपनी मांग मनवाने के लिए लोगों ने सार्वजनिक रास्ता रोक लिया। लोग चिल्ला-चिल्ला कर बोले कि उन्हें अड़तालीस दिन अपने अधिकार की लड़ाई लड़ते हो गए। दूसरी तरफ रास्ता रोक लेने के कारण इतने ही दिन कर्तव्य की अवहेलना करते भी हो गए। परंतु यह बात उनकी समझ से परे है।

न्यूज चैनलों में देश के प्रधानमंत्री को भी लोग निम्न ढंग से संबोधित करते नजर आते हैं। देश और प्रधानमंत्री के विरुद्ध अवांछित बातें बोलते चेहरे दिखाने वाले चैनलों पर अंकुश क्यों नहीं लगते। देश के विरुद्ध क्रिया-कलाप करने वालों के विरुद्ध गोपनीय कार्यवाही क्यों नहीं होती, भगवान जाने।

देश के सर्वोच्च नेताओं, पदाधिकारियों ने देश निर्माण का कार्यभार संभालना होता है। इसके लिए उन्हें मानसिक शांति, सक्रियता और सुदृढ़ता की आवश्यकता होती है। परंतु कुछ तुच्छ प्रवृत्ति के लोग बड़े दायित्ववान लोगों को विचलित करने के प्रयास में लगे होते हैं। ये वो लोग हैं जो जात पात फैलाते हैं, धर्मांधता फैलाते हैं, अनाचार फैलाते हैं और देश-विरोधी मानसिकता को पालते पोस्ते हैं। उदाहरण के लिए निर्भया कुकृत्य को कई साल हो गए। अभियुक्त अभी तक जिंदा हैं। तभी तो आए दिन जघन्य अपराध होते जाते हैं।

देश में विदेशियों का घुस जाना, विदेशी झंडे फहराए जाना, देश विरोध के नारे लगाए जाना और देश में आतंक व अनाचार को प्रश्रय दिए जाने को एक देशभक्त कभी स्वीकार नहीं करेगा। दूसरी तरफ हो सकता है कि कोई शख्स उपर्युक्त बातों पर चटखारे ले रहा हो। जो व्यक्ति ऐसा करता है या करने देता है तो यह बात उसके देश विरोधी होने की पुष्टि करती है।

देश की मिट्टी का अन्न खाकर यदि कोई व्यक्ति कृतज्ञता प्रकट करने की अपेक्षा अपने निजी स्वार्थ के लिए देश की उन्नति की राह में रोड़ा बनने का प्रयास करता है तो यह उसकी संकीर्णता का उदाहरण कहलाता है। उसकी यह संकीर्णता देश व देशवासियों के लिए घातक सिद्ध होती है।

इस बात को हम शाहीन बाग से जोड़कर देखें तो संभावना है कि आने वाले समय में शाहीन बाग के सहभागी रहे लोग निमोनिया आदि का शिकार हो जाएं। उस समय अस्तित्व की लड़ाई बनाकर किसी की मृत्यु का कारण बनने वाला भ्रमित और लोगों को भ्रमित करने में व्यस्त हो जाएगा तथा संविधान के अधिकारों को लपेटते हुए कर्तव्यों से कोसों दूर निकलता जाएगा। ◆◆◆ **लेखक शिक्षक व साहित्यकार हैं।**

एक राष्ट्र एक संस्कृति एक रक्त एक समाज

... प्रदीप कुमार

जैसा कि हमारी मान्यता है तथा विश्व भी मानता है कि हम कभी विश्वगुरू रहे यह हमारे पूर्वजों के संस्कार एवम् समझदारी थी। बैसे ही हमारा भविष्य का भारत कैसा होगा यह हम सब यानि हिन्दू समाज पर निर्भर करता है। जब तक सम्पूर्ण समाज बिना किसी भेदभाव संगठित रहा हम हर क्षेत्र में अग्रणी रहे, भारत बुलंदियों पर रहा। किन्त वर्तमान में हमारी क्या स्थिति है इस का भी चिन्तन कर के यह तय करना है कि हमारा भविष्य का भारत कैसा होगा।

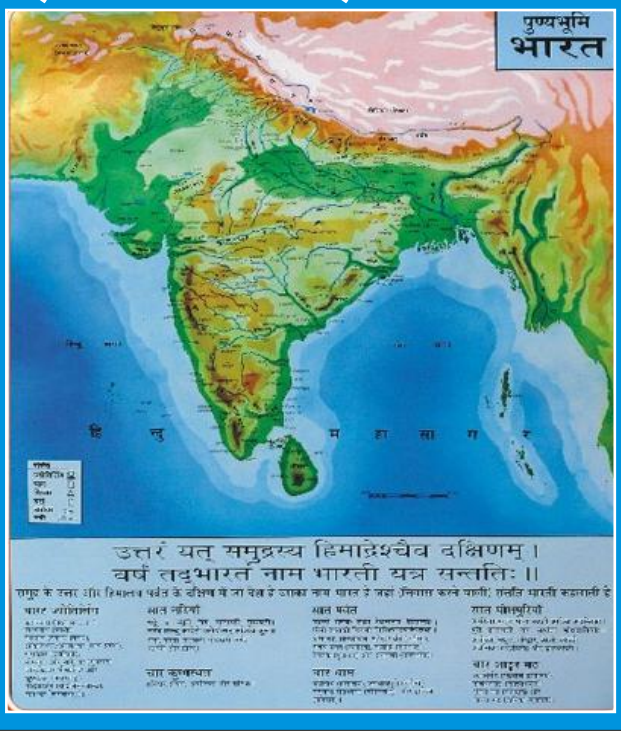

हमारे समाज में भाषा के आधार पर तथा क्षेत्र के आधार पर उतना भेदभाव नहीं हुआ या हो रहा जितना कि जातिप्रथा के कारण हुआ या हो रहा है। हम मनुष्य होकर भी एक दूसरे से जाति-उपजाति के आधार पर छूआछूत, ऊंच-नीच जैसी कुरीतियों से ग्रस्त हैं। हिन्दुत्व का सिद्धांत विश्व बन्धुत्व है। अत:भाई चारे में तो भेदभाव का कोई स्थान नहीं होता। हम तो वसुधैव कटुम्बकम् को मानते हैं। अत: कटुम्ब मे तो कोई छूआछूत नहीं होती फिर अपने समाज मे कब से ओर कैसे अपने भाईयों को ही अछूत मानने शुरू कर दिया। इस विकृत्ति को तो हमें ही मिटाना होगा।

हम तो ऋषियों की सन्तान हैं तथा हर वर्ष करोड़ों की संख्या में हम आस्था की डुबकी लगाने बिना किसी भेदभाव से कुम्भ में एकत्रित होते हैं। गंगा माई या तो किसी की जाति नहीं पूछती। कुम्भ तो सदियों से समस्त हिन्दू समाज मानवता का मिलन स्थल चला आ रहा है। हमारे सभी धार्मिक ग्रन्थ जैसे वेद, पुराण, रामायण, श्री गीता आदि में तो छूआछूत का कहीं कोई उल्लेख नही है हम तो सभी के सुख की कामना करते हैं। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' अत: स्वाभाविक है कि सभी के सुख की भी कामना करते हैं तो फिर हम आपस मे एक दूसरे को अछूत, नीचा आदि व्यवहार से कैसे दुखी करने लग पड़े। हिन्दू समाज जब हजारों वर्षों से पेड़ पौधों की, नदियों पहाड़ों की, जल अग्नि यानि सृष्टि के हर उस जड़-चेतन की पूजा करते हैं जो हमारे जीवन मे सहायक है। सांसारिक जीवन मे तो मनुष्य को अपने जीवन की सभी जरूरतों की पूर्ति हेतु भी एक दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है अत: हम सभी का भी एक दूसरे का वैसा ही आदर-सम्मान करते रहे हैं। हम दूसरों के बनाई हुई चीजों का तो प्रयोग निरन्तर करते आ रहे हैं किन्तु उन को बनाने वाले को कब अछूत मानने लग पड़े इसका तो हमें आत्म अवलोकन करना ही चाहिए। सदियों से हमारे अपने आयोजन तथा पूजा-पाठ के बाद कथा वाचक, पुरोहित, ब्राह्मण, संत इत्यादि हम सभी से ऐसे उद्घोष लगवाते हैं जैसे धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो इत्यादि। किंतु क्या वे स्वयं इसका आचरण करते हैं? अब भविष्य मे हमें ऐसे उद्घोषों को अपने व्यवहारिक जीवन में भी लाना होगा तभी ऐसे उदघोष सार्थक भी होंगे तथा अपना समाज भी समरस होगा ओर भविष्य का भारत भी विश्व बुलंदियों को छुएगा। हमें अब गम्भीरता से विचार करना चाहिए कि आपस में ऐसे भेदभाव व विषमताओं के कारण हमारे समाज का कितना विघटन हुआ तथा समाज मे कितनी दुर्बलता आई। जो आज भी इस जाति व्यवस्था में अस्पृष्यता को मानते हैं उनके हृदय में परिवर्तन लाना होगा, उनसे सकारात्मक विचार-विमर्श करना होगा। हम सभी को निम्नलिखित मन्त्र का प्रतिदिन जाप करना होगा।

'हिन्दव: सहोदरा: सर्वे, न हिन्दू पतितो भवेत। मम दीक्षा हिन्दू रक्षा, मम् मन्त्र समानता।' यानि हम सब हिन्दू भारत माता की सन्तान हैं। हिन्दू कभी भी पतित नहीं होता। मैंने हिन्दू धर्म की रक्षा की दीक्षा ली है और समरसता मेरा मन्त्र है। अस्पृश्यता यह सवर्णों के मन में समाया हुआ संकुचित भाव है।

हम सभी हिन्दू समाज के अंश हैं, एक ही मातृभूमि के पुत्र हैं। अत: आपस मे हम भाई-भाई हैं। हम सभी ऋषियों की सन्तान हैं यानि हम सभी हिन्दू संस्कृति के वंशज हैं इसलिए भी हमें हिन्दुत्व का भाव जाग्रत कर अस्पृश्यता के दंश को समाप्त करना है। समाज सभी के सहयोग से चलता है, मनुष्य अकेले अपनी सभी जरूरतें पूरी नहीं कर सकता। प्रतिदिन की जरूरतों की पूर्ति हेतु प्रकृत्ति के साथ-साथ अपने समाज का भी योगदान चाहिए। उसे भोजन, कपड़ा, मकान इत्यादि सभी आवश्यक जरूरतों हेतु समाज के विभिन्न वर्गों पर निर्भर होना पड़ता है। अत: हमें सभी के प्रति आभारी होना चाहिए तभी हम इस भेदभाव, छूआछूत जैसी कुरीति को दूर कर सकते हैं।

◆◆◆ **लेखक राजकीय सेवा से निवृत्त व सम्प्रति प्रदेश के समरसता संयोजक हैं।**

सामाजिक समरसता
राष्ट्र की प्रगति का आधार

वरूण कुमार

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने वाला हर प्राणी किसी न किसी प्रकार से दूसरे पर निर्भर रहता है। आत्मनिर्भरता अपने कर्म पर तो निर्भर कर सकती है किंतु समाज में रहते हुए एकांत को शत-प्रतिशत अपने जीवन में ढाल पाना संभव नहीं। विगत कई वर्षों से भारतीय समाज की प्रथा रही है कि इसमें चार तरह के आश्रम बनाए गए हैं। इन आश्रमों में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम शामिल हैं। कोई भी व्यक्ति अपनी शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात विवाह बंधन को स्वीकार करता है। विवाह के बाद परिवार में वृद्धि और कर्तव्य का निर्वाह। विवाह से पूर्व भी उसके लिए अपने माता-पिता के प्रति कर्तव्य-पालन की स्थिति रहती है क्योंकि माता-पिता ही जन्म से लेकर शिक्षा समाप्त करने तक उसकी जिम्मेदारी उठाते हैं। पिछले कुछ वर्षों से इस स्थिति में परिवर्तन देखा गया है। पहले संयुक्त परिवार प्रचलन में थे, जिसका एक कारण था, समाज में रहने वाले लोगों की सीमित आवश्यकताओं का होना। धीरे-धीरे वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति ने मनुष्य की आवश्यकताओं को और अधिक बढ़ावा देना शुरू किया। भौतिकवादी दौर में भागम-भाग वाली स्थिति उत्पन्न होने लगी, व्यापारिक प्रतिष्ठानों, उद्योगों में तेज वृद्धि दर्ज की गई, जिसके लिए श्रम की आवश्यकता थी। ऐसे समय सुदूर क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी बढ़े जिनमें कर्मचारियों, श्रमिकों की आवश्यकता बढ़ने लगी। जब रुपया-पैसा एक दिक्कत बनने लगा, लोग संयुक्त परिवार छोड़ने पर मजबूर होने लगे। पहले विवाह आदि कार्यक्रम कई दिनों तक लगातार चलते थे, वहीं अब एक भी दिन निकाल पाना मुश्किल हो जाता है। यहीं से सामाजिक समरसता का अभाव नजर आने लगा। प्रश्न यह उठता है क्या सामाजिक समरसता से इतर जो स्थिति वर्तमान परिवेश में बनी हुई है, उसमें परिवर्तन की लहर लाई जा सकती है, यदि हां, तो किस प्रकार से ऐसा संभव हो पाएगा।

यहां परिवार के माध्यम से समरसता को परिभाषित करने का प्रयास किया गया है क्योंकि परिवार किसी समाज का महत्वपूर्ण अंग है। एक परिवार में रहकर मनुष्य सामाजिक समरसता के आधार को भली-भांति समझ सकता है। यहीं से उसे समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व समझने की प्रेरणा प्राप्त होती है। भगवान श्री राम का जीवन आदर्श किसी भी समाज को समरसता का अर्थ समझने में सहायक सिद्ध होता है। समरसता की शुरुआत स्वयं से की जानी चाहिए, तभी व्यक्तिगत अथवा परिवार को लेकर इस पर मंथन करना जरूरी हो जाता है। समरसता एक प्रकार से समानता का ही पर्याय है और भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष राज्य में सामाजिक समानता का अधिकार हर किसी को प्राप्त है।

परिवार के माध्यम से समरसता का उदाहरण केवल एक बहुत ही छोटे क्षेत्र तक सीमित है। यह केवल एक आधार है, जोकि व्यक्ति में आपसी तालमेल, सहयोग, मिल-बांट कर भोजन ग्रहण करना, मुश्किल घड़ी में एक दूसरे का साथ देना इत्यादि गुणों को विकसित करने में सहायक होता है। जिसे मुख्य विषय अथवा कहा जा सकता है कि एक धारा, जिस पर मंथन करने की आवश्यकता है, वह एक संप्रभुत्ता संपन्न, एकीकृत राष्ट्र की उन्नति हेतु सामाजिक समरसता के भाव को लेकर है। एक गीत के बोल-'एक पवन एक ही पानी, एक ज्योति संसारा, एक ही सृजन हारा' हमारे राष्ट्र में एकता एवं अखंडता के भाव को दर्शाते हैं। यह ठीक उसी प्रकार है, जैसे धारा का जल सूर्य देव के ताप से वाष्पीकृत होकर, फिर गगन में जाकर बादलों का रूप लेता है और वही मेघ संघनित होकर वर्षा जल के रूप में धरती पर वापिस लौट आता है। यह जल की संपूर्णता है और इसी प्रकार से इक दूजे के सुर से सुर, ताल से ताल मिलाकर जीवन की संपूर्णता, एक सुंदरता को प्राप्त किया जा सकता है। 'मिले सुर मेरा तुम्हारा, तो सुर बने हमारा', इसी राष्ट्रीय एकता और अखंडता के भाव को प्रकट करता है।

समाज में बहुत से वर्ग हैं, चाहे कर्म के आधार पर या फिर जन्म से किंतु सामाजिक समरसता का भाव इन सभी वर्गों को मिलाकर एक राष्ट्र का रूप देता है। पहले पहल सामाजिक समरसता के मार्ग में कई बाधाएं आईं। अस्पृश्यता, जातिगत भेदभाव, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लोगों के बीच आचार-विचार का भेद इत्यादि सामाजिक बुराईयों के चंगुल में समाज फंसा हुआ था। समय के साथ-साथ समाज में परिवर्तन की धारा मुखर हुई और नवजागरण का उदय हुआ। ब्रह्म समाज जैसी संस्थाओं ने सामाजिक बुराईयों पर चोट की, जिसका प्रभाव धीरे-धीरे सारे देश पर पड़ा। वर्तमान में परिस्थितियां बिल्कुल भिन्न हैं। आज समाज के सभी वर्गों को एक समान दृष्टि से देखा जाता है, संविधान जैसे राष्ट्रव्यापी ग्रंथ ने अस्पृश्यता, छुआ-छूत आदि विषयों पर प्रतिबंध लगाने का सराहनीय कार्य किया है, फिर भी कुछ मामले ऐसे आए हैं, जिनमें भेदभाव को लेकर बहस आज भी जारी है, पर ऐसा

केवल संकीर्ण मानसिकता वाले प्राणियों तक ही सीमित है। आधुनिकता का दौर इस 'भेदभाव' नामक शब्द पर प्रश्न चिन्ह लगाता है। हिमाचल प्रदेश की सभ्यता और संस्कृति में पूर्व में भेद की स्थिति थी किंतु आज का समय पुरातन काल की उस संकीर्ण सोच को बढ़ावा नहीं देता। हिमाचल की समृद्ध संस्कृति, यहां का गौरवशाली अतीत और साहित्य, परम्परागत शैली, सुसज्जित विचारधारा इसे एक श्रेष्ठ पहाड़ी राज्य का दर्जा प्रदान करते हैं। हिमाचल प्रदेश मैदान से लेकर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों तक से सुसज्जित है, कई जातियां, संप्रदाय और जनजातियां यहां अस्तित्व में हैं, पर सहर्ष एक दूसरे की विचारधारा और परम्परा का सम्मान किया जाता है। छुट-पुट घटनाओं को छोड़ दिया जाए तो यहां सामाजिक समरसता का उत्तम भाव देखने को मिलता है। उदाहरण के तौर पर प्रदेश में विवाह कार्य में आयोजित होने वाली धाम में सभी वर्गों के लोग सम्मिलित होते हैं। सम्पूर्ण भारत की तरह यहां भी पर्व एक साथ मिलकर उत्साह से मनाए जाते हैं। यदि कुछ दुर्गम क्षेत्रों को छोड़ दें, अन्य स्थानों पर जातिगत भेदभाव को अब स्थान नहीं दिया जाता। प्रदेश के जिला चंबा में आयोजित होने वाला अतंर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मिंजर मेला सामाजिक समरसता एवं सद्भाव का अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत करता है। यहां मिंजर मेले की शुरुआत भगवान रघुवीर और लक्ष्मीनारायण को मिंजर भेंट कर होती है, और इसमें मुख्य भूमिका चंबा का मुस्लिम, मिर्जा परिवार निभाता है, जोकि जरी-गोटे की कला में माहिर है। हर वर्ष मणिमहेश, कैलाश दर्शन यात्र के दौरान जम्मू एवं कश्मीर के मुस्लिम परिवार भगवान शिव की इस भूमि पर आकर स्वयं को धन्य मानते हैं। प्रदेश की मीठी पहाड़ी बोली में वार्तालाप करना हिमाचल में रहने वाले हर धर्म के लोगों में प्रचलन है। आज भी सदियों पुरानी इन परम्पराओं का निर्वाह किया जाता है। महामहिम दलाई लामा भी भारत के इस प्रमुख राज्य को सामाजिक सद्भावना, समरसता और शांति का पर्याय मानते हैं। इतना कुछ हिमाचल प्रदेश को एक सामाजिक समरसता से सम्पूर्ण राज्य सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। इसी तरह से देश के अन्य राज्यों में भी सामाजिक समरसता के भाव को और अधिक बढ़ावा देने की अति आवश्यक है ताकि राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के भाव को और बल मिले, जिससे हमारा राष्ट्र प्रगतिशील बना रहे तथा विश्व पटल पर ध्रुव तारे के समान चमकता रहे। वर्तमान परिस्थिति में हमें निम्न पंक्तियों का अनुसरण जीवन में करना चाहिए और आने वाली पीढ़ी को भी यही शिक्षा देनी चाहिए: सामाजिक समरसता का भाव भरें हर दम, राष्ट्र हित सर्वोपरि रहे हमारा धर्म। ◆◆◆ **लेखक शिक्षक, विचारक व स्तंभकार हैं।**

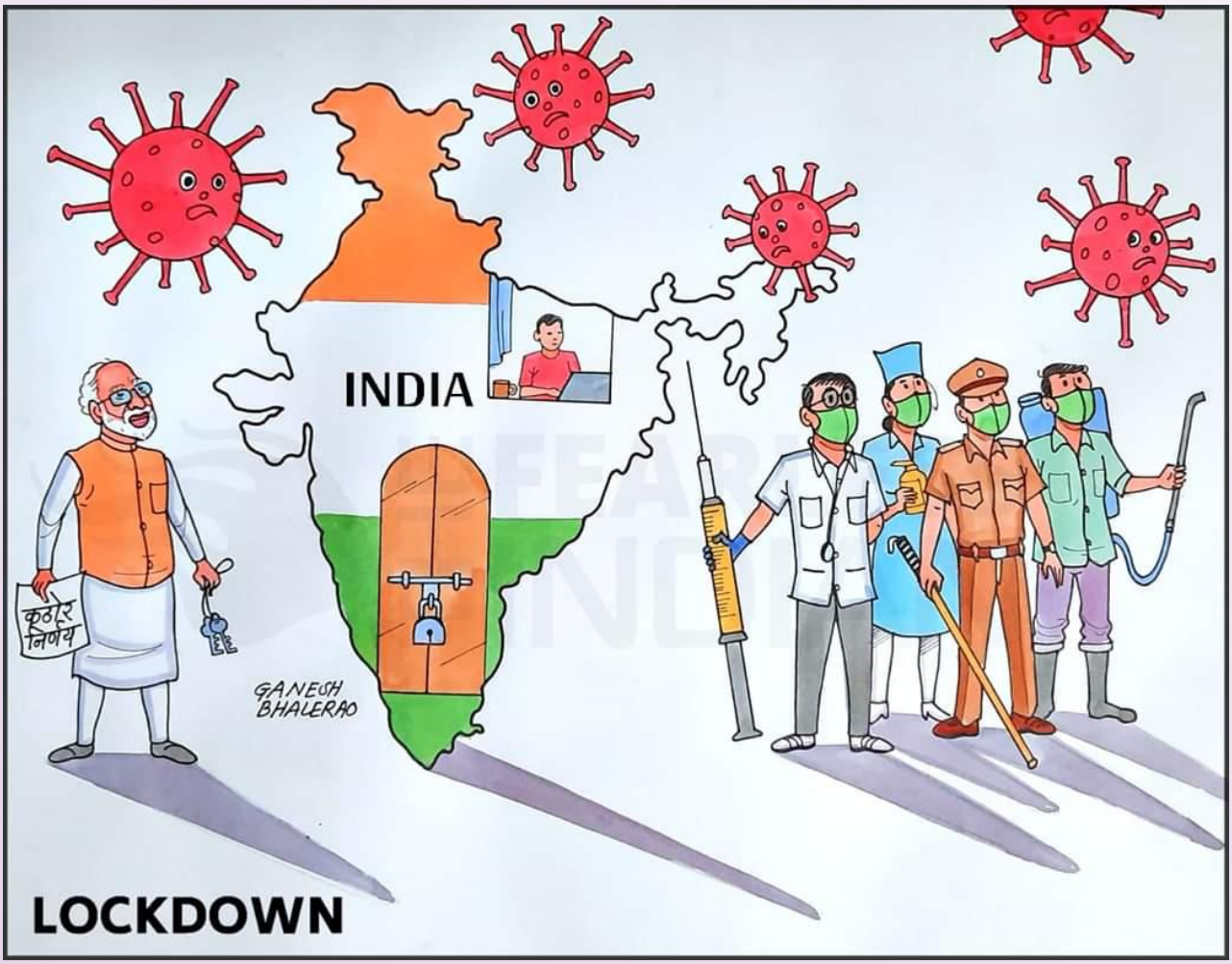

लोक मान्यताओं और परंप

किसी भी देश व प्रदेश की अपनी धरोहरें, संस्कृति, लोक मान्यताएं व परंपरावाद ही सबसे मुख्य पूंजी होती हैं जो सदियों तक नई पीढ़ियों तक पहुंचकर अपने इतिहास, संस्कृति और परंपराओं को साक्षात् बनाती हैं। खुश किस्मती से हिमाचल की वादियां अपनी धरोहरें, धर्म, संस्कृति व लोक परंपराओं का सुरीला राग सुना रही हैं लेकिन इस राग के बीच आधुनिक कुप्रबंधन का बेसुरा राग भी शोर बन रहा है जो हमें भ्रमित कर रहा है कि हम किसकी सुनें। पुरातन संस्कृति के बिना जीवन-शैली विचार शून्य हो जाती है। संस्कृति हमें दृष्टिकोण बांटती है और विचारशील बनाती है। संस्कृति गहन अध्ययन पुरातन व्यवस्था, नैतिकता, अनुशासन व सामाजिक अनिवार्यता समझाती है लेकिन बदलता परिवेश आधुनिकता के रंगों में मदहोश होकर हमारी लोक परंपराओं व संस्कृति को धीरे-धीरे पीछे छोड़ता जा रहा है। आधुनिकता और परंपरावाद के इस युद्ध में परंपरावाद नेस्तनाबूद हो रहा है। बदलते परिवेश में हमारी परंपराओं को सहेजने की चुनौती पैदा हो गई है।

विडंबना यह भी है कि मात्र 20-25 वर्षों में हमने परंपरागत स्लेटों के घर, परंपराएं जैसे सायर, बसोआ, चिड़नूं व नोहले जैसे त्यौहार, पकवान, लोकगीत, विवाह गीत सब खो दिए हैं। हमारी लोक प्रथाएं जैसे बेड़ा छुड़ाना, पजन गायकी, शादियों में बाजों व लोक गीतों की धुनें सब खो दिए हैं, अतः आधुनिक युग की दहलीज पार कर चुके हमारे समाज के कंधों पर एक नई जिम्मेदारी आन पड़ी है। हमारे लिए यह एक चिंतन भी है और साथ में मुद्दा भी कि हम अपनी पुरातन संस्कृति व परंपराओं को सहेजने के साथ-साथ उन्हें आधुनिक युवा पीढ़ी व बदलते समाज में फिर से स्थापित कर पाएं। लोक मान्यताओं का ह्रास चंहु ओर बड़ी तेजी से फैल रहा है। हमारे मेले और त्यौहार भी आधुनिक चकाचौंध व बाजारवाद की गिरफ्त में आ रहे हैं। इस वक्त चंहु ओर बाजारवाद की गिद्ध दृष्टि हर किसी पारंपरिक कार्य पर जमी हुई है। इसी कारण हर कार्य अब व्यापारिक दृष्टिकोण को अपना चुका है नतीजतन परंपरावाद और पारंपरिक व्यवसाय बड़ी तेजी से खत्म हो रहे हैं। हमारी संस्कृति नई धारणाओं व भ्रांतियों में जकड़ रही है। हमने अपनी आधुनिक रहन-सहन की शैली के लालच में पुरातन शैली से निर्मित अपने परंपरावादी घरों को खंडहर बना दिया। क्या हम इन्हें सहेज कर उनकी पुरातन शैली को आगे नहीं बढ़ा सकते थे। हमने अपनी विवाह के समारोहों से पुरातन विवाह गीतों को भुला कर डीजे के शोर को अपना लिया है। हमने अपने पारंपरिक पकवानों को अपने त्योहारों की पावन बेला से निकालकर आधुनिक पकवानों को अपना लिया है। ना हमें कोई रोकने वाला है ना कोई टोकने वाला। सब कुछ बदल देना चाहते हैं हम आधुनिक होने का दिखावा कर रहे हैं। इसमें हमें प्रोत्साहित करने वाले बाजारवाद की पैनी नजर है जो हमें हर वक्त प्रोत्साहित कर रहा है। हम पराए सपनों में अपनी रातें गुजार रहे हैं। इसके साथ ही हमने गांवों की पुरानी छटा को भी बदल डाला है। गांव का भाईचारा बदल रहा है। लोग गांव से अपने घर बदल कर एकांत में सड़कों के किनारे घर बना रहे हैं। बुजुर्ग अकेले परंपरावाद की दुहाई देकर थक चुके हैं। खेत-खलिहान यहां तक कि किसान भी बदल रहा है।

औजार बदल रहे हैं, वस्तुएं बदल रही हैं, मतलब जीवन का पुरातन ढंग बदल रहा है जिसे हम तरक्की, विकास और आधुनिक बनना कह रहे हैं। विकासवाद और परंपरावाद जंग हमें बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर रहे हैं लेकिन आधुनिक चकाचौंध हमारे मन मस्तिष्क पर इतनी हावी हो गई है कि हम एक परिपक्व चिंतन नहीं करना चाहते हैं हमें सिर्फ विकास चाहिए चाहे वह हमारी प्रकृति को नेस्तनाबूद कर रहा हो, चाहे उससे हमारी रहन-सहन हमारी माटी की खुशबू दूर हो रही हो। किसान लालच के व्यापार को अपनाकर मिट्टी में हानिकारक रसायनों

परंपराओं को सहेजना जरूरी

डॉ. संदीप शर्मा

का प्रयोग धड़ल्ले से कर रहा है क्योंकि उसके मन मस्तिष्क में व्यापारवाद फैल चुका है। संयुक्त परिवार एकाकी परिवारों में बदल रहे हैं और बच्चों से उनके दादा-दादी का साया उठ रहा है।

वृद्ध मां बाप अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा व रोजगार देने के बावजूद अपने गांव में अकेले पड़ गए हैं और बेसहारा हो रहे हैं। हमने अपने पुरातन किलों को खंडहर बनने पर मजबूर कर दिया है। हमने नव निर्माण व आधुनिकता की चकाचौंध में पर्यावरण को अपने चिंतन की गहराई से बाहर रखा जिसका खामियाजा हम और हमारी आने वाली हमारी पीढ़ियां भुगतेंगी। गांव के टियालों पर होने वाली चर्चा गुजरे जमाने की बात हो गई है। हमने अपने बुजुर्गों के प्रबंधन को भुलाकर आधुनिक प्रबंधन की धौंस जमाना शुरू कर दी है। बैलों की जोड़ियों को भूलकर ट्रैक्टर खेतों की मिट्टी को कुचल रहे हैं। हमने नदी नालों में स्टोन क्रेशर लगाकर प्राकृतिक रचना तंत्र को हिला कर रख दिया है। सड़कें चौड़ी करने के फेर में हमने बरसो पुराने पेड़ों को नेस्तनाबूद कर दिया है बदले में छोटी-मोटी खूबसूरत झाड़ियों को उगा दिया है। परिवर्तन की आंधी की मजबूरी में हमने अपने श्रेष्ठ मानवीय प्रबंधन को भुला दिया। हमें गंभीर मन से चिंतन करना होगा कि समाज को हम किस ओर ले जा रहे हैं या फिर खुद किस ओर जा रहे हैं अगर आधुनिकता जरूरत है तो फिर प्रबंधन रीति-रिवाज व परंपराएं भी हमें अपनी माटी से जोड़ कर रखते हैं। हमें संवेदनशील होकर सोचना होगा। श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों को बचाने और आगे बढ़ाने के लिए हमें नैतिक दायित्व ईमानदारी से निभाना होगा। इस वक्त हमें अपनी सारी ऊर्जा को पर्यावरण और अपनी परंपराओं को बचाने के लिए लगाना होगा क्योंकि यह हम जानते हैं कि जब पर्यावरण होगा तो फिर मानवता का विकास होगा और जब परंपराएं होंगी तो ना कहीं बेरोजगारी होगी और ना ही संस्कृति के विलुप्त होने का खतरा होगा। चाहे बदलता परिवेश आधुनिकता रंगों में हमारी लोक परंपराओं को धीरे-धीरे पीछे छोड़ता जा रहा है। इसलिए अपनी पुरानी संस्कृति व परंपराओं को सहेजने व उन्हें आधुनिक युवा पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए साहित्य मीडिया व सोशल मीडिया का सहारा लेना होगा। हमें अपनी संस्कृति व साहित्य के उत्थान के लिए कार्य करना होगा क्योंकि इस कार्य में कोई आर्थिक लाभ नहीं होता पर यह सामाजिक दायित्व बनता है कि हम समाज में एक अनमोल वस्तु जिसे साहित्य, संस्कृति, लोक परंपराएं कहते हैं के लिए निरंतर कार्य करें। समाज शास्त्रियों का यह परम कर्तव्य है कि वे प्रदेश और देश को एक सही दिशा की ओर ले जाने की ओर कोशिश करें। वे सही गलत पर चिंतन करने के लिए समाज को प्रेरित करें। साहित्य लोकगीत लोक परंपराएं पर्यावरण नैतिकता यह सब वर्तमान में सबसे जरूरी है क्योंकि यही इंसान को संवेदनशील व स्वच्छ समाज के बनने में महत्वपूर्ण कार्य करते हैं और इसके साथ ही यह संस्कृति के प्रचार-प्रसार में भी महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

साहित्य में भी संस्कृति के रंगों का समावेश इस तरह से होना चाहिए कि हम उस संस्कृति के उपासक बन जाए इसके लिए विद्यार्थियों में साहित्य संस्कृति लोक मान्यताओं के प्रति रुचि पैदा करने की जरूरत है विद्यार्थियों में अपनी संस्कृति व परंपरा बाद को बचाए रखने के लिए कई गतिविधियों को बढ़ावा देना होगा। सरकार को इस ओर अति संवेदनशीलता से विचार करना होगा कि वह प्रदेश को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं इसमें जन भावनाओं का ज्ञान होना बहुत जरूरी है। विकास करिए लेकिन अपनी माटी के कर्ज को मत भूलिए और साथ में इस माटी से उपजे संस्कृति के रंगों से एक सुंदर हिमाचल की तस्वीर बनाइए। यही समय की मांग है।

◆◆◆लेखक स्तम्भकार व साहित्यकार हैं।

मिट रही है जातिगत अस्पृश्यता

दलेल सिंह ठाकुर

अपना समाज पूरी दुनिया में विख्यात है, यहां की संस्कृति और परम्पराएं समाज की नींव हैं। समाज इन्हें बेहतर ढंग से संजोए हुए हैं। वर्तमान समाज अब परंपरागत समाज नहीं रहा, बल्कि अब इसे आधुनिक समाज के रूप में देखा जाने लगा है। समय की मांग के अनुसार समाज में बदलाव आता रहता है लेकिन आपसी भाई-चारे और संस्कारों की नींव बनी रही है। बदलते परिवेश के साथ समाज भी तेजी से प्रगति के पथ पर अग्रसर है। यदि हम आज के सन्दर्भ में समाज में वर्ग विषमता और जातिगत भेदभाव की बात करें तो कई रुढ़िवादी परम्पराओं को न सिर्फ हमने बदला है बल्कि उनका त्याग भी किया है। मैं एक प्रसंग के जरिए इस सत्यता को वक्त की कसौटी और समय की मांग के अनुसार समाज में आए बदलाव की बात को समाज के उस वर्ग के समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूं, जो सिर्फ नकारात्मक सोच वाले हुए हैं। इतिहास में नजर दौड़ाकर देखें तो उस समय कुछ ऐसा था जो कि आज के समाज को स्वीकार नहीं है। धीरे-धीरे वक्त गुजरा और समाज में बदलाव आता गया। मुझे याद है आज से करीब 45 वर्ष पूर्व हमीरपुर जिले का एक छोटा सा गांव, जहां सिर्फ राजपूत ही बसते थे, मात्र 2 परिवारों के इस छोटे से गांव में पर्याप्त मात्रा से अधिक जमीन थी। एक परिवार के मुखिया जिन्हें मैहर के नाम से जाना जाता था, गांव की कुल जमीन का 3 गुना हिस्सा अकेले उनके पास था। मैहर की आस-पास के इलाके में अच्छी खासी धाक थी, क्योंकि जमीन से इतना अनाज उत्पन्न हो जाता था कि कुछ लोग उनकी मदद पर ही आश्रित रहते थे। मैहर जी ने अधिक जमीन के चलते गांव के एक छोर पर हरिजन बस्ती को बसाया/शरण दी। इस बस्ती के लोग मेहर के खेतों में काम कर गुजारा करने लगे। बस्ती के लोग मेहर को अपना अन्नदाता मानते थे और उनकी पूरी इज्जत भी करते थे। मैहर भी बस्ती वालों को हर समय सहायता मुहैया करवाता था। मैहर के परिवार और बस्ती वालों के मन साफ थे लेकिन पौराणिक परंपरा रूढ़िवादिता, अज्ञानता या अनपढ़ता के चलते कुछ बातें ऐसी थी जिन्हें सोचकर लगता है कि आज के संदर्भ में वह सब गलत था। उस समय ना तो बस्ती वालों को बुरा लगता था और ना ही मेहर के परिवार को ऐसा प्रतीत होता था कि वह सब गलत है। उस समय बस्ती वाला कोई भी व्यक्ति मैहर जी के घर के छोर पर रुक जाता था और वहीं पर ठहर कर जूते उतारकर झुक कर प्रणाम करता था। मैहर जी के परिवार के लोग उन्हें वहीं पर जाकर खाने पीने को कुछ देते थे। मैहर के परिवार के किसी भी कार्यक्रम, त्यौहार या शादी में बस्ती वाले आते तो थे, बकायदा निमंत्रण भी दिया जाता था, लेकिन उन्हें खाना सबसे अंत में और अलग से दिया जाता था। बस्ती वाले खुशी-खुशी इस अवसर का इंतजार करते थे और जरूरत से ज्यादा खाने का भंडारण कर अपने घर ले जाते थे। मैहर जी की छत्र-छाया में ही बस्ती के लोग जीवन यापन करते थे और उनकी एक आवाज पर सभी कार्य हेतु एकत्रित हो जाते थे। बस्ती वालों को भी खुशी-खुशी यह सब स्वीकार था धीरे-धीरे समय आगे बढ़ता गया और वक्त ने करवट ली। समाज में समय की मांग के अनुसार बदलाव आना शुरू हुआ, अज्ञानता हटी, लोग शिक्षित हुए। मेहर जी भी चल बसे। बस्ती वालों का मैहर के घर के अंदर आना शुरू हो गया मैहर के परिवार वालों को आज कोई आपत्ति नहीं है। आज बस्ती वालों की मैहर के परिवार के हर कार्यक्रम में सहभागिता होती है और घर के अंदर की सफाई का जिम्मा बस्ती के रुलिया राम के पास है। मैहर के परिवार में जब भी नवजात शिशु आता है तो रुलिया राम की धर्मपत्नी दाई का काम करती है, यानि नवजात शिशु उन्हीं के हाथों में आंखें खोलता है। मेरा मत यह है कि समाज में सभी वर्ग बदलाव को स्वीकार करते हुए एक दूसरे का हिस्सा बनते हुए आगे बढ़ते हैं। दिक्कत सिर्फ राजनीतिक हस्तक्षेप और तथाकथित सामाजिक ठेकेदारों से पैदा होती है जो अपनी राजनीतिक रोटियां सेकते हैं।

◆◆◆ **लेखक इक्डोल हिप्र विवि में वरिष्ठ संपादक व विश्व संवाद केन्द्र शिमला के प्रमुख हैं।**

लघु उद्योग भारती, बद्दी ईकाई

उद्योग हित

लघु उद्योग भारती

राष्ट्र हित

लघु उद्योग भारती, भारत का सबसे बड़ा सुक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योगों के लिये सर्मपित अखिल भारतीय औद्योगिक संगठन है।

उद्योगों से सम्बन्धित सभी समस्याओं को दूर करने तथा सुझावों को कार्यन्वित करने के लिए तत्पर संगठन।

आप भी इस संगठन के सदस्य बनें।

संजय बतरा
अध्यक्ष

आलोक सिंह
महासचिव

संजय आहूजा
कोषाध्यक्ष

लघु उद्योग भारती, बद्दी ईकाई कार्यालय

151, डी.आई.सी., औद्योगिक क्षेत्र बद्दी, जिला सोलन (हि.प्र.) 173 205

Ph. : 01795 244800 | mail : lub.baddi@gmail.com

सामाजिक समरसता

दीनदयाल उपाध्याय की समग्र दृष्टि

... प्रो. प्रदीप कुमार वैद

प्रेरणादायक व्यक्तित्व पं. दीनदयाल उपाध्याय एक उच्च स्थिति प्राप्त निष्काम् कर्मयोगी एवम् आध्यात्मिक व्यक्ति थे। वे वैयक्तिक जीवन की सकुंचितता से ऊपर उठकर समष्टि के रूप में समाज तथा जिन व्यक्तियों से समाज बना है, उन सब से एकात्मक भाव से उत्पन्न निरतिशय प्रेम के कारण सदा सर्वदा तादात्मय के अनुभूतिवान थे। उनके द्वारा 'एकात्मक मानववाद' (1964-65) एवम् 'अंत्योदय' की अवधारणा सामाजिक एकीकरण एवम् सामाजिक विकास की आधार भूमि है। इस महान विचारक ने अपनी पूरी जिंदगी लोगों की सेवा में समर्पित कर दी। जाति-पाति विहीन राष्ट्र की रचना उनकी प्रतिबद्धता थी। वे राष्ट्रवाद की प्रखर भावना को जागृत करने के लिए निरन्तर प्रयासरत थे। उनकी मान्यता थी कि राष्ट्रीयता के बोध के साथ ही जातियां स्वयमेव समाप्त हो जायेंगी। दीनदयाल उपाध्याय का लक्ष्य समरसता पर आधारित समाज की स्थापना करना ही था। उन्होंने कहा था **''आज देश में ऐसे करोड़ों मानव हैं जो मानव के किसी भी अधिकार का उपयोग नहीं कर पाते। मैले-कुचैले, अनपढ़, सीधो-साधे लोग हमारे नारायण हैं। हमें इनकी पूजा करनी है। जिस दिन इनके पक्के सुन्दर घर बनाकर देगें, जिस दिन हम इनके बच्चों और स्त्रियों को शिक्षा, जीवन-दर्शन का ज्ञान देगें, जिस दिन हम इनके हाथ और पांव की बिबाईयों को भरेंगे और जिस दिन इनको उद्योग-धन्धों की शिक्षा देकर इनकी आय को ऊंचा कर देगें, उस दिन हमारा भ्रातृ-भाव व्यक्त होगा।'' 20वीं सदी में इस चिन्तक ने भारतीय समाज को गहराई से प्रभावित किया है। उनकी सोच थी कि अपेक्षित समाज के साथ समता का रिश्ता बनाने के लिए 'माइंड़ सेट' से बाहर आना होगा।**

दीनदयाल उपाध्याय ने देश में जनजागृति का काम किया। उनका जीवन एक समर्पित जीवन था। सबको साथ लेकर चलने में वे प्रवीण थे। राजनीतिक सत्ता से वे सामाजिक सत्ता को बड़ा मानते थे। हजारों साल पुरानी इस राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर के आधार पर ही भारत के भविष्य को शिखर कलश प्रतिस्थापित होने की कल्पना उन्होंने की थी। उनके अनुसार समाज की सबसे नीचे की सीढ़ी पर खड़ा व्यक्ति विकास का केन्द्र बिन्दु होना चाहिए। वे हमेशा असहाय और सर्वाधिक पिछड़े जनजातीय लोगों एवम् आर्थिक रूप से जर्जर देश के सर्वहारा समुदाय के प्रति सदैव चिन्तन-रत और कर्मण्य रहे। उनके जीवन-चरित्र से अधिक उत्तम उदाहरण ढूंढना सम्भव न होगा। **सामाजिक समरसता के परिवेश में दीनदयाल की चिन्तन-दृष्टि, सामाजिक समानता, जातिगत भेदभाव को हटाकर परस्पर लोगों में प्रेम सौहार्द बढ़ाना तथा सभी वर्गों एंव वर्णों के मधय एकता स्थापित करना रही।** समाज के सर्वाधिक वंचित वर्ग को सर्वोच्य प्राथमिकता एवम् मुख्य धारा से जोड़ने की उनकी **'अंत्योदय की परिकल्पना'** सदा राष्ट्र के विकास का आधार रहेगी। उनके द्वारा एकात्मक मानववाद की अवधारणा सामाजिक एकीकरण की आधार भूमि है। उनका चिन्तन सर्वसमावेशी एवम् सर्व सापेक्ष है। उन्होंने सदैव मानवता को सर्वोपरि माना। पंडित जी ने व्यवहारिक और सामाजिक दर्शन का प्रतिपादन किया जो उन विचार धाराओं को स्वीकार करता है, जो मनुष्य, समाज और सृष्टि का एंकागी विचार करती है। वर्तमान की विभिन्न सामाजिक समस्याओं का हल हम उपाध्याय जी के विचारों में से खोज सकते हैं। वे देश के भीतर सामाजिक समस्याओं को भली प्रकार से समझते थे। यह विषय उनके चिंतन व समहित था, इसीलिये वह उसके समाधान भी प्रस्तुत करते थे। उनका मत था लेखन वही अच्छा है, जिससे समाज का हित हो। दीनदयाल उपाध्याय द्वारा व्यक्त विचार व चिंता आज समाज में हो रहे बिखराव के रूप में दिखने भी लगी है। उन्होंने हमेशा आत्म-गौरव विहीन समाज बनाने का प्रयास किया। केवल सरकार के भरोसे सामाजिक सुधारों का विचार विफल रहेगा। इसलिये समरसता का विचार प्रत्येक नागरिक के मन में होना चाहिए तभी देश कल्याण के मार्ग पर चलेगा। व्यक्ति और समाज में संघर्ष का विचार अनुचित है। ये विचार उनके अध्ययन व मनन का दायरा कितना व्यापक था, दर्शाता है। सत्ता व समाज दोनों को जिम्मेदारी से काम करने की दीनदयाल उपाध्याय प्रेरणा देते हैं। समाज के सबसे निचले पायदान पर जो व्यक्ति है, उसके उत्थान का प्रयास प्राथमिकता से होना चाहिये। भवन निर्माण से पहले छत नहीं बनाई जा सकती। निर्माण नींव से शुरू होता है। इसी प्रकार जब भवन की सफाई करनी होती है तो यह कार्य ऊपर से आरम्भ होता है। फर्श का नंबर सबसे

बाद में आता है। यह विचार उनके समाज में समरसता के भाव को लागू होने वाले विचार को दर्शाता है। साथ ही भविष्य में सामाजिक स्तर पर गंभीर समस्याओं की ओर इशारा भी करता है। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। इन्हीं विचारों के माध्यम से देश की वर्तमान सामाजिक समस्याओं का समाधान भी छिपा है।

उनके विचार, लेख, चिन्तन शीलता समाज को उस दिशा में मुड़ने की प्रेरणा देते हैं, जो मानव को विभाजित होने से रोकता है। सामाजिक पंगुता के इस खतरे से बचने के लिए हमें दीनदयाल उपाध्याय के चिन्तन पर ही लौटना होगा। मानव कल्याण का वही रास्ता शेष है। वे समाज की एकता और अखंडता की दशा के प्रति पूरी तरह समर्पित थे। सर्वोदयी समाज की कल्पना उनका लक्ष्य रहा। मजबूत समाज, मजबूत राष्ट्र का मंत्र 'हम' ना कि 'मैं' दीनदयाल उपाध्याय की प्रति कल्पना रही है। समाज तथा राष्ट्र 'मैं' और 'मेरा' की संकुचित भावना से हटकर इस दृष्टि से व्यष्टि, समष्टि और परमेष्टि अथवा व्यक्ति, समाज और विश्वात्मा के रूप में अपने को अनुभव कर व्यक्ति बड़ा हो सकता है और समाज तथा राष्ट्र के साथ तादात्म्य का अनुभव कर सकता है।

दीन दयाल जी ने समरस समाज के सुविचार को प्रतिष्ठित करने का सत्य प्रयास किया। दीनदयाल की समाज के प्रति जो संवेदना रही, वंचितों के प्रति जो भाव रहा और सामाजिक समरसता के लिए जो प्रतिबद्धता रही, वह उनके कार्य में स्पष्ट रूप से दिखाई दी है। भारत जैसे देश में एक ऐसे व्यक्तित्व की आवश्यकता है जो समस्त विविधताओं में समन्वय स्थापित कर सामाजिक व्यवस्था में समरसता बनाए रख सकें। इस दृष्टि से भी दीनदयाल के सामाजिक जीवन का व्यवहार एक आदर्श प्रस्तुत करता है। समानता, जातिगत भेदभाव का जड़मूल से उन्मूलन कर लोगों में परस्पर प्रेम एवं सौहार्द बनाए रखना तथा समाज के विभिन्न वर्गों में परस्पर प्रेम एवम् सौहार्द बनाए रखना तथा वर्गो एवम् वर्णों के मध्य एकता स्थापित करने के दीनदयाल उपाध्याय के प्रयासों के कारण ही मिटते दिखतें है क्योंकि जाति-भेद का दोष ही है जिससे समरसता का अभाव उत्पन्न होता है। उन्होंने लोगों में प्रेरणा जगाकर समाज को आगे ले जाने का संकल्प लिया था और यही सर्वांगीण विकास है, चिन्तन की श्रेष्ठता है, समाज के प्रति संवेदना एवम् सामाजिक समरसता के प्रति वचन बद्धता है।

वे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से रखते थे। जो समाज के सामने रखते थे, उसी अनुसार आचरण भी करते थे। 'हमें तो अपनी राह बनानी है, जिस और हम चलेंगे, वही रास्ता होगा, यही उनका सामाजिक ध्येय भी था। ऐसे प्रेरणादायक व्यक्तित्व ने अपने समाज में समरसता का भाव जगाने, सुख-सम्मान दिलाने हेतु अपने खून के एक-एक कण को सुखाया। उनके श्रेष्ठ मार्ग दर्शन और अविराम साधना के कारण ही, जाति, वर्ग भेद के भ्रम को दूर भगाकर ही देश आगे बढ़ पाएगा। सच्चे अर्थों में वे दृष्टा थे, सन्त थे। भावी पीढ़ी को अपना कर्त्तव्य सुनिश्चित करना होगा कि कैसे देश को सामाजिक समरसता की चुनौतियों से निकाल कर समाधान के रास्ते की ओर अग्रसर कर सके। ◆◆◆ **लेखक इक्डोल हि.प्र.वि.वि में लोक प्रशासन के प्रोफेसर हैं।**

卐

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

शैक्षिक उन्नयन से बदलती मानसिकता

... अंकुर कौंडल

मुठ्ठी में भरे अनेक रंगों को एक साथ उकेरने से सामने जो दृश्य आए वो है हमारा भारत। इसका उच्चारण करते ही हमारा मुंह भर सा जाता है। अनेकों सभ्यता, संस्कृतियों और विभिन्न जाति, पंथ, समुदायों का एक संगम है हमारा भारत। बहुत बार हमारी सभ्यता संस्कृति और एकता एवं अखंडता को बाहरी और आंतरिक बुरी शक्तियों ने चोट पहुंचाई परन्तु हिमालय सा अडिग हमारा भारत पुनः वैसा ही रहा। इस देश के निवासियों की अपने देवी-देवताओं और एक अदृश्य शक्ति पर श्रद्धा व आस्था से हम आज तक इस समृद्ध भारत के साथ चले हुए हैं। बात करें हमारे पहाड़ी राज्यों की तो आज भी हमारे यहां भी देवी-देवताओं के प्रति वही आस्था है जो एक सौ वर्ष पहले थी। कोई भी कार्य करने से पहले देवी-देवताओं की अनुमति लेना, आज भी परम्परा का हिस्सा है। लोगों की आस्था के प्रतीक यहां के देव पालकी हैं जिसमें माना जाता है कि देव साक्षात् विराजमान हैं। अधिकतर लोग पीढ़ी दर पीढ़ी देव समाज के साथ चले आ रहे हैं। जैसा कि सर्वविदित है कुल्लू का अंतर्राष्ट्रीय दशहरा ओर मंडी का अन्तर्राष्ट्रीय शिवरात्रि मेला।

बात करें कुल्लू दशहरा की तो वहां प्रति वर्ष देव मिलन होता है। प्रशासन द्वारा हर एक देव पालकी को रहने के लिए स्थान चिन्हित किए गए हैं। लाखों लोगों की श्रद्धा के प्रतीक इस मेले और देव मिलन की रस्म के लाखों लोग साक्षी हैं। हर किसी का इस देव रथ के साथ अपना स्थान है, कोई इसके साथ कंधा लगाकर चलता है तो कोई ढोल-नगाड़ों के साथ इनकी गरिमा को चार चांद लगा देता है। सभी का सहभोज होता है। वैसे ही दूसरी तरफ मंडी का अंतर्राष्ट्रीय शिवरात्रि मेला भी लगभग 200 देवी-देवताओं का आगमन प्रति वर्ष होता है। श्रद्धालु श्रद्धानुसार इसमें सार्वजनिक भोज का आयोजन करते हैं, देवरथ के साथ चले हर सेवादार को भोजन दिया जाता है। इस वर्ष जातिगत भेदभाव करने का मामला देखने को मिला था जिससे कि इस अखंड विरासत की छवि को धक्का लगा है, साथ में लोगों की आस्था को भी। कुछ असामाजिक तत्व जो खुद को देवी-देवताओं से भी ऊंचा समझने का प्रयास कर बैठते हैं और अपनी जहरीली मानसिकता जो विदेशी लोग हमारे पूर्वजों के दिल और दिमाग पर जो ऊंच-नीच की दीवार बनाकर छोड़ गए थे वो आज भी इस कुप्रथा को साथ लिए जा रहे हैं। कुछ जहर वर्षों से वामपंथी विचार के लोगों व अंदरूनी विभीषणों द्वारा भरा जा रहा है। गौरतलब है कि किसी देवी-देवता के लिए हर व्यक्ति समान है फिर किसी व्यक्ति को यह हक किसी देव शक्ति ने नहीं दिया कि वह किसी के साथ भेदभाव करे, अगर ऐसा होता तो हर पालकी और देवरथ के आगे ढोल-नगाड़ों के साथ चलने वाले वादक भी पृथक समाज से होते। जिसे आघात पहुंचाने का कोई भी हकदार नहीं है। हर वर्ष अपने देश में कई त्योहार हैं जो सभी लोग बिना किसी भेदभाव के मनाते हैं और सहभोज आयोजित किए जाते हैं। हर व्यक्ति का अपना एक स्थान और स्वाभिमान होता है, फिर अगर ऐसा है तो रामायण हमारा पवित्र ग्रंथ है, यदि उस समय के विद्वानों ने यह सोचा होता की वाल्मीकि किस समाज से हैं तो आज हमारे आराध्य राम कौन होते? और उस माता सबरी और राम की प्रेम व श्रद्धा भी नहीं होती, जो आज हमें मिसाल के तौर पर दी जाती है। अगर यह समाज पहले से ऐसा ही था तो आचार्य चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य को अपना शिष्य ना बनाते और न ही भारत एक होता, न ही आगे कोई राजा महान अशोक इनके वंश में होता जिनका स्थान पूरे विश्व के राजाओं में सबसे उपर रहा। उसी तरह उसी जहरीली मानसिकता से बचकर अपनी शिक्षा को अपनी शक्ति मानकर भारत का संविधान लिखने का श्रेय भीमराव अम्बेडकर को जाता है।

ये उपर्लिखित सभी महान शख्स कहीं न कहीं उसी समाज से आते हैं जो कहीं न कहीं समाज के ठेकेदारों के तथाकथित समाज से आते हैं। कुछ समय के लिए हमारे समाज में अशिक्षा थी, जागृति नहीं थी परन्तु आज यह स्थिति नहीं है। आज हमारा समाज एक पढ़े-लिखे वर्ग का है। शिक्षित व संपन्न समाज में समरसता का होना बहुत जरूरी है। अगर आज ये भेदभाव हो रहे हैं तब हमारी शिक्षा व संस्कार कहीं न कहीं इसके जिम्मेदार हैं। आज शिक्षित लोगों और युवाओं को इन कुरीतियों को खत्म करना होगा तभी एक सभ्य समाज में सभी को साथ लेकर चल सकेंगे। इसी कड़ी में आज के शिक्षित व समृद्ध वर्ग का यह ध्येय होना चाहिए कि जो वर्ग समाजिक, आर्थिक और किसी अन्य भेदभाव के कारण पीछे रह गया है उसे अपने प्रयासों से बराबरी पर लाएं ताकि कोई भी पीछे ना रहे और सभी कंधे से कंधा मिलाकर देश को आगे ले जाने में अपनी एक छोटी सी पहल भी एक बड़े बदलाव में अहम भूमिका निभा सकती है।

◆◆◆ लेखक केंद्रीय वि.वि. धर्मशाला में अध्यापनरत व हिमसिने सोसायटी से जुड़े हैं।

करोनो आयो रे!

यमराज बना वो रूप धरे
लो यार करोनो आयो रे
आकर कब वो दस्तक दे दे
घर घर दहशत छायो रे।
बाहर घूमना तज दो सारे
घर अपने चुपचाप रहो।
शाहीनों कुछ तुम भी समझो
खूब तुम्हें समझायो रे।
फैल गया है आ घर-घर में
बन महामारी शहरों में।
भेज रहे जो तुमको आगे
उनका कुछ न जायो रे।
ये मतलब के संगी सारे
रोज तुम्हें उकसाते हैं।
अपने बच्चों का भी सोचो
बुरा जमाना आयो रे।
दुनिया भर में दहशत इसकी
फैल रहा जो रोग यहां।
पेश चले न इसके आगे
वैद हकीम बतायो रे।
तुलसी हल्दी नमक गरारे
उत्तम सब अनुपान करो।
सर्दी और जुकाम का रोगी
कभी न पास बिठायो रे।
उबला पानी और प्याज भी
सुनते हैं गुणकारी है।
अस्पताल में जांच जरूरी
देर जरा न लायो रे।
काम बिना मत बाहर निकलो
मास्क पहने बाहर आओ
आतंकी बन जनता को मारे
वायरस ऐसो आयो रे।
इसके आगे हाथ खड़े सब
जोड़ यहां थक जायेंगे।
नाम हरि का लेंगे मिल जो
जिंदा हम बच जायेंगे।
छोड़ो वैर विरोध सभी तुम
बात अम्न की यार करो।
मानव धर्म है सार सभी का
वेद पुराण बतायो रे।।

शक्ति मलघोटा बैजनाथ

वतन को मजहब में बांटने वाले

वतन को मजहब में बांटने वाले, इतने मक्कार हो गए।
भूल गए सारे कायदे कानून इंसानियत के,खुद सरकार हो गए।।
पहले पत्थर बरसते थे जम्मू कश्मीर में, आज दिल्ली पर वार हो गए।
सियासत के नशे में इतने चूर, क्यों वतन के गद्दार हो गए।।
होते जो तुम सच्चे वतन के कारदार,
नागरिकता संशोधन बिल को अपनाते।
यूं ना करते प्रायोजित दंगे, लहू बेकसूरों का यूं न बहाते।।
भूल गए तुम सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तान
तुम वतन को शर्मसार कर गए,
वक्त रहते सम्भल जाओ, देश के हो
क्यों इतना बुरा अपना किरदार कर गए।।

सन्तोष गर्ग

'पुलवामा का बदला'

अपने वतन के लिए सैनिक दे रहे थे सेवाएं
हंसते खेलते खुशियों के साथ में डूबे थे सब
मालूम न था ये उनकी जिंदगी का आखरी मकाम होगा।
दुश्मन ने की थी पूरी तैयारी, लेकर आया था मौत का सामान
पुलवामा में हमला कर लगा दिया लाशों का ढेर।
हुए सैनिकों के चिथड़े हजार,
छाया सन्नाटा अपार, पल में खूबसूरत पल बदल गये मातम में।
पुलवामा की इस मनहूस खबर से न कोई भारतीय रहा बेखबर।

रवि शर्मा, निरमंड, जिला कुल्लू

चौंई रूतां रा केयरा फेयरा

माह्णुआं अपणे जिणे तांई, कितणे ऊटपटांग बणां,
कुदरता अप्पणे रां री, रूतां सगोती, सजा,
पांती पांती रे रूयाजां त्यारां सोगती, म्हाचल सजदा
नौंआ बरया (साल) म्हाचले, लोहड़ीया रीआ सगरांदी चढ़दा।
रूतां रा राजा वसतं, लेई पांती- पांती रेयां फुल्लां
अपणे म्हाचलेयो छैल, बांका जी करदा
आणे-न्याणे डुआंदे पतंगा, देस पक्ति रे रा रंदे
खेलण ओअली सब्बोजणे, मिठे रिओडुआं खांदे
मणांदे भजण, ह्विावगौरां देगांदे
ईयां अहांदे म्हाचली, जी त्यार मणांदे।।
ओअले -ओअले बद्दे त्याड़े, चुबणां लगदी धुप्प
छौआ बोणे तांई माहणु, तोपदे रूख
फुलांते फअल बणदीयां फसलां पक्कदीयां सरूयां कणंका
किसांणा देयां दिलडुयां ओंदीयां जी रौंणकां
औंदी बसाखीग्रां-ग्रां बजदीयां हन्न टोलकां।
नचीगाई मिट्टदीयां माहणुयां दीयां खुंदकां
सावण लेई औंदा सोगती सैली, बरखा बआर जी
उछलदे जांदे दरया -नालु बरखा हुन्दी दिन रात जी
रीयाली व्रत, झूले लेई ओंदे बालगोपाल जी
पतरोडे ,ववरू, बटूरू,गगल, छलीयां कन्नै
अहांदे म्हाचली मणांदे सेयर त्यार जीं।।
छैल लगणा लगदी धुप्प ठंडेरना लगदी वात
जणांसा ताई करवे रा व्रत हुन्दा, खास
दयाली रे त्यारे कन्नै जग करदी रात
निक्कडे हुंणा लगदे त्याडे बददणा लगदी रात
ओअले ओअले हुणां लगदी पौंदी स्याले री सुरूआत।

सुषमा देवी, भरमाड़, जिला कांगड़ा

सयाले री झड़ी

सयाले री झड़ी
कइयांसालां बाद लगी
सग्ग नी लाणी हुण खेतरें
उपरा ओले लाई त्या
बतेरा पाणी
पज्जी जाणी हुण कणक
पूरे टबरे बैठी कने खाणी
इक पासे होर बीमारियां बी
ईसा बरखा ते घटी गई
पर दुये पास सर्दी बी
बड़ी भारी बदि गई
परमात्मे करी ती
सारी दुनियां मालामाल
किसी पासे बरखा
कने किती पासे कां ने हा बुरा हाल
परमात्मा रखदा सबी रा ख्याल
सयाले बरखा दिति बंडी
हुण गर्मियां च नी
हुई सकदी पाणिये री तंगी
कुदरते ऐसी रंगत जमाई
बरखा जितनी बढे करसाणा रे खेता
तितनी ही छोटे रे पाई
बाहरा रे कम तां
नी हुई सकदे
पर अंदरा रे कम्मा जो निपटाओ
खेतां च पई गया एहल
तन्जे तुप औंगी
तां ही खेतां च जाओ
माला जो काह बडी रा ही खवाओ
जे नी हा हरा चारा
तां भू कने लूण ही चटाओ
सयाले री ये चहढ़ी
हुन्दी बड़ी बशर्म
सर्दी जुकाम करदी बड़ा भारी
तुहें रवा पावें जितने बी गर्म
स्याला बी तां कुदरता री न्यामत हई
सहने ही पौणी
गर्मियां ते बाद तां
सर्दी ही औणी

रविंदर कुमार शर्मा निदेशक (सेवानिवृत्त)
घुमारवीं बिलासपुर

आओ मित्रे नव वर्ष मनाएं ,

घर-घर खुशी के दीप जलाएं।
शिक्षा संस्कृति का ज्ञानालोक फैलाएं,
प्रभु श्री राम राज्याभिषेक पर्व मनाएं।
सृष्टि रचना दिवस मनाएं,
जड़ - चेतन में उल्लास प्रहरी,
वसंत दूत कोकिला की गूंजित स्वर लहरी
नव वर्ष में शपथ निभाएं,
आर्यव्रत को विश्व गुरु सम्मान दिलाएं ।
न शीत, न गर्मी,
आओ नवरात्रे पर्व मनाएं।
सदाचार, सद्चरित्र का कल्पतरू लगाएं,
नववर्ष विक्रमी संवत दो हजार सतहत्तर
का स्वागत गान गाएं,
आओ मित्रे नव वर्ष मनाएं।
रवि कुमार सांख्यान

मैहरी काथला, बिलासपुर, हि.प्र.

पहाड़ पर उग आया है

लोहे का पेड़, ऊंचा-गर्वीला
बिना बीज, बिना खाद-पानी के
तनकर खड़ा है
नये भारत की घोषणा करता
देश की जीडीपी की तरह
बढ़ता जा रहा है
लोहे का पेड़,
नेता प्रसन्न हैं
अर्थशास्त्री संतुष्ट
जनता उत्साहित
बस वो चिरैया
खो गयी कहीं
लोहे के पेड़ से डरकर
कहीं चली गयी
बिना बताये
आज भी हर सुबह
दाने का कटोरा लिए
ढूंढती है बूढ़ी आंखें
कौन समझाएगा इन्हें
ये लोहे के पेड़ों कि सदी है
चिरैया अब नहीं आएगी

विकल्प सिंह ठाकुर, राजगढ़

मातृवन्दना के सभी पाठकों को
नववर्ष विक्रमी सम्वत् 2077 की हार्दिक शुभकामनाएं

ANIL KUMAR

(GOVT. & PVT. CONTRACTOR)

SUPPLIERS OF
All type of Building materials

CONSTRUCTION :
All type of Building, Roads, Drains & Industrial Instructor etc.

CONTACT :

Village Pabhar, P.P. Jamna,
Teh. Paonta Sahib, Distt. Sirmaur, H.P.
Mobile : 9805777352

होली पर पत्रकार परिवार मिलन में महिलाओं के सम्मान का संदेश

... विश्व संवाद केंद्र शिमला

विश्व संवाद केन्द्र शिमला द्वारा होली के उपलक्ष्य में पत्रकार परिवार मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शिमला के हिमरश्मि परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में करीब 120 विभिन्न समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से आए पत्रकार व उनके परिवार के सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में पत्रकारिता जगत के स्तम्भ समझे जाने वाले एवं जाने माने प्रख्यात पत्रकार प्रकाश लोहुमी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सूचना एवं जनसंपर्क विभाग में कार्यरत श्रीमती आरती गुप्ता ने की, जबकि प्रेस क्लब शिमला के अध्यक्ष व पंजाब केसरी के वरिष्ठ पत्रकार अनिल भारद्वाज मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री प्रकाश लोहुमी ने अपने उद्बोधन में कहा कि पत्रकारों के लिए आयोजित कार्यक्रमों में उनको अवश्य भाग लेना चाहिए। आज का दिन महिला दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि आज बेटा और बेटी में कोई अंतर नहीं लेकिन संस्कारों और शक्ति के संतुलन को बनाये रखना होगा ताकि परिवारों को टूटने से बचाया जा सके। उनका कहना था कि आज एक ओर जहां महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ है वहीं परिवारों के बिखरने का क्रम भी शुरू हुआ है। इसमें अधिकारों को लेकर टकराव मूल में है जिस कारण आज घरों में बुजुर्गों का सम्मान समाप्त हो गया है। उनके भरण-पोषण को लेकर कानून बनने लगे है यह बेहद चिंता की बात है। उनका कहना था कि इस देश में जहां 10 से अधिक महिला मुख्यमंत्री बन चुकी हैं। इंदिरा गांधी के रूप में महिला प्रधानमंत्री देश को मिल चुकी है लेकिन फिर भी महिलाओं का सशक्तिकरण नहीं हो पाया है। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्ष आरती गुप्ता का कहना था कि यह बहुत प्रसिद्ध है कि हर सफल पुरूष के पीछे किसी महिला का हाथ होता है लेकिन इसके साथ यह बात भी सच है कि हर सफल महिला के पीछे भी किसी सफल पुरूष का हाथ रहता है। उन्होंने वेदों का उदाहरण देते हुए कहा कि ऋग्वेद में 440 ऋषियों में 30 महिलाएं भी थी जिन्होंने वैदिक ज्ञान के विस्तार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने समाज के सभी वर्गों से अपील की कि महिलाओं को सहयोगी वातावरण प्रदान किया जाये ताकि वह प्रगति के रास्ते पर अपना मार्ग प्रशस्त कर पाये। इस अवसर पर प्रेस क्लब के अध्यक्ष अनिल हैडली ने बताया कि प्रेस-क्लब भी इस प्रकार के आयोजन को करना चाहता था लेकिन किसी कारणवश वह हो नहीं पाया, लेकिन विश्व संवाद केंद्र शिमला ने जो इस दिशा में पहल की है वह सराहनीय कदम है। उन्होने कहा कि विश्व संवाद केन्द्र शिमला गत कई वर्षों से मीडिया से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन करता आया है जिसमें आज का यह परिवार मिलन समारोह अनूठी पहल है। इस तरह का कार्यक्रम अभी तक किसी भी संस्था द्वारा नहीं किया गया। उन्होंने विश्व संवाद केन्द्र को कार्यक्रम के आयोजन पर शुभकामनाएं दीं और कहा कि पत्रकारों के लिए इस तरह के कार्यक्रम आपसी परिवारों में परस्पर संबंध बनाने और भाई-चारे को बढ़ावा देने की ओर बड़ा कदम है। उन्होंने सभी पत्रकारों से कार्यक्रम में सहभागिता दर्ज करवाने की अपील भी की। कार्यक्रम में विश्व संवाद केंद्र शिमला के उपाध्यक्ष यादवेंद्र चौहान ने सभी अतिथियों का स्वागत किया, जबकि मंच का कुशल संचालन दूरदर्शन केन्द्र शिमला में कार्यरत नीतू वर्मा ने किया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित पत्रकारों के बच्चों के लिए खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में विश्व संवाद न्यास के अध्यक्ष एवं पूर्व उपकुलपति नरेंद्र शारदा, विश्व संवाद केंद्र प्रमुख दलेल ठाकुर, प्रांत प्रचार प्रमुख महीधर प्रसाद, प्रांत सहप्रचार प्रमुख मोतीलाल और मातृवन्दना के अध्यक्ष अजय सूद सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

प्रतियोगिताओं में इनका हुआ सम्मान

बच्चों की प्रतियोगिताओं में मन्नत, अनुबंश, नवींद्र, विमुधा, मलाईका, वैष्णवी, आंचल, ईशान्वी, ध्यानेश वर्मा, टविंकल एवं नमिता वर्मा विजेता रहे। वहीं महिला वर्ग में आरती गुप्ता, डॉ0 नीलम, करूणा सुदरियाल, सीमा शर्मा, जया शर्मा और गायत्री विजेता रही। पुरूष मुकाबलों में जगमोहन शर्मा, देवेंद्र, सुनील शुक्ला, प्रकाश भारद्वाज, अनिल, अरशद अली और रंजीत राणा विजेता रहे।

आस्था
की प्रतीक जनश्रुतियां

... राजेश शर्मा

हिमाचल प्रदेश में सृष्टि के आरम्भ काल से ही सौंदर्य का बेहद मनोरम अवलोकन होता है। प्रकृत्ति के इसी सौन्दर्य की गरिमा बनाए हुए यहां के पर्वत शिखर, नदी, झरने, विशेषत: पुरातन धरोहरें व झीलें है। हिमालय की तलहटी में बहुत सी झीलें अपने सौन्दर्य के लिये चर्चित रही हैं। हिन्दू धर्म के पौराणिक तथ्यों के अन्तर्गत प्रदोष कालीन समय अवधि की अमर बेला में दिव्य शक्तियों का सरोवर या झीलों में उतर कर स्नान करने की श्रुतियां हैं। फलस्वरुप इन झीलों व सरोवरों की महिमा तीर्थो में परिवर्तित हो गई। यहां आने वाले श्रद्धालुओं के मन में अपार श्रद्धा और हर्ष होता है। हिमाचल में विविध प्रकार की झीलें अपने विशेष सौन्दर्य के लिये विख्यात हैं। हिमाचल में झील हो या कोई पर्वत, वहां पर किसी न किसी दैवीय शक्ति का वास अनन्त काल से रहा है। ऐसी ही विचित्र सुन्दरता की विहंगम छटा युक्त हिमाचल मण्डी रिवालसर झील युगों पुराना इतिहास अपने आप में समेटे हुए है। समुद्र तल से इस स्थान की उंचाई 4500 फीट है। मान्यता है की यह स्थान ऋषि श्रेष्ठ लोमश की तपोभूमि है। बौद्ध मत के लोगों में लोमश ऋषि के प्रति गहन आस्था है और इन्हें बौद्ध मत के लोग अपना परम आराध्य मानते हैं। तीन मतों के संगम से सुशोभित यह स्थान अपने आप में बेहद रोचक और पुरातन इतिहास समेटे हुए अनन्त काल से श्रद्धालुओं के आस्था का केंद्र रहा है। गुरु गोविंद सिंह ने मुगल साम्राज्य से लड़ते हुए सन् 1738 में रिवालसर झील के शांत वातावरण में 30 दिनों तक समय व्यतीत किया था। झील के साथ एक गुरुद्वारा है जिसे सन 1930 में मंडी के राजा जोगिंदर सेन ने बनाया था। हिंदू यहां पर भगवान शिव, नंदी आदि हिन्दू धर्म के ईश विग्रह स्थापित हैं।

स्कन्द पुराण में इस तीर्थ की बहुत महिमा वर्णित है। सृष्टि का जब सृजन कार्य चरम सीमा पर था। तब भगवान ब्रह्मा ने नयन सदृश दो सरों (झीलों) की रचना की। जिसमे से एक को कटाशराज जो अब

पाकिस्तान चकवाल में और द्वितीय को रिवालसर का नाम दिया गया। कहते हैं की बहुत समय पहले यहां देवांगनाएं भी विशेष पर्व काल में स्नान हेतु इस झील में आती रही हैं। रिवालसर को पुरातन नाम 'नील हृदयाचलसर' था। रिवालसर सम्भवत: 'रेवासर' का अपभ्रंश शब्द हैं। लोमश ऋषि की दिव्य तपोस्थली का नाम स्कन्द पुराण में 'रेवासर' कहा गया है। लोमश ऋषि तिब्बत में एक गुफा में अपनी नित्य पूजा अर्चन व साधना किया करते थे। लोमश ऋषि को चीन और तिब्बत में मनीपद्म कहा जाता है। तिब्बत से लोमश ऋषि इस स्थान की ओर भ्रमण हेतु आए, जब वे इस रिवालसर क्षेत्र में पधारे तो उन्हें ये स्थान बहुत रुचिकर लगा और इस स्थान से कुछ दूरी पर इनकी गुफा है जहां इन्होंने तिब्बत से आने के बाद घोर तपस्या की। तपस्या से स्वर्ग अधिपति देवराज इंद्र का आसन डोल पडा। तपस्या में विघ्न डालने के लिये कई यत्न किये गए। इंद्र द्वारा नारायण व शिव से प्रार्थना करने पर भगवान शिव ने लीलावश सात पत्थर इस झील में उछाले। वे पत्थर ही टीले बने गए थे। जल में आवाज आलोड़ित होने से भी लोमश ऋषि जी का ध्यान नहीं टूटा। परंतु ऋषि लोमश की तपस्या भंग नहीं कर पाए। कहते हैं की इसी सत्यता के अन्वेषण हेतु यहां 88 हजार ऋषि भी लोमश ऋषि के दर्शनार्थ यहां आए थे। समय चक्र की अवधि को लांघ कर जब उनकी समाधि पूर्ण हुई थी तो उन टीलों पर दृष्टि फेरते ही उनमें गति आ गयी। तदनन्तर वे टीले जल में तैरने लगे। ऐसा भी कहा जाता है की जब ऋषि लोमश इस स्थान पर तपस्या रत थे तब किसी पक्षी के द्वारा उनके कमण्डल से जल पीने की अभिलाषा से कमण्डल के जल से ही झील का निर्माण हुआ। सिर्फ वही स्थान शेष सूखा बच गया था जहां पर ऋषि लोमश समाधिस्थ अवस्था में बैठे हुए थे। गुरु पद्मसंभव जिन्होंने आठवीं शताब्दी में तंत्र विद्या के बल पर बौद्ध मत को भूटान एवं तिब्बत में ले जाने एवं प्रसार करने में अपना मुख्य कर्तव्य समझा। वहां उनको गुरू 'लोपों रिन्पोछे' के नाम से जाना जाता है। विशेष सम्प्रदाय के अनुयायी उन्हें द्वितीय बुद्ध मानते हैं। कहते हैं की मंडी के राजा अर्शधार को जब यह पता चला कि उनकी पुत्री ने गुरु पद्मसंभव से शिक्षा ली है तो राजा ने इसमें अपना अपमान समझा और गुरु पद्मसंभव को विशालकाय चिता की लपटों में जला देने का सख्त हुक्म सुनाया था। उस समय विश्व पटल पर बौद्ध मत अधिक प्रचलित व चर्चित नहीं था और बौद्धों को शंका की दृष्टि से देखा जाता था। कहते हैं कि राजा ने पद्मसंभव के लिये बहुत विशाल चिता का निर्माण करवाया। ऐसा कहा जाता है कि हिमाचल मंडी के राजा अर्शधार की पुत्री गुरु पद्मसंभव की तरफ प्रेम के वशीभूत हो गई जो पद्मसंभव से शिक्षा भी ले रही थी। जब यह चर्चा का विषय हर तरफ हो गया और बात जब राजा तक पहुंची तो राजा ने राजदण्ड के तहत गुरु पद्मसंभव को जीवित ही आग में जला देने का आदेश दे दिया था। पद्मसम्भव के लिये दण्ड विधान के अनुसार बृहद चिता का प्रबंध किया गया और उसके ऊपर गुरु पद्मसम्भव को बिठा दिया गया। गुरु पदमसंभव उस काल के आध्यात्मिक व तंत्र सिद्धियों के सबसे बड़े साधक माने जाते थे। सात दिन निरन्तर चिता की अग्नि गुरु पद्मसंभव को जला नहीं पाई और काष्ठ से जो राख बनी उससे वहां एक झील बन गई। गुरु पदमसंभव स्वयं योगमार्ग की सिद्धियों के बल पर तिब्बत चले गए। तिब्बत में भगवान बुद्ध के नियमावली के मार्ग का अनुसरण करके बौद्ध धर्म का विस्तार किया। भारत वर्ष की पावन भूमि में सृष्टि के आरम्भ से ही आदि शक्ति, शिव या कोई देव हो ,सब प्रकार के अवतार हुए हैं। जिसमे से बहुधा इतिहास के पन्नो में स्वर्ण अक्षर स्वरूप पुराणों और संहिताओं में अंकित हो गए । परन्तु हिन्दू धर्ममें ऐसे भी अवतार और भगवान की विशिष्ट प्रकार की लीला हुई जो पीढ़ी दर पीढ़ी जनश्रुतियों के माधयम से चली आ रही है। जिनमें से बहुधा रामायण काल और महाभारत काल की मानी जाती है।

हिमाचल में भी ऐसी बहुत सी ऐतिहासिक घटनाएं हुई जो आज भी पीढ़ी दर पीढ़ी जनश्रुतियों के माध्यम से यहां की संस्कृति का एक अभिन्न अंग रही है। पुरातन संस्कृति को संजोने में जनश्रुतियों का सबसे अहम योगदान रहा है। हिमाचल में ऐसे भी तीर्थ स्थल है जो पुराणों में वर्णित होने के साथ साथ जनश्रुतियों में भी अंकित है। यहां के बहुधा देव स्थल विभिन्न मान्यताओं के कारण विशेष रूप से आस्था का केंद्र रहे हैं। परन्तु एक ओर कलयुग के आरम्भिक काल में प्रकट हुए ऐसे भी देव विग्रह है जिनका जिक्र कहीं भी नहीं मिलता वो केवल जनश्रुतियों में ही सीमित रह गए परन्तु इसका अर्थ ये भी नहीं है कि उनका कोई मूल आधार नहीं है हो सकता है वो पुराणों एवं संहिताओं में किसी अन्य नाम से अंकित रहे हों। पांडव कालीन ऐसे बहुत अचंभित कार्य हैं जिनका वर्णन कहीं भी नहीं हुआ है और पांडवों के द्वारा किए गए वो कार्य आज के युग में कोई भी शिल्पकार या महाबली नहीं कर सकता। परन्तु रामायण व महाभारत की घटनाओं के अतिरिक्त कृतयुग की सती खण्ड से विभिन्न शक्ति पीठों का भी वर्णन है जिनमें से कुछेक तो पुराणों में भी वर्णित हैं और इनमें से बहुधा जनश्रुतियों का अंग बन गई। कुछ भी हो परन्तु जनश्रुतियों के कारण हिमाचल की पुरातन ऐतिहासिक संस्कृति आज भी कायम है। संस्कृति को तदनुरूप बनाए रखने में जनश्रुतियों की अहम भूमिका रही है। हिमाचल की पुरातन संस्कृति की गरिमा को समेटने में देवस्थलों और स्थान विशेष की वास्तुकला भी अग्रणी रही है। हिमाचल के तीर्थस्थल व ऐतिहासिक घटनाक्रम को बहुत स्थानों पर वास्तुकला ने भी जीवित रखा है। ◆◆◆

लेखक आनी कुल्लू हिमाचल प्रदेश

जातिवाद एक भयानक रोग

... कविता कुमारी

सहभोज के द्वारा जातिवाद को खत्म करने का एक प्रयास सफल हो रहा है तथापि संकीर्ण मानसिकता पूर्णतया नहीं मिट पा रही है। आज के आधुनिक भारत ने जहां कई क्षेत्रों में उन्नति की है व कई देशों को पछाड़ता हुआ आगे बढ़ा है, वहीं भारत में आंतरिक रोग जातिवाद अभी भी विद्यामान है। कई कानून बनाए गए पर कानून में एक समानता का अधिकार मिल जाने के बाद भी एक रूपता दिखाई कम ही देती है। हिमाचल जो उन्नति के मार्ग में अग्रसर हो रहा है ऐसे इस राज्य में कई क्षेत्रों में अभी भी यह जातिवाद रोग लोगों को आपस में मेल-मिलाप से रहने नहीं दे रहा है। इस जातिवाद को बढावा देने वाले, हम जैसे कई पढ़े-लिखे विद्वान् व्यक्ति भी शामिल हैं। अगर एक विद्वान पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी इस समस्या को बढ़ावा देगा तो कौन आगे आकर इस समाज के जातिवाद को खत्म करने का बीड़ा उठाएगा। यह बात विवरण की तरह नहीं बल्कि प्रश्न की तरह लिखे पढ़े समाज से पूछी जानी चाहिए कि क्यों जातिवाद अभी भी हमें अपनी चपेट में ले रहा है। मैं स्वयं इसकी प्रत्यक्षदर्शी हूं कि कई क्षेत्रों में मन्दिरों में निर्बल वर्ग के व्यक्ति प्रसिद्ध मन्दिरों में प्रवेश नहीं कर पाते हैं। शादी-विवाह या अन्य कोई भी त्यौहार हो हम उनके साथ शामिल नहीं होते। एक छोटी सी घटना मुझे आज भी याद है। शादी का माहौल था, गांव के साथ ही निर्बल वर्ग की बस्ती थोड़ी दूर थी, उन्हें भी लोगों द्वारा शादी-विवाह के भोज में बुलाया जाता है। इसी दौरान चार-पांच साल का एक बच्चा स्कूल की वर्दी में आया और जहां भोजन खाने उच्च जाति के ठेकेदार बैठे थे, उनके साथ वह भी अपनी प्लेट लेकर बैठा ही था, कि उसे वहां से दूर हटाया गया। उस छोटे से बच्चे के मन में उस समय क्या गुजरी होगी, जब उसे अलग से खाना दिया गया होगा तो उसने उसे किस भाव से खाया होगा।

यह बात मुझे बहुत कचोटती रही। वहीं आश्रमों व मंदिरों में भगवान का भंडार हो तो बिना जात-पात के भोजन खाने साथ में बैठते हुए दिखते हैं। तो एकरूपता समानता नजर भी आती है। अगर यही समानता घरों, गांव, कस्बों में आ जाए तो शायद यह जातिवाद का रोग जल्द ही समाज से खत्म हो जाएगा। महात्मा गांधी द्वारा जो सपना देखा गया 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' वो सपना जरूर पूरा होगा। उन्होंने निर्बल और असहाय वर्ग को जो नाम दिया 'हरिजन' उसका रूप कुछ और ही हो गया है, जो नहीं होना चाहिए। समय की अब यह मांग है कि हर व्यक्ति इस जातिवाद के जहर से बचे और इस रोग को मिटाने में अपनी भूमिका निभाए। ईश्वर ने हमें जब बिना किसी भेदभाव के पैदा किया है और शारीरिक क्षमता एक समान दी है तो क्यों ये भेदभाव हिमाचल में ही नहीं, हमारे देश के अन्य कई स्थानों में भी इस समस्या का सामना लोगों को करना पड़ता है। इसके लिए सरकार के साथ-साथ हमें भी अपनी भूमिका निभानी पड़ेगी।

आज भारत चांद में जाकर अपना नाम विश्व के अनेक देशों में शामिल कर रहा है तो वहीं समाज में फैली अनेक कुरीतियों का सामना कर रहा है। इसके लिए आज की युवा पीढ़ी को आगे आना होगा व हर युवा को समाज की उन्नति में अपनी भागेदारी देनी होगी। हम इसके लिए समय-समय पर बिना भेदभाव के हर विद्यार्थी के साथ सहभोज का आयोजन करते हैं। हमारी इस कोशिश में आप सभी शामिल हों ऐसी उम्मीद हम हर इस लेख को पढने वाले से भी करते हैं। ◆◆◆

लेखिका के.वि. पालमपुर में कार्यरत हैं।

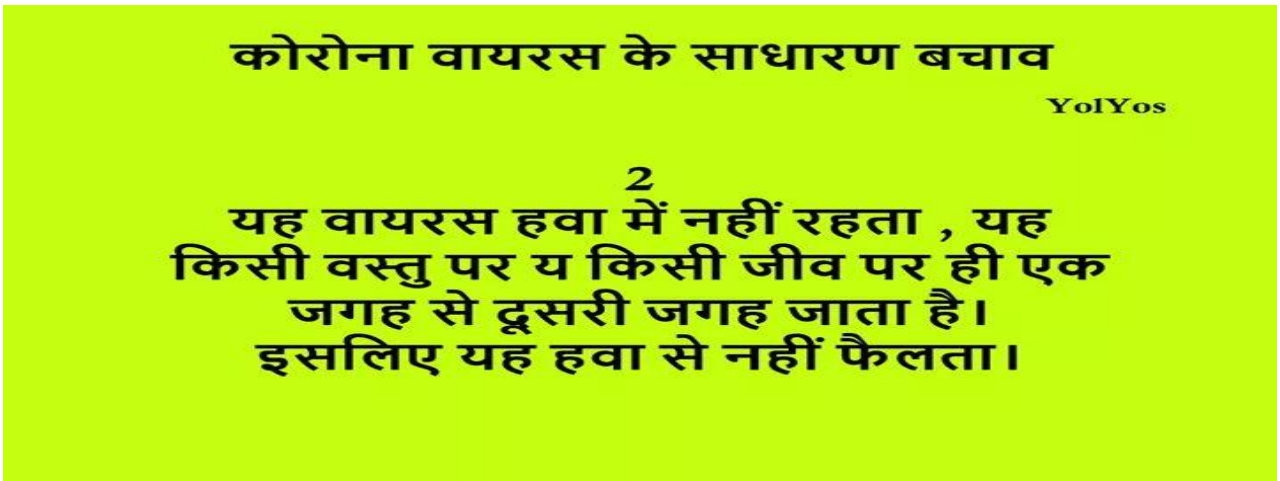

डिह्बकेश्वर महादेव मंदिर परिसर में समरसता

... चेतन कौशल

ऋषि-मुनि, सिद्ध, सन्यासी, साधु-सन्त, महात्मा और परमात्मा के साथ जुड़े माणिकों एवं अलंकारों से सुशोभित भारत माता के सरताज, देव और वीरभूमि हिमाचल प्रदेश की तराई में राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है जिला कांगड़ा, का प्रवेश शेर नूरपुर, के उत्तर में सहादराबान से सर्पाकार एवं घुमावदार सड़क शरा लेतरी, खज्जन, हिंदोरा-घराट, सदवां से घने निर्जन चीड़ के जंगल पार, गांव सिम्बली से होते हुए नूरपुर से लगभग चौदह किलोमीटर के अंतराल पर स्थित है-सुल्याली गांव।

अपनी हरियाली की अपार सुंदरता एवं स्वच्छता के कारण भारत की देव भूमि हिमाचल प्रदेश विश्व विख्यात है। यहां पर स्थित विभिन्न प्रसिद्ध धार्मिक स्थल देश व विदेश में अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं। प्रदेश के विभिन्न धार्मिक स्थलों में सुल्याली गांव का डिह्बकेश्वर महादेव मंदिर अथवा प्राकृतिक शिवाला डिह्बकेश्वर धाम अत्यंत सुंदर, एकांत तथा रमणीय स्थल हैं। यह प्राकृतिक शिवाला अपने अस्तित्व में कब आया। कोई नहीं जानता है। परंतु यहां विराजित साक्षात् देवों के देव महादेव परिवार की गांव सुल्याली में वसने वाले लोगों पर असीम कृपा अवश्य है। लोगों में एक दूसरे के प्रति प्रेम व सदभावना कूट-कूट कर भरी हुई है। डिह्बकेश्वर महादेव मंदिर परिसर के स्नानों में स्नान सोमवार की अमावस्या, वैसाखी की अमावस्या, बुध पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण, पितर तर्पण, सावन मास के सोमवारों के स्नान होते हैं। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, राधाष्टमी, शीतला पूजन के साथ-साथ यहां शिवरात्रि हर वर्ष बड़ी धूम-धाम से मनाई जाती है जिसमें हर वर्ण के लोग यथा-शक्ति बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं। यहां परगृह शांति हेतु हवन करवाए जाते हैं। बच्चों के मुंडन संस्कार होते हैं। यहां मास के हर रविवार को लंगर लगवाने की व्यवस्था भी है जिसमें कोई भी गृहस्थी अपनी इच्छा से यहां की व्यवस्था के अनुसार हवन, संकीर्तन करवाने के साथ-साथ लगंर भी लगवा सकता है। भरमौर निवासी गद्दी समुदाय के लोग अंधेरा होने पर डिह्बकेश्वर महादेव मंदिर परिसर में शिव विवाह जिसे वे अपनी स्थानीय भाषा में नवाला कहते हैं, का हर वर्ह्रा जनवरी मास में आयोजन करते हैं। वे शिव पूजन करके लोक-नृत्य सहित शिव विवाह के भजनगाते हैं। जो देखने योग्य होता है। इसे देखने हेतु यहां पर दूर-दूर से लोग आते हैं। दूसरे दिन वे यहां आए हुए

श्रद्धालु-भक्तों के लिए भोले शंकर का लंगर लगाते है जिसे लोग प्रेमपूर्वक प्रसाद रूप में ग्रहण करते हैं। स्व0 मास्टर ऋषिपाल शर्मा जी ने अपनी स्वर्गीय धर्मपत्नी की याद में पादुका स्थित सुल्याली गांव में शिवरात्रि के दिन इस यज्ञ का शुभारम्भ किया था। जो वहां हर वर्ष किया जाता था। इसे बाद में बंद कर दियागया और फिर डिह्बकेश्वर महादेव मंदिर परिसर में आरम्भ कर दिया गया। स्व0 मास्टर हंस राज शर्मा, जी ने सन् 1967-68 ई0 से शिवरात्रि पर्व से लोगों को जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया था। यज्ञ में दाल, चावल, खट्टा, मीठा, महद्रा आदि बनना आरम्भ हो गया। इससे पूर्व यहां आषाढ़ मास की संक्रांति को चपाती, आम की लाहस तथा माश की दाल बना कर सहभोज करने की प्रथा प्रचलित थी। जिसे ग्रहण करके सभी लोग आनन्द उठाते थे। यहां हर वर्ष शिवरात्रि से दो-तीन दिन पूर्व ही उसकी तैयारी होना आरम्भ हो जाती है। शिवरात्रि से एक दिन पूर्व यहां हवन-यज्ञ किया जाता है। रात को भजन कीर्तन होता है और दूसरे दिन सहभोज-भण्डारा किया जाता है जिसका आयोजन एवं समापन बिना किसी भेदभाव से संपूर्ण होता है। शिव भोले नाथ के प्रति अटूट श्रद्धा और विश्वास रखने वाले भक्तजन बारह मास-सर्दी, गर्मी और बरसात में शिव दर्शन और उनकी पूजा-अर्चना करते हैं। वे शिवलिगों को दूध लस्सी से नहलाते हैं तथा उन पर बिल्व-पत्री चढ़ा कर उनकी धूप-दीप, नैवेद्यादि से पूजा अर्चना करके, उनसे आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। साहिल ग्रुप पठानकोट, के सदस्य मिलकर यहां हर वर्ह्रा दिन में पहले सुल्याली बाजार से होते हुए डिह्बकेश्वर महादेव मंदिर परिसर तक संगीत सहित शिव विवाह की मनोरम झांकियां निकालते हैं और फिर देर रात तक शिव विवाह से संबंधित धर्म-सांस्कृतिक कार्यक्रम चलता रहता है जिसे देखने हेतु दूर-दूर से लोग आते हैं। दूसरे दिन वे वहां आने वाले श्रद्धालु-भक्तों के लिए भोले शंकर का लंगर लगाते हैं। लोग प्रसाद ग्रहण करते हैं।

सुल्याली गांव के आस-पास के क्षेत्र से अनेकों महिलाएं डिह्बकेश्वर महादेव परिसर में आकर सोमवार की अमावसया, वैसाखी की बड़ी सोमी अमावसया को पीपल वृक्ष का पूजन करती हैं। इस पूजन में पीपल वृक्ष की 108 परिक्रमाएं की जाती हैं जिसके अंतर्गत फल, चावल व दाल के दाने, द्रब्ब, दक्षिणा, कच्चा सूत्र की लड़ियां और जोतें सभी गिनती में 108-108 एक समान नग होते हैं। इसके अतिरिक्त सुहागिन, वर्तन और कपड़ा भी होता है जो दान किया जाता है। कच्चा सूत्र की लड़ियों को पीपल वृक्ष के चारों ओर परिक्रमा करके लपेटा जाता है जो देखने योग्य होता है। इस तरह डिह्बकेश्वर महादेव मंदिर परिसर में आध्यात्मिकता देखने को मिलती है जो समरसता से परिपूर्ण होती है। ◆◆◆ **लेखक सरकारी सेवा से निवृत्त व साहित्यकार हैं।**

कोरोना वायरस बनाम 'ला इलाहा इल्लल्लाह'

... राकेश खण्डाला

नागरिकता संशोधन विधोयक के खिलाफ किए जा रहे प्रदर्शनों में कुछ स्थानों पर 'पाकिस्तान से नाता क्या, ला इलाहा इल्लल्लाह' के मतान्ध नारे सुनने को मिले। दूसरी ओर चीन में फैले कोरोना वायरस के बाद पूरी दुनिया के देशों ने अपने नागरिकों को वहां से निकालना शुरू कर दिया है, सिवाय पाकिस्तान के। पाकिस्तानी स्वास्थ्य मन्त्री का कहना है कि चीन उनका घनिष्ठ मित्र है और वे अपने छात्रों को वहां से निकाल कर दुनिया को ये सन्देश नहीं देना चाहते कि कोरोना वारयस के चलते चीन की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। सोशल मीडिया पर देखने को मिल रहा है कि चीन के वुहान नगर में फंसे पाकिस्तानी विद्यार्थी वहां से निकलने को छटपटा रहे और उनके परिजन अपनों की कुशलता के लिए आतुर हो इमरान खान सरकार को कोस रहे हैं। इस घटना से पाकिस्तान के साथ 'ला इलाहा इल्लल्लाह' का नाता जोडने वाले मुट्ठीभर भारतीय मुसलमानों की आंखें खुलनी चाहिएं कि जो देश अपने नागरिकों की सुरक्षा को लेकर गम्भीर नहीं, अपने ही हमवतनों व हमधर्मियों को मौत के आगोश में तड़पता हुआ छोड़ देता है वो उनका कितना सगा हो सकता है। खुद चीनी सरकार ने स्वीकार किया है कि कोरोना वायरस उनके यहां महामारी का रूप धारण कर गया। वहां इस महामारी में मरने वालों की संख्या 636 हो गई। इस वायरस के अब तक कुल 31 हजार से अधिक मामले सामने आ चुके और गुरुवार 6 फरवरी को एक दिन में 73 लोगों की मौत हो गई। वायरस के प्रसार पर रोक लगाने के लिए दो दर्जन से ज्यादा विदेशी वायुसेवाओं ने चीन के लिए अपनी उड़ानें बन्द या सीमित कर दीं।

कई देशों ने चीन से लगती अपनी सीमाएं भी सील कर दी हैं। इतना होने के बाद भी अगर पाकिस्तान मानता है कि चीन में स्थिति गम्भीर नहीं है तो उनके आकलन पर या तो अफसोस व्यक्त किया जा सकता है या इसे लापरवाही की पराकाष्ठा कहा जा सकता है। फिलहाल पाकिस्तानी अभिभावक अपने बच्चों को लेकर चिन्तित हैं और वहां की सरकार के समक्ष भारत की अपने नागरिकों के प्रति सन्वदेनशीलता का उदाहरण रख रहे हैं। आश्चर्य है कि भारत के कुछ लोग उसी पाकिस्तान के साथ 'ला इलाहा इल्लल्लाह' का नाता जोडने को आतुर दिख रहे हैं जिसे अपने लोगों की सुरक्षा की कोई चिन्ता नहीं। इस तरह के नारे लगाने वालों की यह गलती लगभग वैसी ही है जैसी कि पाकिस्तान के निर्माण के समय भारत छोड़ कर नई-नई इस्लामिक जन्नत में गए मुसलमानों ने की और आज दूसरी श्रेणी के नागरिक बन कर अपनी ऐतिहासिक गलती पर पछता रहे हैं।

भारत के मुसलमान ठीक ही गर्व से यह बात कहते हैं कि उन्होंने मोहम्मद अली जिन्ना के द्वि राष्ट्र सिद्धान्त को नकारते हुए भारत को अपना वतन स्वीकार किया, लेकिन उन्हें इसका गर्व करने के साथ-साथ अल्लाह ताअला का धान्यवाद भी करना चाहिए कि वे धर्मके नाम पर बने उस देश में जाने से बच गए जहां भारत से गए मुसलमानों को आज भी मुहाजिर कहा जाता है। उर्दू के मुहाजिर शब्द का हिन्दी में अर्थ है, अपना देश छोड़ कर दूसरे देश में निवास करने वाला। कहने का भाव कि पाकिस्तानी मुसलमान आज भी भारत से गए उत्तर प्रदेश व बिहारी मुसलमानों को स्वीकार करने को तैयार नहीं। ये लोग भारत में अपना सार घर-बार छोडकर पाकिस्तान आए थे लेकिन पाकिस्तान में इन उर्दूभाषी लोगों को मुहाजिर कहा गया। ये जिस हालत में आए थे आज भी उसी हालत में कराची की मैली-कुचौली गलियों में जीवन बिता रहे हैं। लगभग 50 प्रतिशत मुहाजिर अत्यन्त गरीबी की हालात में सिन्ध व खास कर कराची में रहते हैं। 72 साल बीत जाने बाद भी उनकी स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया है। गरीबी से जूझते ये लोग बड़ी संख्या में कराची के गुज्जर नाला, ओरंगी टाउन, अलीगढ़ कालोनी बिहार कालोनी और सुर्जानी इलाकों में रहते हैं। साल 2001 के सरकारी आंकड़ों के अनुसार पाकिस्तान की जनसंख्या लगभग 16.5 करोड़ है जिसमें मुहाजिरों की संख्या लगभग आठ प्रतिशत है। पाकिस्तान में रह रहे पंजाबी मुसलमानों की प्रताड़ना झेलते-झेलते ये लोग इतने परेशान हैं कि पाकिस्तान से अलग होने के लिए संघर्ष करने को मजबूर हो रहे हैं। ◆◆◆ **लेखक पथिक संदेश पत्रिका के सम्पादक हैं।**

मंडी शिवरात्रि में जातीय भेदभाव की घटना दुखद सामाजिक समरसता में ही सबका हित: वीरसिंह रांगड़ा

अंतर्राष्ट्रीय मंडी शिवरात्रि महोत्सव में सहभोज के अवसर पर अनुसूचित जाति के कुछ लोगों को उठाए जाने पर उत्पन्न विवाद की घटना बेहद निंदनीय है। इस प्रकार की घटनाओं से प्राचीन परम्पराओं में छिपे सामाजिक सौहार्द की मूल भावना को क्षति पहुंचती है।

यह विचार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघचालक डॉ0 वीरसिंह रांगड़ा ने शिमला में प्रेस को जारी किये गये वक्तव्य में व्यक्त किए। उनका कहना था कि मंडी में हुई यह घटना दुखद है। इस प्रकार की घटनाएं आपसी प्रेम और भाई-चारे को आहत करती हैं। उन्होंने बताया कि लंबे समय से संघ सामाजिक समरसता की दृष्टि से अनेक प्रयास करता रहा है। उन्होंने बताया कि संघ के प्रयास हमेशा से सामाजिक एकरूपता स्थापित करने के रहे हैं जिसमें धीरे-धीरे वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में निरन्तर प्रयासरत हैं। श्री वीरसिंह रांगड़ा का कहना था कि इस प्रकार की घटनाएं समाज की छवि को खराब करती हैं और इन घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोका जाना नितांत आवश्यक है।

उन्होंने इस बात पर चिंता जताते हुए कहा कि इस प्रकार की इक्का दुक्का व षडयंत्रकारी क्षुद्र घटनाओं के माध्यम से समाज में नकारात्मक वातावरण बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं। ऐसा भी लग रहा है कि कुछ शरारती तत्वों द्वारा समाज को बदनाम करने का प्रयास किया जा रहा है। उनके इस समाज तोड़ने वाले कुप्रयासों की संघ कड़ी भर्त्सना करता है। उन्होंने ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए सामाजिक चेतना के विकास की जरूरत पर बल दिया। उनका कहना था कि जब इस प्रकार की घटनायएं होती हैं तब समाज में नकारात्मक सोच के कुछ स्वार्थी तत्व इससे हित साधने के लिए तूल देने की कोशिश करते हैं। उन्होंने समाज के प्रबुद्ध जनों से आग्रह किया है कि वे ऐसे मामलों पर संवदेनशीलता व संयम से काम लें व लोगों को इन रूढ़ियों के प्रति जागृत करने का कार्य करें।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक बलदेव सिंह परमार जी पंचतत्व में विलीन

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के नूरपुर में स्थानीय श्मशान में स्व.बलदेव सिंह परमार जी के पार्थिव शरीर को उनके भतीजे राजेन्द्र सिंह ने मुखाग्नि दी। स्व. बलदेव सिंह परमार जी का शनिवार 14 मार्च 2020 प्रात: 4.00 बजे नूरपुर में देहांत हो गया था। वह 92 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके थे। स्व. बलदेव सिंह परमार जी पंजाब प्रांत महालपुर क्षेत्र के बींजो गांव के मूल निवासी थे। उनका जन्म उनके नाना के घर जो अब पाकिस्तान में है, 5 दिसम्बर, 1927 को हुआ था। उन्होंने वर्ष 1950 में दसवीं कक्षा में पढ़ते समय संघ का प्राथमिक शिक्षा वर्ग का प्रशिक्षण पूरा किया। सन् 1957 में तृतीय वर्ष का प्रशिक्षण पूर्ण करने के साथ ही वे संघ के प्रचारक बन गए। प.पू. श्री गुरूजी की

प्रेरणा से इन्होंने प्रचारक जीवन में जाने का फैसला लिया। मृत्यु के पूर्व तक स्व. बलदेव सिंह परमार जी कांगड़ा नूरपुर स्थित एक अग्रणी सेवा प्रकल्प वजीर राम सिंह पठानिया स्मारक ट्रस्ट के मुख्य संरक्षक का कार्य देख रहे थे। स्व. बलदेव सिंह परमार जी के पार्थिव शरीर के अंतिम दर्शनों हेतु संघ के स्वयंसेवकों सहित विभिन्न स्थानीय सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं व राजनीतिक दलों के सैकड़ों कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे। जम्मू-कश्मीर व पुराना पंजाब हिमाचल सहित में उन्होंने अधिक समय तक कार्य किया। स्व. बलदेव सिंह परमार जी कठोर अनुशासन के आग्रही व दृढ़ इच्छा शक्ति रखते थे। उनके निधन से संघ ने एक अनुभवी स्वयंसेवक व अविश्राम पथिक खो दिया है उनके जाने से संघ को अपूरणीय क्षति हुई है। अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र निर्माण की बलि वेदी पर अर्पित कर वह सदा के लिए प्रभु चरणों में लीन हो गए, उनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा। **शोक संदेश हेतु संपर्क-नरेन्द्र जी (कार्यकर्ता ट्रस्ट) : 7018706372**

सामाजिक समरसता और राजनीतिक अंतर्द्वंद

... डॉ. उमेश कुमार

भारतीय परिदृश्य में प्राचीन काल से ही लोग समूहों में निवास करते थे जो बड़े और बड़े होते गए और फिर उन पर शासन करने के लिए किसी नेतृत्वव की आवश्यकता महसूस हुई। और, धीरे-धीरे राज्यों का गठन होता गया तथा राजा को यह सुनिश्चित करना होता था कि उसके अधीन सभी लोग एक साथ हंसी, खुशी, बिना किसी भेदभाव के रहें, उन्हें पर्याप्त स्वतंत्रता प्राप्त हो, साथ-ही-साथ उनमें पारस्परिक सौहार्द की भावना भी विकसित हो। इस प्रकार लोगों के सामूहिक संगठन तथा समाज में आधुनिक राजनीति एवं प्रशासन का अभ्युपदय हुआ। दरअसल किसी भी व्यक्ति का संयम, शक्ति और विकास राजनीति पर निर्भर करता है जो न केवल प्रभावी होना चाहिए, अपितु कुछ सिद्धांतों और मूल्यों पर आधारित होना चाहिए।

अवलोकनार्थ, भारत में सैकड़ों राज्य रहे। आजादी ने पूरे देश को एक ही राष्ट्रीय राजनीति व प्रशासन के अंतर्गत बांध दिया है जो एक संघीय ढांचा है। राष्ट्र को समृद्ध और शक्तिशाली बनाने की प्रक्रिया में, एक संपूरक के रूप में, लोगों के एक समह को समय-समय पर निर्वाचित किये जाने की लोकतांत्रिक प्रक्रिया रही है। राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए और संपूर्ण कल्याण के निहितार्थ समेकित व समरस समाज की स्थापना करने के लिए एक पूरी-की-पूरी प्रणाली उपलब्धि है। हमारा राष्ट्रीय उद्देश्य 'सत्य-मेव जयते' हमारे मूल जीवन मूल्यों को परिलक्षित करता है। और, तिरंगा झंडा भी त्याग, पवित्रता और पर्यावरण देखभाल के तीन तरफ संदेश को बतलाता है। झंडे का पहिया, हमारे देश के संसाधनों में वृद्धि करने के लिए निरंतर प्रयास करने का संदेश देता है। हालांकि, यह भी एक विचारणीय पहलू है कि भारतीय समेकित संस्कृति व समरस समाज की विकास प्रक्रिया में राष्ट्रीय संसाधनों को, विशेषकर मानवीय संपदा को, सच्चाई, ईमानदारी और दूरदृष्टि के साथ निर्माण करने में और प्रयोग करने में, नागरिकों को सही तरीके, मानकों और लक्ष्यों के साथ समझाने में हम सक्षम नहीं हो पाए हैं। मानवीय एवं सामाजिक जीवन मूल्यों का बहुत ही नाटकीय तरीके से क्षरण हुआ है और निश्चयत: हमारे राजनीतिक नेतृत्व ने वृहद रूप से फैले तमाम संकटों में वृद्धि की है। और, इसके मूल कारणों को जाने व समझे बिना विकास की कोई भी बात निरर्थक साबित होगी।

आधुनिक राजनीतिक परिदृश्य में भारतीय राजनीतिक दलों के समक्ष लोकतांत्रिक मूल्य एवं आदर्श सत्तालोलुपता की वजह से लगभग तिरोहित हो चुके हैं। क्योकि, हमारा अधिकतर राजनीतिक नेतृत्व अपने और अपने परिवार के बारे में ही सोचता है। बहुत कम ही ऐसे राजनेता व प्रशासक होंगे जो सामाजिक

समरसता और राष्ट्रीय मुद्दों एवं समस्याओं के आधार पर कार्य करते हों। वैसे यह भी सच है कि सभी व्यक्तियों के पास राष्ट्रीय दृष्टिकोण से सोचने के लिए न तो धन है और न ही समय। लेकिन हमें यह स्मपरण करना होगा कि हम एक ऐसे पुरातन देश का हिस्सा हैं जिसमें प्राचीन काल से मूल्यो जीवन का हिस्सान हैं और जिन्हें दोबारा से कहे जाने की और दोबारा से सुशोभित किए जाने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में एक राष्ट्रीय मूल्यक शिक्षा योजना हमारे लोगों और आने वाली पीढ़ी की अनिवार्य अवश्य कता है। चूंकि, विचार में बहुत ही शक्ति होती है, इसलिए जब राष्ट्र के कल्याण पर विचार को केंद्रित किया जाता है तो यह और दुर्जेय हो जाता है। सही से अभिव्यक्त किए गए और साझा किए गए विचार मुद्दों को उचित तरीके से उठाते हैं और अनुपालन की बात करते हैं जो सरकार के नेताओं को और प्रभावी बनाते हैं और लोगों को प्रिय बनाते हैं। भारतीय समरस समाज के निहितार्थ नैतिक आचरण में पूर्णतया पतन प्रबुद्ध और राष्ट्र प्रेमी भारतीयों के लिए चिंता का विषय रहा है।

मानवीय आदर्श एवं नैतिक मूल्यों का पतन भारतीय राजनीति को सर्वाधिक प्रदूषित किया है। लेकिन यह भी सच है कि हाथ पर हाथ धरे रहने से कुछ नहीं होगा। यह निष्क्रियता हमारी भारतीय संस्कृति और समरस समाज के प्रयास को नीचे धकेल देगी। दरअसल समेकित व समरस समाज तथा एक समान आर्थिक वृद्धि कभी भी राजनीति व प्रशासन में मूल्यों और ईमानदारी के उच्च मानकों का निर्धारण किए अथवा उसका अनुपालन किए बिना हासिल नहीं की जा सकती है, विशेष रूप से जब जनता की सेवा करने की प्रक्रिया में भ्रष्टाचार और पारदर्शिता की कमी ने आज लाखों-करोड़ों भारतीय नागरिकों को विकास के फल से वंचित कर दिया है। विवेचनार्थ, मानव इतिहास की समीक्षा यह बताती है कि राष्ट्रों और लोगों की किस्म त हर ही युग में कुछ मुठ्ठी भर राजनेताओं ने या कुछ मुठ्ठी भर सिद्धांतों ने निर्धारित किया है। ऐसे राजनेताओं के द्वारा लिए गए निर्णयों का लाखों, करोड़ों या अरबों लोगों के जीवन पर प्रभाव पड़ता है, फिर चाहे यह भलाई के लिए हो या बुराई के लिए। यदि राजनेता का कोई निर्णय सकारात्मक, नीतिगत और जनता की भलाई के लिए होता है तो उसका परिणाम बहुत ही सुखद होता है। लेकिन, दुर्भाग्य है कि हमारे राजनेताओं ने संकीर्ण स्वार्थ-सिद्धि हेतु भारतीय समाज को बांटने में ही अपना पूरा ध्यान एकाग्र किया है। ऐसे में मगर-अगर जागरूकता व्यक्ति का द्वार खटखटाती है तो यह नीतिगत रूप से व्य।वहार करने के लिए एक समरस व समेकित प्रतिबद्धता के रूप में परिलक्षित होती है और ऐसे विकल्प बनाती है जो निरंतर ही कठिन और जोखिम पूर्ण होती हैं। दरअसल व्यक्तियों की तरह संगठन को भी पद्धति और उपकरणों की आवश्यकता होती है। ऐसे में हमारी बुद्धिमत्ता यह बतलाती है कि कुछ तो लोग हैं जो स्वार्थ भूल सकते हैं और जिन लोगों के लिए काम कर रहे हैं, वे उनके प्रति जवाबदेह हैं और मूल्यों के साथ संल्न् यह हैं और सबकी भलाई के लिए कार्य कर रहे हैं।भारतीय लोकतंत्र के समक्ष परिवारवाद, भ्रष्टाचार, क्षेत्रवाद, सांप्रदायिकता, जातिवाद आदि के रूप में राजनीतिक प्रवृत्तियों ने भारतीय सामाजिक संरचना को सबसे अधिक नुकसान पहुंचाया है। ऐंसे में सामाजिक विकास एवं समरस समाज को भारतीय राजनीति की समकालीन प्रवृत्तियों ने अवरूद्ध किया है। हालांकि, हमारी एक मिथक भी है कि अधिकतर भ्रष्टाचार राजनीति व प्रशासन के निचले कैडर पर होता है तथा उपरी या वरिष्ठ राजनेता गंगाजल जैसे पवित्र होते हैं। कहना गलत न होगा कि यह एक बहुत ही शानदार सा मिथक है क्योंकि राजनेता जो यह चाहते हैं कि वे एक मूल्य निर्धारित और स्वच्छ, छवि से संगठन चलाएं, वे यह सुनिश्चित करने के लिए हर प्रकार का प्रयास कर सकते हैं कि एक ऐसी संस्कृति का निर्माण करें जिससे समरस समाज को बल मिले, सतत विकास का मार्ग प्रशस्त हो। यदि कोई राजनीतिक नेतृत्व ऐसा करने में अक्षम होता है तो इसके दो ही कारण हो सकते हैं-पहला, या तो व्यक्ति में उन गहरे छिपे हुए मूल्यों अथवा निहित स्वाार्थों का सामना करने की क्षमता नहीं है जो कि भ्रष्टाचार की संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं तथा दूसरा, हमारा राजनीतिक नेतृत्व किसी भी छिपे एजेंडा को जानबूझकर पोषित कर रहा है और बाहरी स्थिति से अपरिचित होने का दंभ भर रहा है। ऐसे में कई रचनात्मक तरीके हो सकते हैं जिसमें भ्रष्ट राजनेताओं व उनकी राजनीति के दोहरे मापदंड दिख सकते हैं। आज सामाजिक समरसता के आलोक में राजनीतिक अंर्तद्वंद को आसानी महसूस किया जा सकता है। इसलिए व्यक्तिगत स्तर पर हर भारतीय को सच्चाई के लिए खड़ा होना चाहिए। राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण बहुत ही आवश्यक है क्योंकि राजनीति जनता की सेवा का माध्यम तब हो सकती है जब समर्पित और बेदाग लोग राजनीति में आएं। ◆◆◆ **लेखक हिमाचल विश्वविद्यालय क्षेत्रीय अध्ययन केंद्र धर्मशाला में कार्यरत हैं।**

मातृवन्दना के सभी पाठकों को
नववर्ष विक्रमी सम्वत् 2077
की हार्दिक शुभकामनाएं

Mob. : 94180-25740
94594-30009

Gopal Singh

GOVT. CONTRACTOR & GEN ORDER SUPPLIERS

Office : SCO 107, Indira Market, Mandi (*H.P. - 175001
Resi. : H.No. 33/3, Jail Road, Mandi (H.P.)
E-mail : gkconstruction96@gmail.com

लिंगवाद विरोध का प्रतीक
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

... अमित डोगरा

प्रतिवर्ष 8 मार्च को पूरे विश्व में महिला दिवस मनाया जाता है। वास्तव में यह दिवस महिलाओं को उनके योगदान को मान्यता देने के लिए मनाया जाता है।

जनसंख्या के आंकड़ों के अनुसार महिलाओं की आबादी पूरे विश्व में आधी है, फिर भी पष्ठिचमी जगत के अनुसार उनको उचित दर्जा और स्थान प्राप्त नहीं है। उन पर कई तरह के अत्याचार किए जाते हैं, इसी बात को ध्यान में रखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की है। इस दिन पूरे विश्व में महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाता है। इसी कारण इस दिवस को लिंगवाद दिवस का प्रतीक भी माना गया है, जिससे महिलाओं को भी बिना लिंग वाद के पुरुषों के समान प्रत्येक क्षेत्र में बराबर अधिकार देने के लिए जागरूक किया जाता है। हमारे देश में भी महिलाओं की प्रगति और उत्थान के लिए भी नए-नए कार्यक्रम चलाए जाते हैं। इसी उपलक्ष्य में, 1996 में भविष्य के लिए योजना, 1997 में महिला और शांति तालिका, 1998 में महिला और मानवाधिकार, 1999 में महिलाओं के खिलाफ हिंसा से मुक्त दिवस, 2000 में शांति के लिए एकजुट महिलाएं, 2001 में महिला और शांति, महिला का संघर्ष प्रबंधन, 2002 में आज की अफगान महिला, वास्तविकता और अवसर, 2003 में लिंग समानता और स्त्री विकास लक्ष्य, 2004 में महिला और एचआईवी, 2005 में लिंग समानता: अधिक सुरक्षित भविष्य का निर्माण, 2006 में निर्माण लेने में महिलाएं, 2007 में महिलाओं के खिलाफ हिंसा को समाप्त करना, 2008 में महिला और लड़कियों में निवेश, 2009 में महिला हिंसा को समाप्त करने के लिए महिला और पुरुष एकजुट, 2010 में समान अधिकार, 2011 में शिक्षा, परीक्षण एवं विज्ञान में समान पहुंच, 2012 में ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाना, 2013 में वचन देना एक वचन है, 2014 में महिलाओं के लिए समानता, 2015 में महिला सशक्तिकरण, 2016 में लैंगिक समानता, 2017 कार्य की बदलती दुनिया में महिलाएं, 2018 ग्रामीण और शहरी कार्यकर्ता द्वारा महिलाओं के जीवन में बदलाव, 2020 में नारी सशक्तिकरण के नए उपलक्ष्य में है, मैं जनरेशन इक्वेलिटी महिलाओं के अधिकारों को महसूस कर रहा हूं। वास्तव में महिलाओं के प्रति हमारी जिम्मेदारियों को याद दिलाता है, हम सब को मिलकर महिलाओं को भी उनका अधिकार दिलाने के लिए कार्यरत रहना चाहिए।

वर्तमान युग को नारी के उत्थान का युग कहां जाए, तो कोई अति कथनी नहीं होगी, आज हमारे देश भर की महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी विजय की पताका फैला रही है और मौजूदा सरकारी भी महिलाओं को हर क्षेत्र में अपना भविष्य निर्माण करने का अवसर उपलब्ध करा रही है। महिलाओं के संदर्भ में जयशंकर प्रसाद की एक खूबसूरत कविता भी है- **' नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में, पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।'** ◆◆◆

लेखक गुरूनानक देव विवि अमृतसर में पीएचडी शोधकर्ता हैं।

लघु उद्योग भारती, हिमाचल प्रदेश

उद्योग हित

राष्ट्रोद्धारो लघुउद्यमैः

राष्ट्र हित

लघु उद्योग भारती

लघु उद्योग भारती, भारत का सबसे बड़ा सुक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योगों के लिये सर्मपित अखिल भारतीय औद्योगिक संगठन है।

उद्योगों से सम्बन्धित सभी समस्याओं को दूर करने तथा सुझावों को कार्यन्वित करने के लिए तत्पर संगठन।

आप भी इस संगठन के सदस्य बनें।

डा. विक्रम बिंदल
प्रदेश अध्यक्ष

राजीव कंसल
प्रदेश महासचिव

विकास सेठ
प्रदेश कोषाध्यक्ष

लघु उद्योग भारती, हिमाचल प्रदेश कार्यालय

151, डी.आई.सी., औद्योगिक क्षेत्र बद्दी, जिला सोलन (हि.प्र.) 173 205

9218559555, 9418087745, 9882085940 | mail : lub.himachal@gmail.com

भारत के आर्थिक व सामाजिक विकास में सहकारिता की भूमिका

... राजेश कुमार कपिल

युगों युगान्तरों से सहकारिता भारत की संस्कृति में निरंतर प्रवाहित होती रही है। हमारे वेदों, पुराणों और शास्त्रों में इसके बहुत से प्रमाण उपलब्ध है। देवता और असुर नामक दो विरोधी शक्तियों द्वारा सहकारिता करके यानि एक साथ मिलकर समुद्र मंथन किया गया, जिससे विश्व के कल्याणार्थ बहुत से रत्न प्राप्त हुए। भगवान श्री कृष्ण द्वारा अपने बाल सखाओं, वृन्दावन के निवासियों के सहयोग से गोवर्धन पर्वत को उठाने का संस्मरण भी हमारे ग्रंथों में है। अभी कुछ वर्ष पूर्व तक भी हमने देखा है कि हमारे देश के ग्रामीण इलाकों में अगर किसी परिवार का खेती का या कोई दूसरा काम बीमारी या किसी अन्य कारण से पूर्ण नही हो पाता था। तो गांव या इलाके के बाकि लोग, परिवार उनका कार्य पूर्ण करवाने को अंक सहयोग करते थे। यह सभी सामाजिक सहकारिता के अनुपम उदाहरण है।

स्हकारिता का आधुनिक कानूनी और संवैधानिक विकास

भारत में यह सहकारिता सनातन के समान ही पुरातन है, परन्तु इस से सम्बन्धित प्रथम अधिनियम ब्रिटिश शासन काल में वर्ष 1904 में बनाया गया, जो की मुख्य तौर पर साख या क्रेडिट सस्थाओं के निर्माण से सम्बन्धित था। इससे पूर्व भी देश में स्थानीय नियमों के अंतर्गत सहकारी संस्थाएं कार्यरत थी। इसके उपरांत वर्ष 1912 में सभी संस्थाओं के निर्माण से सम्बन्धित कानून बनाया गया। इस कानून के पश्चात् देश में सहकारी संस्थाओं के निर्माण और पंजीयन में वृद्धि हुई। वर्ष 1919 में सहकारिता का विषय प्रान्तों के अधिकार क्षेत्र में दे दिया गया ।वर्तमान में भारत के संविधान में सहकारिता सातवीं अनुसूची में क्रमांक 32 पर राज्य का विषय है। स्वतंत्रता के बाद देश के प्रत्येक राज्य द्वारा अपने अपने सहकारिता अधिनियम, नियम बनाये गये हैं।, जिनके अंतर्गत देश भर में सहकारी संस्थाओं के गठन किया गया है। वर्ष 2002 में केंद्र सरकार ने मल्टी स्टेट सहकारी सभाएं अधिनियम बनाया है, जिसके अंतर्गत दो या इस से अधिक राज्यों में सहकारी सभा के गठन किया जा सकता है। वर्ष 2011 में केंद्र द्वारा 97वां संविधान संशोधन पास किया गया है, जिसके अंतर्गत आर्टिकल 19(1)(सी) में शब्द " OR UNION के बाद शब्द COOPERATIVE जोड़ा गया है , अर्थात् अब सहकारी संस्थाओं के निर्माण करना नागरिकों का मौलिक अधिकार बन गया है। राज्य के निति निदेशक तत्वों के अंतर्गत आर्टिकल 43-। के बाद आर्टिकल 43-ठ जोड़ा गया है, जिसमे सरकार द्वारा सहकारी संस्थाओं के स्वैच्छिक निर्माण, स्वायतता से कार्य करने, लोकतान्त्रिक नियंत्रण और व्यावसायिक प्रबन्ध का प्रयास करने को हो गया है।

सहकारिता के माध्यम से विकास

देश में सभी राज्यों के सहकारिता कानून के अंतर्गत प्राथमिक कृषि सहकारी संस्थाओं के निर्माण किया गया है। देश का हर गावं किसी न किसी प्राथमिक कृषि सहकारी संस्था के अंतर्गत लाया गया है। इसके अलावा सभी प्रदेशों में सहकारी बैंक, अर्बन सहकारी बैंक, असंख्य बहुउदेशीय सहकारी संस्थाए, गैर कृषि सहकारी संस्थाए, कर्मचारी सहकारी संस्थाए, गृह निर्माण सहकारी संस्थाए, परिवहन सहकारी संस्थाए, सब्जी उत्पादक सहकारी संस्थाए, चीनी सहकारी मिलें, दुग्धा उत्पादक सहकारी संस्थाए, लेबर सहकारी संस्थाए, मेडिसिन सहकारी संस्थाए, चावल सहकारी मिलें इत्यादि बड़े पैमाने पर कार्य कर रही है। यह सभी सहकारी संस्थायें आर्थिक लाभ कमा कर अपने शेयर धारकों, सदस्यों में इसका वितरण कर रही है। इसके अतिरिक्त सहकारी बैंक, प्राथमिक कृषि सहकारी संस्थायें, बहुउदेशिया सहकारी संस्थाए, गैर कृषि सहकारी संस्थाए और कर्मचारी सहकारी संस्थाए आम लोगों और अपने शेयर धारकों विभिन्न कार्यों के लिए आसान औपचारिकताओं पर ऋण उपलब्ध करवा रही हैं। इस प्रकार से आम लोगों, छोटे और मध्यम व्यवसाय करने वालों, किसानो को अपने व्यावसायिक कार्यों हेतु धन की आसानी से उपलब्धता होती, जिससे इस वर्ग के लोग आसानी से अपने काम धंधा करके आर्थिकोपार्जन करते हैं तथा ऋण को भी तय समय सीमा में सहकारी संस्था को

वापिस करते है। ऐसी सहकारी संस्थाओं द्वारा अर्जित लाभ भी अपने शेयर धारको में बाँटने से समाज के निम्न और मध्यम वर्ग के लोगों का आर्थिक सशक्तिकरण सुनिश्चित हो रहा है।

सहकारिता के कुछ दोष

वर्ष 1947 में देश की आजादी के उपरांत दो दशकों तक सहकारिता आन्दोलन सही दिशा में चला, जिसका समाज को काफी लाभ हुआ। परन्तु इसके पश्चात यह आन्दोलन राजनैतिक नेताओं के निजी स्वार्थों की भेंट चढ़ने लगा और सहकारी संस्थाओं पर एकाधिकार करने के लिए उनकी विचारधारा इन पर प्रभावी होने लगी। इस क्षेत्र में भ्रष्टाचार का बोलबाला पनपने लगा। कई राजनेताओं और चालाक लोगों ने बोगस सहकारी संस्थाओं के निर्माण करना शुरू कर दिया, ताकि अपैक्स सहकारी संस्थाओं जैसे के बैंक और अन्य राज्य स्तरीय सहकारी संस्थाओं के निदेशक के लिए चुनाव जीत कर इन पर कब्जा किया जा सक। इस प्रकार की बोगस संस्थाएं केवल कागजों में ही रहती है और धरातल पर कार्य नहीं करती। इस क्षेत्र में राजनीतिक हस्तक्षेप। बढ़ गया, जिसके कारण कई बार जनहित में सहकारी संस्थाये पंजीयन करवाने वाले लोगो को राजनीतिक प्रभाव के चलते पंजीयन नही करवाने दिया गया, क्योंकि राजनीतिक लोग एसी संस्थाओं के पंजीयन को अपने एकाधिकार के लिए खतरा मानने लगे। इन कारणों से सहकारिता आन्दोलन अपने उददेश्य से भटकने लगा। इन दोषों के कारण सहकारी सस्थाओं में वितीय अनियामितायों और भ्रष्टाचार के मामले भी उजागर होने लगे।

सहकार भारती हिमाचल प्रदेश द्वारा सहकारिता क्षेत्र मे योगदान

सहकार भारती, हिमाचल प्रदेश ने भी हिमाचल प्रदेश सहकारी सभाएं अधिनियम, 1968 में 97वे संशोधन के अनुसार संशोधन करवाने के लिए प्रयासरत है। सहकार भारती ने इस सन्दर्भ में मुख्यमन्त्री व सहकारिता मन्त्री, हिमाचल प्रदेश से अनुरोध किया है कि वर्तमान राज्य सहकारी अधिनियम, 1968 में 97वे संविधान संशोधन के अनुरूप संशोधन किया जाये, जिस पर सरकार द्वारा साकारात्मक कार्य किया जा रहा है। सहकार भारती हिमाचल प्रदेश द्वारा प्रदेश में विभिन्न जिलों में सहकारी सभाओं का गठन भी किया गया है, जिनमे बिलासपुर में जिला स्तरीय दि कुबेर बहुउद्देशीय सहकारी सभा, भराडी, काँगड़ा में दि आधार बहुउद्देशीय सहकारी सभा भरमाड़ अपने अपने क्षेत्र में समाज के सशक्तिकरण, सामाजिक और आर्थिक विकास के निमित्त उल्लेखनीय कार्य कर रही है। इसके अतिरिक्त सहकार भारती द्वारा पालमपुर में महिलाओं की एक सहकारी सभा का पंजीयन करवाया गया है, जोकि महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका अभिनीत कर रही है। अभी मार्च 2020 में ही जिला चंबा में सहकार भारती द्वारा जिला स्तर की एक सहकारी सभा का गठन किया गया है। सहकार भारती द्वारा सहकारिता क्षेत्र में सुघार लाने हेतु सरकार को कई विषयों पर सुझाव भी दिए गये है। इन सुधारों के सन्दर्भ में सहकार भारती हिमाचल प्रदेश द्वारा सितम्बर 2018 में अपने प्रान्त अधिवेशन पालमपुर में भी प्रस्ताव पारित किया गया था।

सहकारिता और सामजिक समरसता

सहकारिता द्वारा समाज में सामाजिक समरसता स्थापित करने में सहायक होती है। सहकारी संस्थाओं में बिना जातिगत भेदभाव के सदस्यता का प्रावधान होता है। विभिन्न समूहों और जातियों के लोग इकठ्ठे मिल कर सहकारी संस्था में कार्य करते है। सहकारी संस्था के कार्यक्रम में सभी वर्गों के लोग बिना किसी भेदभाव के भाग लेते है, जिससे सामाजिक समरसता स्थापित करने में सहायता मिलती है। सहकारी संस्थाओं द्वारा लोक कल्याण हेतु विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम भी किये जाते हैं, जो समाज में समरसता का निर्माण करने में सहायक होते है। बहुत सी सहकारी सभाओं द्वारा सामाजिक मेल मिला और सामजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए विशेष प्रयास किये जाते हैं। इन संस्थाओं के माध्यम से लोगों को समाज में मिल जुल कर कार्य करने की सीख भी मिलती है। स्वयं सहायता समूहों में भी बिना किसी भेदभाव के सभी सदस्य मिल-जुल कर कार्य करते है। अत: सहकारिता समाज में समरसता स्थापित करने के लिए प्रमुख भूमिका निभा रही है।

वर्तमान में सहकारिता का मूल्यांकन

वर्तमान में देश में छ: लाख के करीब सहकारी संस्थाएं कार्यरत है। इन संस्थाओं के माध्यम से करोड़ों लोग सहकारिता आन्दोलन से जुड़े हुए है। सहकारी संस्थायें इन लोगो को उपरवर्णित सुविधाएँ उपलब्ध करवा कर इनके सामाजिक और आर्थिक स्तर को बढ़ाने में काफी हद तक सफल रही है। इस सन्दर्भ में श्री महिला गृह उद्योग लिज्जत पापड़ का बहुत बड़ा उदाहरण हमारे सामने हैं, जो कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के मुकाबले में सफलता पूर्वक कार्य कर रहा है और आर्थिक लाभ अर्जित करके अपनी सभी महिला सदस्यों का सामाजिक और आर्थिक कल्याण करने में स्फल रहा है। ऐसे असंख्य उदाहरण हमारे सामने हैं। इफको जैसी सहकारी संस्था किसानों को उर्वरक उपलब्ध करवाने के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। विभिन्न सहकारी बैंक, कृषि प्राथमिक सहकारी संस्थाएं, बहु उद्देशीय सहकारी संस्थाएं, गैर कृषिध कर्मचारी सहकारी साख संस्थाएं लोगों को सम्पूर्ण देश में बड़े पैमाने पर ऋण सुविधाएं उपलब्ध करवा रही है, जिससे यह लोग अपनी व्यावसायिक क्रियाकलापों को बिना किसी बाधा के पूर्ण कर पाते है। इन सहकारी संस्थाओं दारा अर्जित आर्थिक लाभ भी सभी शेयर धारकों में उनके शेयरों के अनुपात में वितरित किया जाता है, जिससे उनका सामाजिक और आर्थिक विकास सुनिश्चित होता है। समय की मांग है, कि कुछ उपर्वर्णित कमियों को दूर करने किया जाये। अत: संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि कुछ कमियों का बाबजूद भी सहकारिता भारत के सामजिक व आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। ◆◆◆

लेखक प्रान्त उपाध्यक्ष, सहकार भारती, हिमाचल प्रदेश से हैं।

मातृवन्दना के सभी पाठकों को
नववर्ष विक्रमी सम्वत् 2077
की हार्दिक शुभकामनाएं

TARA CHAND THAKUR

PROP.

DURGA MEDICAL STORE
Reckong Peo,
Distt. Kinnaur-172101, H.P.

Jai Ram Thakur
Hon'ble Chief Minister
(H.P.)

Bikram Singh
Hon'ble Industries Minister
(H.P.)

HPSIDC

PROMOTING & FACILITATING INDUSTRIALISATION AND CREATING QUALITY INFRASTRUCTURE

1. STATE OF ART INDUSTRIAL AREAS
HPSIDC is developing state of art industrial areas in Kandrori & Pandoga HPSIDC has developed industrial estates with modern amenities at Baddi, Davni. HPSIDC was Nodal Agency for Govt. of India Industrial projects under MIIUS.

2. QUALITY MANAGEMENT OF INDUSTRIAL AREAS
HPSIDC facilitates entrepreneurs for securing registrations, Licenses, clearances etc from statutory authorities. HPSIDC provides basic infrastructure in industrial areas.

3. CONSTRUCTION
HPSIDC has acquired expertise in construction of Roads, Bridges, Govt. Polytechnic, ITI & School Building, Water Supply, Street Lighting & Sewerage infrastructure in the state Common Facility Center at Bathu, Skill Development Centre at Palkawah (Una) Labour Hostel Bathu & Transit Workers Hostel Dulehar (Una) are other State of Art Projects developed by HPSIDC.

4. INDUSTRIAL PLOTS & SHEDS
HPSIDC own industrial Plots at Baddi & Davni and has built " State of Art" Industrial areas at Kandrori & Pondoga. We also own Sheds in Paonta Sahib. Parwanoo and some other industrial areas in District Mandi and Kangra

5. MARKETING
HPSIDC is authorised dealer of Indian Oil Corporation and SAIL for supply of Bitumen and steel products and Cold Mix Technology Bitumen from Bitchem Asphalt (Govt. of India approved) catering to the need of different Govt. Deptt.

GOLDEN PEACOCK AWARDS
WINNER OF
SPECIAL COMMENDATION
Corporate Governance 2017

For Qualitative & time bound execution of various infrastructure projects such as roads, bridges, office & school buildings, auditorium etc and requirement of steel & Bitumen

Please Contact

Managing Director	Executive Engineer Baddi	Executive Engineer Mehatpur	Executive Engineer Dharamshala	Executive Engineer Shimla	Assistant Engineer Mandi
0177 2625339	01795 244148	01975 232108	01892 225078	0177 2625422	01905 235170

HIMACHAL PRADESH STATE INDUSTRIAL DEVELOPMENT CORPORATION. LTD.

New Himrus Building, Circular Road, Shimla - 171001 (HP), Phone: 2625339, 2621426, 2624751, Fax: 0177-2624278, Web.: www.hpsidc.in, Email: hpsidc@rediffmail.com

73वें हिमाचल दिवस के पावन अवसर पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई

प्यारे प्रदेशवासियो,

हिमाचल में हमने संकल्प लिया था –

हर चेहरे पर मुस्कान हो....हर व्यक्ति का जीवन खुशहाल हो....

बच्चे संस्कारवान हों....युवा हुनरमंद हों....

विकास की राह पर....हिमाचल अग्रिम पंक्ति में शुमार हो....

जन आशाओं व आकांक्षाओं की पूर्ति हो.... सबके सपने साकार हों....

आपके अटूट विश्वास और पग-पग पर साथ से, संकल्प हो रहे सब पूरे।

हृदय से आभार!

भविष्य में भी आपका सहयोग मिलता रहेगा, यही है विश्वास।

घर पर रहें, स्वस्थ रहें।

हिमाचल दिवस की पुनः हार्दिक शुभकामनाएँ

जय राम ठाकुर
मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार

www.himachalpr.gov.in HimachalPradeshGovtIPRDept DPR Himachal dprhp

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेस - 9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित।

follow us on :